नमो नमो निम्मलदंसणस्स

पूज्य आनंद-क्षमा-ललित-सुशील-सुधर्मसागर-गुरुभ्यो नमः

आगम_संबंधी_साहित्य

भाग

2

प्रत्येकबुद्धभाषितानि

‘ऋषिभाषितसूत्राणि’ मूलं

मूल संशोधक :- पूज्यपाद आगमोद्धारक आचार्यश्री आनंदसागरसूरीश्वरजी महाराजसाहेब

अभिनव-संकलनकर्ता :- आगम दिवाकर मुनिश्री दीपरत्नसागरजी [M.Com., M.Ed., Ph.D., श्रुतमहर्षि]

पूज्य शासनप्रभावक आचार्य श्री हर्षसागरसूरिजी म० की प्रेरणा से

श्री परम आनंद श्वेताम्बर मूर्तिपूजक जैन संघ, पालडी, अमदावाद

ईस प्रोजेक्ट के संपूर्ण-अनुदान-दाता

सच्चारित्र चूडामणि स्वर्गस्थ पूज्यपाद गच्छाधिपति आचार्यदेव श्री देवेन्द्रसागर सूरीश्वरजी महाराज साहेब

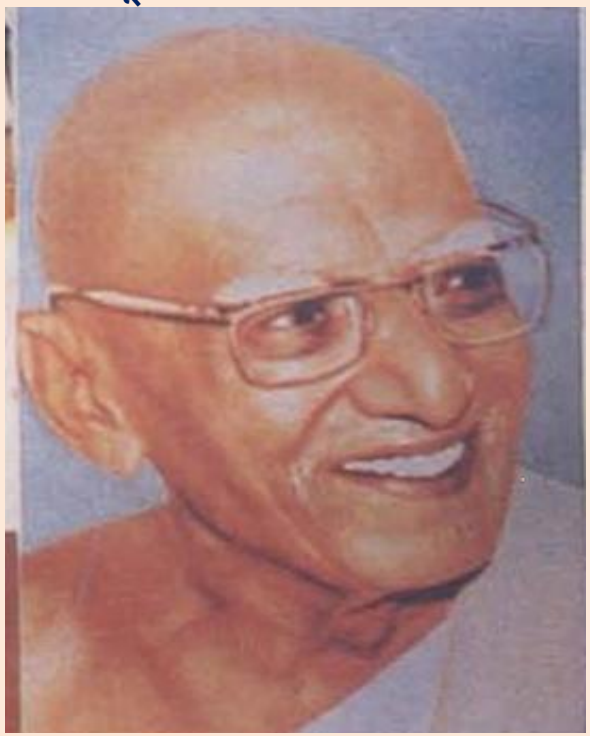

श्री परम आनंद श्वेताम्बर मूर्तिपूजक जैन संघ

वीतराग सोसायटी, प्रभूदास ठक्कर कोलेज रोड, पालडी, अमदावाद

करीब पचास साल पहेले <u>परम पूज्य स्वर्गस्थ गच्छाधिपति आचार्य देव श्रीमद् देवेन्द्रसागरसूरीश्वरजी महाराज साहेब</u> द्वारा संस्थापित इस संघमें श्री शीतलनाथ भगवंत का जिनालय भी है, जिन के प्रतिष्ठाचार्य भी पूज्य देवेन्द्रसागरसूरीश्वरजी म० ही है |

इस संघमें पूज्य साधू-भगवंत एवं साध्वी-महाराज के लिए उपाश्रय भी है, जहां हर-साल चातुर्मास करवा के श्रावक-श्राविकाओ को धर्म-आराधन से लाभान्वित करवाया जाता है | इस संघमें आयंबिलभवन, उबाला हुआ पानी, ज्ञान-भण्डार एवं पाठशाला की भी बहोत अच्छी सुविधा प्रदान हो रही है | ऐसे सम्यग्-मार्गी संघ की सद्भावना और प्रभावक आचार्य पूज्य श्री हर्षसागरसूरिजी म० की प्रेरणा से इस शास्त्र के लिए अनुदान प्राप्त हुआ है |

नमो नमो निम्मलदंसणस्स

आगम_संबंधी_साहित्य

मूल संशोधक

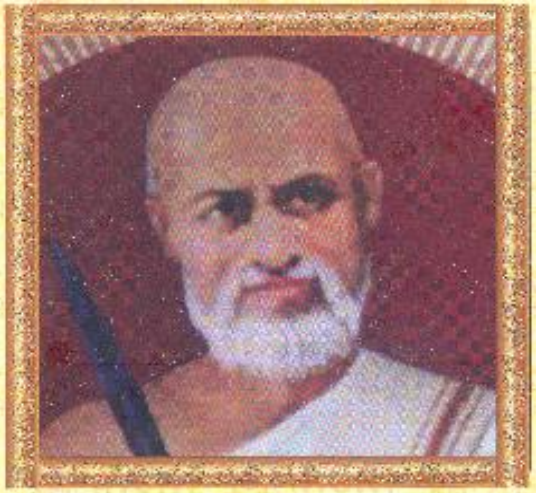

पूज्यपाद आगमोद्धारक आचार्य
श्री आनंदसागरसूरीश्वरजी महाराज

अभिनव-संकलनकर्ता

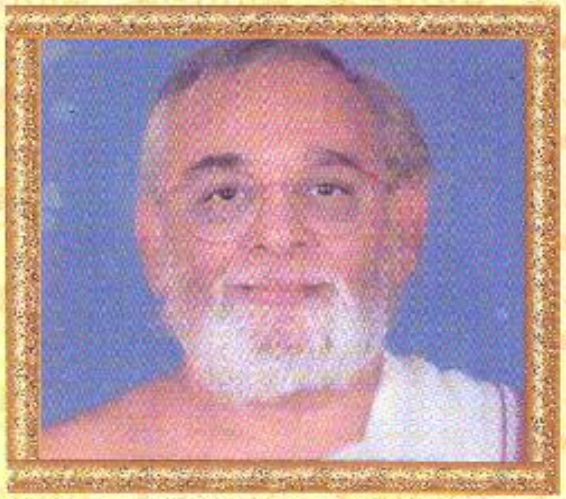

आगम दिवाकर मुनिश्री दीपरत्नसागरजी
[M.Com., M.Ed., Ph.D., श्रुतमहर्षि]

प्रत-प्राप्ति और पेज-सेटिंग कर्ता : www.jainelibrary.org के चेरमन श्री प्रवीणभाई शाह, अमेरिका
मुद्रक : नवप्रभात प्रिन्टींग प्रेस अमदाबाद Mo 9825598855 / 9825306275

आगम

वाचना शताब्दी वर्ष

[भाग-2] प्रत्येकबुद्धभाषितानि श्री 'ऋषिभाषितसूत्राणि'

नमो नमो निम्मलदंसणस्स

पूज्य श्रीआनंद-क्षमा-ललित-सुशील-सुधर्मसागर गुरूभ्यो नम:

प्रत्येकबुद्धभाषितानि "ऋषिभाषितसूत्राणि" मूलं

[मूलसूत्रम् एव]

[आद्य संपादक: - पूज्य आगमोद्धारक आचार्यदेव श्री आनंदसागर सूरीश्वरजी म. सा.]

(किञ्चित् वैशिष्ठ्यं समर्पितेन सह)

पुन: संकलनकर्ता→ **मुनि दीपरत्नसागर** (M.Com., M.Ed., Ph.D., श्रुतमहर्षि)

01/02/2017, बुधवार, २०७३ महा शुक्ल ५ 'आगम-संबंधी-साहित्य' श्रेणि भाग-२

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: (पूर्वकाले आगमरूपेण दर्शित:) "ऋषिभाषित-सूत्राणि"-मूलं

प्रत सूत्रांक [-] गाथा ||-|| दीप अनुक्रम [-]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधितः मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः (पूर्वकाले आगमरूपेण दर्शितः) "ऋषिभाषित-सूत्राणि"-मूलं

श्रीमद्भिः प्रत्येकबुद्धैर्भाषितानि श्रीऋषिभाषितसूत्राणि.

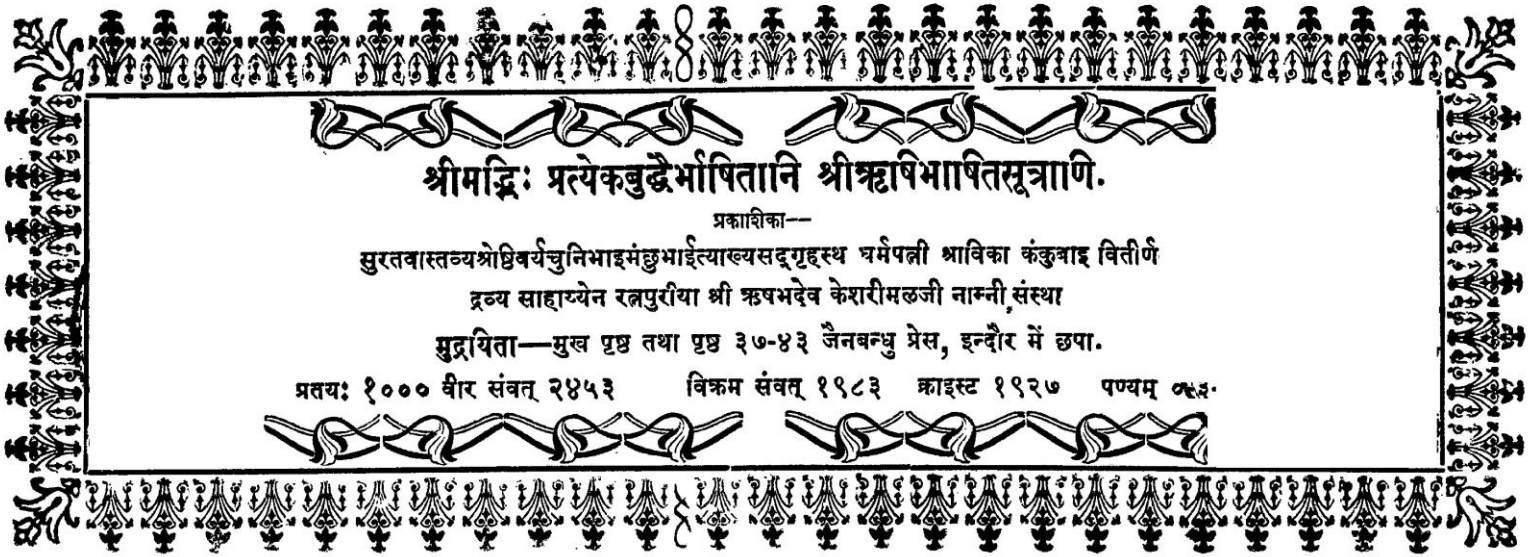

प्रकाशिका--

सुरतवास्तव्यश्रेष्ठिवर्यचुनिभाइमंछुभाईत्याख्यसद्गृहस्थ धर्मपत्नी श्राविका कंकुबाइ वितीर्ण द्रव्य साहाय्येन रत्नपुरीया श्री ऋषभदेव केशरीमलजी नाम्नी संस्था

मुद्रयिता—मुख पृष्ठ तथा पृष्ठ ३७-४३ जैनबन्धु प्रेस, इन्दौर में छपा.

प्रतयः १००० वीर संवत् २४५३ विक्रम संवत् १९८३ क्राइस्ट १९२७ पण्यम् [illegible]

मूल संशोधकेन संपादितः 'ऋषिभाषित'सूत्रस्य टाईटल पृष्ठः

सामाचारी-संरक्षक, ज्ञानधनी, आगम-संशोधक, तीव्र-मेधावी, समाधिमृत्यु-प्राप्त, बहुमुखीप्रतिभाधारक

पूज्यपाद आगमोद्धारक आचार्यदेव श्री आनंदसागरसूरीश्वरजी महाराज साहेब

◆ जिन्होने शुद्ध-श्रद्धा, सम्यक्-श्रुत आराधना, यथाख्यातचारित्र के प्रति गति और अंत समय देह-ममत्व के त्याग के द्वारा कायोत्सर्ग नामक अभ्यंतर-तप कि मिशाल कायम कि है ऐसे बहुश्रुत आचार्य श्री सागरानंदसूरीश्वरजी महाराज का परिचय कराना मेरे लिए नामुमकिन है, फ़िर भी गुरुभक्ति बुद्धि से श्रद्धांजली स्वरुप एक मामुली सी झलक पैस करने का यह प्रयास मात्र है |

◆ चारित्र-ग्रहण के बाद अल्प कालमे जो अपने गुरुदेव की छत्रछाया से दूर हो गये, तो भी गुरुदेव के स्वर्ग-गमन को सिर्फ़ कर्मो का प्रभाव मानकर अपने संयम के लक्ष्य प्रति स्थिर रहते हुए अकेले ज्ञान-मार्ग कि साधना के पथ पर चले | पढाई के लिए ही कितने महिनो तक रोज एकासणा तप के साथ बारह किल्लोमिटर पैदल विहार भी किया | लेकिन अपने मंझिल पे डटे रहे, और परिणाम स्वरुप संस्कृत एवं प्राकृत भाषा का, प्राचीन लिपिओ का, व्याकरण-न्याय-साहित्य आदि का सम्पूर्ण ज्ञान प्राप्त किया | जैन आगमशास्त्रो के समुद्र को भी पार कर गए|

◆ एक अकेला आदमी भी क्या नहीं कर शकता? इस प्रश्न का उत्तर हमें इस महापुरुष के जीवन और कवन से मिल गया, जब वे चल पड़े देवर्द्धिगणी क्षमाश्रमण के स्थापित पथ पर. बिना किसी सहाय लिए हुए सिर्फ अकेले ही "जैन-आगम-शास्त्रो" को दीर्घजीवी बनाने के लिए अनेक हस्तप्रतो से शुद्ध-पाठ तैयार किये | दो वैकल्पिक आगम, कल्पसूत्र और निर्युक्तिओ को जोड़कर ४५ आगम-शास्त्रो को संशोधित कर के संपादित किया | फिर पालीताणामें आगम मंदिर बनवाकर आरस-पत्थर के ऊपर ये सभी आगम-साहित्य को कंडारा, सूरतमें ताम्रपत्र पर भी अंकित करवाए और "आगम मंजूषा" नाम से मुद्रण भी करवा के बड़ी बड़ी पेटीमें रखवा के गाँव गाँव भेज दिए | वर्तमानकालमे सर्व प्रथमबार ऐसा कार्य हुआ |

◆ सिर्फ मूल आगम के कार्य से ही उन के कदम रुके नही थे, उन्होंने आगमो की वृत्ति, चूर्णि, निर्युक्ति, अव चूरी, संस्कृत-छाया आदि का भी संशोधन-सम्पादन किया | उपयोगी विषयो के लिए उन्होंने एक लाख श्लोक प्रमाण संस्कृत-प्राकृत नए ग्रंथो की रचना भी की | कितने ही ग्रंथो की प्रस्तावना भी लिखी | ये सम्यक्-श्रुत मुद्रित करवाने के लिए आगमोदय समिति, देवचंद लालभाई इत्यादि विभिन्न संस्था की स्थापना भी की |

◆ ज्ञानमार्ग के अलावा सम्मेतशिखर, अंतरीक्षजी, केशरियाजी आदि तीर्थरक्षा कर के सम्यक-दर्शन-आराधना का परिचय भी दिया | राजाओं को प्रतिबोध कर के और वाचनाओ द्वारा अपनी प्रवचन-प्रभावकता भी उजागर करवाई | बालदिक्षा, देवद्रव्य-संरक्षण, तिथि-प्रश्न इत्यादि विषयोमे सत्य-पक्षमें अंत तक दृढ़ रहे | जैनशासन के लिए जब जरुरत पड़ी तब अदालती कारवाईंओ का सामना भी बड़ी निडरता से किया था |

◆ सागरानंदजी के नाम से मशहूर हो चुके पूज्य आनंदसागरसूरीश्वरजीने अपने परिवार स्वरुप ७०० साधू-साध्वीजी भी शासन को भेट किये |

...ये थे हमारे गुरुदेव "सागरजी"... ***.....मुनि दीपरत्नसागर...***

संयमैकलक्षी, उपधान-तप-प्रेरक, चारित्र-मार्ग-रागी, प्रवचन-पटु, सुपरिवार-युक्त

पूज्य गच्छाधिपतिआचार्यदेव श्री देवेन्द्रसागरसूरीश्वरजी महाराज साहेब

*** परमपूज्य आचार्यश्री आनंदसागरसूरीश्वरजी के पाट-परंपरामे हुए तिसरे गच्छाधिपति थे पूज्य आचार्य श्री देवेन्द्रसागरसूरीश्वरजी, जो एक पून्यवान् आत्मा थे, दीक्षा ग्रहण के बाद अल्पकालमे ही एक शिष्य के गुरु बन गये | फ़िर क्या ! शिष्यो कि संख्या बढती चली, बढ़ते हुए पुन्य के साथ-साथ वे आखिर 'गच्छाधिपति' पद पे आरूढ़ हो गए | इस महात्मा का पुन्य सिर्फ शिष्यों तक सिमित नही था, वे जहा कहीं भी 'उपधान-तप' की प्रेरणा करते थे, तुरंत ही वहां 'उपधान' हो जाते थे | प्रवचनपटुता एवं पर्षदापुन्य के कारण उन के उपदेश-प्राप्त बहोत आत्माओने संयम-मार्ग का स्वीकार किया | खुद भी संयमैकलक्षी होने के कारण चारित्रमार्ग के रागी तो थे ही, साथसाथ ज्ञानमार्ग का स्पर्श भी उन का निरंतर रहेता था | आप कभी भी दुपहर को चले जाइए, वे खुद अकेले या शिष्य-परिवार के साथ कोई भी ग्रन्थ के अध्ययन-अध्यापनमें रत दिखाई देंगे |

*** ये तो हमने उनके जीवन के दो-तीन पहेलु दिखाए | एक और भी अनुसरणीय बात उन के जीवनमें देखने को मिली थी- 'आराधना-प्रेम'. कैसी भी शारीरिक स्थिति हो, मगर उन्होंने दोनों शाश्वती ओलीजी, [पोष}दशमी, शुक्ल पंचमी, त्रिकाल देववंदन, पर्व या पर्वतिथि के देववंदन आदि आराधना कभी नहीं छोड़ी | आखरी सालोमें जब उन को एहसास हो गया की अब 'अंतिम-आराधना' का अवसर नजदीक है, तब उन के मुहमें एक ही रटण बारबार चालु हो गया- "*अरिहंतनुं शरण, सिद्धनुं शरण, साधुनुं शरण, केवली भगवंते भाखेला धर्मनुं शरण* " इसी चार शरणो के रटण के साथ ही वे समाधि-मृत्यु-रूप सम्यक् निद्रा को प्राप्त हुए थे | ऐसे महान् सूरिवर को भाववरी वंदना |

*** मुनि दीपरत्नसागर...

~~~~~~

अनुदान दाता संस्था:- "श्री परम-आनंद श्वेतांबर मूर्तिपूजक जैन संघ"

वीतराग सोसायटी, प्रभूदास ठककर कोलेज रोड, पालडी, अमदावाद

करीब ५० साल पहेले <u>परम पूज्य स्व. गच्छाधिपति आचार्यदेव श्रीमद् देवेन्द्रसागरसूरीश्वरजी महाराजसाहेब</u> द्वारा संस्थापित इस संघमें श्री शीतलनाथ भगवंत का जिनालय भी है, जिन के प्रतिष्ठाचार्य भी पूज्य देवेंद्रसागरसूरीजी म०सा० ही है | इस संघमें पूज्य साधू भगवंत एवं साध्वीजीओ का उपाश्रय भी है जहा हर-साल चातुर्मास करवाके श्रावक-श्राविकाओ को धर्म-आराधन से लाभान्वित करवाया जाता है | इस संघमें आयंबिलभवन, उबाला हुआ पानी, ज्ञान-भण्डार एवं पाठशाला की भी बहोत अच्छी सुविधा प्रदान हो रही है | ऐसे सम्यग्-मार्गी संघ की सद्भावना और प्रभावक आचार्य पूज्य श्री हर्षसागरसूरिजी म० की प्रेरणा से इस शास्त्र के लिए अनुदान प्राप्त हुआ है |
~~~~~~

'सागर-समुदाय-एकता-संरक्षक, तीर्थ-उद्धार-कार्य-प्रवृत्त, गुणानुरागी'

इस "आगम-संबंधी-साहित्य" श्रेणि भाग १ से ४ के संपूर्ण अनुदान के प्रेरणादाता

पूज्य शासनप्रभावक आचार्य श्री हर्षसागरसूरिजी महाराज साहेब

पूज्यपाद स्व॰ गच्छाधिपति देवेन्द्रसागर-सूरीश्वरजी के विनयी शिष्य एवं दो गच्छाधिपतिओ के मुख्य सहायक के रुपमे 'सागर समुदाय' के सुचारु संचालक पूज्य हर्षसागरसूरिजी, जिन की प्रेरणा से ये "आगम संबंधी साहित्य" के मुद्रण के लिए संपूर्ण द्रव्यराशि प्राप्त हुई, उनका अत्यल्प परिचय यहां करेंगे | समुदाय-एकता के लिए सदैव प्रयत्नशील रहते हुए ये महात्मा *समुदाय के साधु-साध्वीजी* की आवश्यकताओकी पूर्ती के लिए भी प्रवृत्त रहेते है, प्राचीन-अर्वाचीन तीर्थो के जीर्णोद्धार एवं विकाश के लिए भी उत्साहित रहेते है, ज्ञान-क्षेत्र अछूता न रहे इसीलिए अनुमोदना, अनुदान एवं समय मिलने पर शास्त्र-वांचनमें भी रूचि रखते है | समुदाय के जरूरतमंद साध्वीजी भगवंतो के आवास का विषय हो या साध्वीजी के विहारमें मजदूर का वेतन चुकाना हो, ऐसे छोटे-छोटे कार्यो के प्रति भी उन का लक्ष्य रहेता है | दर्शन-शुद्धि के लिए जब उन्होंने समग्र भारतवर्ष के १०० साल तक के पुराने जिनालयो में १८ अभिषेक की प्रेरणा की, उस वक्त लगभग सभी अभिषेक-सामग्री की द्रव्य-शुद्धि का ख़याल रखते हुए अपनी मेधावी बुद्धि का परिचय दिया था, साथमे अनुकंपा भाव से पुजारी या विधि करानेवाले को यत्किंचित् बहुमान प्रगट करते हुए कुछ धन-राशि प्रदान करवाई |

ऐसे बहुगुण-संपन्न महात्मा पूज्य आचार्यश्री हर्षसागर-सूरिजी को हम भावभरी वंदना करते हुए इस श्रुतकार्य का प्रारंभ करने जा रहे है |

**** मुनि दीपरत्नसागर*

[कात्रेज]पूना, शंखेश्वर, कपडवंज, प्रभासपाटण आदि स्थानोमे आगममंदिर के प्रेरक, कर्मग्रंथ अभ्यासु, निस्पृह महात्मा

पूज्यपाद गच्छाधिपति आचार्य श्री दौलतसागर-सूरीश्वरजी महाराज साहेब

(एवं) अजातशत्रु, स्वाध्याय-रसिक, प्रशांतमूर्ती और अपने गुरु के प्रीतिपात्र

परम पूज्य आचार्य श्री नंदीवर्धनसागर-सूरिजी महाराज साहेब

इस पवित्र श्रुत-कार्यमे दोनो सूरिवरो का स्मरण करते हुए कोटि कोटि वंदना के साथ

.....मुनि दीपरत्नसागर

प्रत्येकबुद्ध-भाषित ऋषिभाषित-सूत्राणि विषयानुक्रम:

क्रमांक:	अध्ययनम्	पृष्ठांक:	क्रमांक:	अध्ययनम्	पृष्ठांक
०१	नारद	१३	१६	सोरियायण	३२
०२	वज्जियपुत्त	१४	१७	विदु	३३
०३	दविल	१५	१८	वरिसव	३४
०४	अंगरिसि	१७	१९	आयरियायण	३५
०५	पुप्फ़साल	१८	२०	उक्कल	३६
०६	वल्कलचिरि	१९	२१	गाहावइज्ज	३७
०७	कुम्मापुत्त	२०	२२	दगभालिज्ज	३८
०८	केतलिपुत्त	२१	२३	रामपुत्तिय	३९
०९	महाकासव	२१	२४	हरिगिरि	४२
१०	तेतलिपुत्त	२५	२५	अंबड	४४
११	मंखलिपुत्त	२६	२६	मायंगिज्ज	४५
१२	जणवक्किय	२७	२७	वारत्तय	४६
१३	भयालि	२८	२८	अद्दइज्ज	४८
१४	बाहुक	२९	२९	वद्धमाण	४९
१५	मधुरायणिज्ज	३०	३०	वायु	५०

प्रत्येकबुद्ध-भाषित ऋषिभाषित-सूत्राणि विषयानुक्रम:

क्रमांक:	अध्ययनम्	पृष्ठांक:		क्रमांक:	अध्ययनम्	पृष्ठांक
३१	पासिज्ज	५१		३९	संजइज्ज	६१
३२	पिंग	५२		४०	दिवायाणिज्ज	६२
३३	अरुणिज्ज	५३		४१	इंदनागिज्ज	६३
३४	इसिगिरि	५४		४२	सोमिज्ज	६४
३५	अद्दालइज्ज	५६		४३	जम	६५
३६	तारायणिज्ज	५७		४४	वरुण	६६
३७	सिरिगिरिज्ज	५८		४५	वेसमण	६७
३८	साईपुत्तिज्ज	६०		---	ऋषिभाषितसूत्रस्य प्रामाण्यं	७०

['ऋषिभाषित-सूत्राणि' मूलं] इस प्रकाशन की विकास-गाथा

✣ यह प्रत सबसे पहले " श्रीमद्भि: प्रत्येकबुद्धैर्भाषितानि ऋषिभाषितसूत्राणि " के नामसे सन १९ २७ (विक्रम संवत १९ ८३) में श्री ऋषभदेव केशरीमलजी नामक संस्था द्वारा प्रकाशित हुई, इस के संपादक-महोदय थे पूज्यपाद आगमोद्धारक आचार्यदेव श्री आनंदसागरसूरीश्वरजी (सागरानंदसूरिजी) महाराज साहेब |

✣ ये 'ऋषिभाषित' सूत्र का मूल प्राकृत नाम 'इसिभासिय' है | वर्तमान कालमे इस सूत्र का समावेश ४५ आगमोमें नही दिखता, मगर पक्खीसूत्रमें इस की गिनती 'आगमसूत्र' के रुपमे हुई है | अंगबाह्य सूत्रोमे कालिकसूत्रमे पांचवा कालिकसूत्र 'इसिभासिय' लिखा है | नन्दीसूत्र में ये सूत्र सातवे 'कालिक'सूत्र के रूपमे गिनाया है | इस सूत्र का हिन्दी एवं गुजराती अनुवाद भी किसी ने प्रकाशित करवाया है | इस सूत्र (आगम) पर किसीने वृत्ति (अवचूर्णि) भी लिखी है | 'इसिभासिय' सूत्र का संशोधन व संपादन पूज्य पुन्यविजयजीने भी किताब रुपमे किया है |

✣ हमारा ये प्रयास क्यों? ✣ आगम की सेवा करने के हमें तो बहोत अवसर मिले, ४५-आगम सटीक भी हमने ३० भागोमे १२५०० से ज्यादा पृष्ठोमें प्रकाशित करवाए है, किन्तु लोगो की पूज्यश्री सागरानंदसूरीश्वरजी के प्रति श्रद्धा तथा प्रत स्वरुप प्राचीन प्रथा का आदर देखकर हमने इसी प्रत को स्केन करवाई, उसके बाद एक स्पेशियल फोरमेट बनवाया, जिसमे बीचमे पूज्यश्री संपादित प्रत ज्यों की त्यों रख दी, ऊपर शीर्षस्थानमे आगम का नाम, फिर सूत्र आदि के नंबर लिख दिए, ताँकि पढ़नेवाले को प्रत्येक पेज पर कौनसा सूत्र आदि चल रहे है उसका सरलतासे ज्ञान हो शके |

✣ हमारे अनुक्रम तो प्रत्येक प्रकाशनोमें एक सामान और क्रमशः आगे बढते हुए ही है, इसीलिए सिर्फ क्रम नंबर दिए है, मगर प्रत में गाथा और सूत्रों के नंबर अलग-अलग होने से हमने जहां सूत्र है वहाँ कौंस [-] दिए है और जहां गाथा है वहाँ ||-|| ऐसी दो लाइन खींची या 'गाथा' शब्द लिखा है| हर पृष्ठ के नीचे विशिष्ठ फूटनोट दी है |

✣ शासनप्रभावक पूज्य आचार्यश्री हर्षसागरसूरिजी म० की प्रेरणासे और श्री परम आनंद श्वेताम्बर मूर्तिपूजक जैन संघ, पालडी, अमदावाद की संपूर्ण द्रव्य सहाय से ये 'आगम-संबंधी-साहित्य' भाग-२ का मुद्रण हुआ है, हम उन के प्रति हमारा आभार व्यक्त करते है |

. ... मुनि दीपरत्नसागर.

प्रत सूत्रांक [-] गाथा ||१-११||

दीप अनुक्रम [१-११]

प्रत्येकबुद्धभाषितानि ऋषिभाषितसूत्राणि

[१] 'नारद' अध्ययनं

॥ १ ॥

ऋषिभाषि-

अथ प्रत्येकबुद्धभाषितानि ऋषिभाषितसूत्राणि ॥

णमक्खिउं॥ सोयव्वमेव वदती सोयव्वमेव वदति । जेण समयं जीवे सव्वदुक्खाण मुच्चति ॥१॥ तम्हा सोयव्वातो परं णत्थि सोयंति । देवनारदेण अरहता इसिणा बुइयं ॥२॥ पाणातिपातं तिविहं तिविहेण णेव कुज्जा ण कारवे पढमं सोयव्वलक्खणं ॥३॥ मुसावादं तिविहं तिविहेणं णेव बूया ण भासए । बितियं सोयव्वलक्खणं ॥४॥ अदत्त(त्ता)दाणं तिविहं तिविहेणं णेव कुज्जा ण कारवे । ततियं सोयव्वलक्खणं ॥५॥ अबंभपरिग्गहं तिविहं तिविहेणं णेव कुज्जा ण कारवे । चउत्थं सोयव्वलक्खणं ॥६॥ सव्वं च सव्वहिं चेव, सव्वकालं च सव्वहा । निम्ममत्तं विमुत्तिं च, विरतिं चेव सेवते ॥७॥ सव्वतो विरते दंते, सव्वतो परिनिव्वुडे । सव्वतो विप्पमुक्कप्पा, सव्वत्थेसु समं चरे ॥८॥ सव्वं सोयव्वमादाय, अउ[ड]यं उवहाणवं । सव्वदुक्खप्पहीणे उ, सिद्धे भवति णीरये ।।९॥ दत्तं चेवोपसेवंती, बंभं चेवोपसेवती । सव्वं चेवोवधाणवं, दत्तं चेवोवहाणवं ॥१०॥ बंभं चेवोवधाणवं, एवं से बुद्धे विरते विपावे दंते दविए अलं ताई णो पुणरवि इच्चत्थं हव्वमागच्छइत्ति बेमि ॥११॥ [१२]॥॥ पढमं नारदज्झयणं सम्मत्तं ॥ १ ॥

१ नारयज्झयणं २ वज्जियपुत्तज्झयणं

प्रत सूत्रांक [-] गाथा ||१-९||

दीप अनुक्रम [१२-२०]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: (पूर्वकाले आगमरूपेण दर्शित:) "ऋषिभाषित-सूत्राणि"-मूलं

[२] 'वज्जियपुत्त' अध्ययनं

जस्स भीता पलायन्ति, जीवा कम्माणुगामिणो। तमेवादाय गच्छंति, किच्चा दिन्नं व वाहिणी ॥ १ ॥ वज्जियपुत्तेण अरहता इसिणा बुइतं-दुक्खा परिवित्तसंति पाणा, मरणा जम्मभया य सव्वसत्ता। तस्सोवसमं गवेसमाणा, अप्पे आरंभीहए ण सत्ते ॥ २ ॥ गच्छंति कम्मेहिं सेऽणुबद्धे, पुणरवि आयांति से सयंकडेणं। जम्मणमरणाइ अट्टो पुणरवि आयाइ से सकम्मसिन्ने ॥३॥ बीया अंकुरणिप्पत्ती, ॥ १ ॥

॥ २ ॥ ऋषिभाषितेषु

अंकुरातो पुणो बीयं। बीए संजुज्जमाणंमि, अंकुरस्सेव संपदा ॥ ४ ॥ बीयभूताणि कम्माणि, संसारंमि अणादिए। मोहमोहितचित्तस्स, ततो कम्माण संतती ॥ ५ ॥ मूलस्सिंचते फलुप्पत्ती, मूलाघाते हतं फलं। फलत्थी सिंचती मूलं; फलघाती ण सिंचती ॥ ६ ॥ मोहमूलमणिव्वाणं, संसारे सव्वदेहिणं। मोहमूलाणि दुक्खाणि, मोहमूलं च जम्मणं ॥ ७ ॥ दुक्खमूलं च संसारे, अण्णाणेण समज्जितं। मिगारिव्व सरुप्पत्ती, हणि कम्माणि मूलतो ॥ ८ ॥ एवं से बुद्धे विरते विपावे दंते दविए अलंताती। णो पुणरवि इच्चत्थं हव्वमागच्छतित्ति बेमि ॥ ९ ॥ ॥ इइ विइयं वज्जियपुत्तज्झयणं ॥ २ ॥

३ दविलज्झयणं

प्रत सूत्रांक [१] गाथा ||१-१२||

दीप अनुक्रम [२१-३३]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: (पूर्वकाले आगमरूपेण दर्शित:) "ऋषिभाषित-सूत्राणि"-मूलं

[३] 'दविल' अध्ययनं

भविदव्वं खलु भो सव्वलेवोवरत्तेणं, लेवोवलित्ता खलु भो जीवा अणेकजम्मजोणीभयावत्तं अणादीयं अणवदग्गं दीहमद्धं चातुरंतं संसारसागरं वीतीवंता सिवमतुलमयलमव्वाबाहमपुणब्भवमपुणरावत्तं सासतं ठाणमब्भुवगता चिट्ठंति, से भवति सव्वकामविरते सव्वसंगातीते सव्वसिणेहतिक्कंते सव्ववीरियपरिनिव्वुडे सव्वकोहोवरत्ते सव्वमाणोवरत्ते सव्वमायोवरत्ते सव्वलोभोवरत्ते सव्वपासादाणोवरत्ते सुसव्वसंवुडे सुसव्वसव्वोवरत्ते सुसव्वसव्वोवसंते सुसव्वपडिवुडे णो कत्थई सज्जति (रज्जति) य, तम्हा सव्वलेवोवरए भविस्सामित्तिकट्टु असिएण दवि[दिव]लेणं अरहता इसिणा बुइतं।— सुहुमे व बायरे वा, पाणे जो तु विहिंसइ। रागदोसाभिभूतप्पा, लिप्पते पावकम्मुणा ॥ १ ॥ परिग्गहं गिण्हते जो उ, अप्पं वा जति वा बहुं। गेहोमुच्छाय दोसेणं, लिप्पए पावकम्मुणा ॥ २ ॥ कोहं जो उ उदीरेइ, अप्पणो वा परस्स वा। तंनिमित्ताणुबंधेणं, लिप्पते पावकम्मुणा ॥ ३ ॥ एवं जाव मिच्छादंसणसल्ले, पाणातिवाते लेवो अलियवयणं अदत्तं च। मेहुणगमणं लेवो लेवो परिग्गहं च ॥ ४ ॥ कोहो बहुविहो लेवो, माणो य बहुविधविधीओ। माया य बहुविधा लेवो, लोभो वा बहुविधविधीओ ॥ ५ ॥ तम्हा ते तं विकिंचित्ता, पावकम्मपवड्ढणे। उत्तमट्ठवरग्गाहो, विरिअत्ताए परिव्वए ॥ ६ ॥ खोरे दूसिं जधा पप्प, विणासमुवगच्छति। एवं रागो व दोसो य, बंभचेरविणासणा ॥ ७ ॥ जधा खोरं पधाणं तु, मुच्छणा जायते दधिं। एवं गेहिप्पदोसेणं, पावकम्मं पवड्ढती ॥ ८ ॥ रण्णे दवग्गिणा दड्ढा, रोहंते वणपादवा। कोहग्गिणा तु दड्ढाणं, दुक्खाणं ण णिवत्तई ॥ ९ ॥ सक्का वण्ही णिवारेतुं, वारिणा जलितो बहिं। सव्वोदहिजलेणावि, मोहग्गी दुण्णिवारओ ॥ १० ॥ जस्स एते परिण्णाता, जातीमरणबंधणा। संछिण्णजातिमरणा, सिद्धिं गच्छंति णीरया ॥ ११ ॥ एवं से बुद्धे विरते य० ॥ ३ ॥ तईयं दविलज्झयणं ॥ ३ ॥

॥ २ ॥

॥ ३ ॥ ऋषिभाषितेषु

४ अंगरिसि-अज्झयणं

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: (पूर्वकाले आगमरूपेण दर्शित:) "ऋषिभाषित-सूत्राणि"-मूलं

[४] 'अंगरिसि' अध्ययनं

आयाणरक्खी पुरिसे, परं किंचि ण जाणती। असाहुकम्मकारी खलु अयं पुरिसे ॥१॥ पुणरवि पावेहिं कम्मेहिं चोदिज्जतो णिच्चं समपी(संसारंमी)ति अंगरिसिणा भारद्दाएणं अरहता इसिणा बुइतं ॥२॥ णो संवसित्तुं सक्कं, सीहं [णासंवसता सक्कं सीलं] जाणित्तु माणवा। परमं खलु पडिच्छन्ना, मायाए दुट्ठमाणसा ॥ ३ ॥ णियद्दोसे णिगूहंते, चिरंपी णोवदंसए। किह मं कोपि णज्जाणे; जाणेण त्थ हियं सयं ॥ ४ ॥ जेण जाणामि अप्पाणं, आवी वा जति वा रहे। अज्जयारिं अणज्जं वा, तं णाणं अयलं धुवं ॥ ५ ॥ सुयाणि भित्तिए चित्तं, कट्ठे वा सुणिवेसितं। मणुस्सहिदयं पुणिणं, गहणं दुव्वियाणकं ॥ ६ ॥ अन्नहा समणे होइ, अण्णं कुणंति कम्मुणा। अण्णमण्णाणि भासंते, मणुस्सगहणे हु से ॥ ७ ॥ तणखाणुकंडकलताघणाणि वल्लीघणाणि। सढणियडिसंकुलाइं मणुस्सहिदयाइं गहणाणि ॥ ८ ॥ भुंजित्तुच्चावए भोए, संकप्पे कडमाणसे। आदाणरक्खी पुरिसे, परं किंचि ण जाणति ॥ ९ ॥ अदुवा परिसामज्झे, अदुवा विरहे कडं। ततो णिरि(क्खि)णप्पाणं, पावकम्मा णिरुंभति ॥ १०॥ दुप्पचिण्णं सपेहाए, अणायारं च अप्पणो। अणुवट्ठितो सदा धम्मे, सो पच्छा परितप्पती ॥ ११ ॥ सुप्पइण्णं सपेहाए, आयारं वावि अप्पणो। सुपट्ठितो सदा धम्मे, सो पच्छा उ ण तप्पति ॥ १२ ॥ पुव्वरत्तावरत्तंमि, ॥ ३ ॥

४॥ ऋषिभाषितेषु

संकप्पेण बहुं कडं। सुकडं दुक्कडं वावि, कत्तारमणुगच्छइ ॥ १३ ॥ सुकडं दुक्कडं वावि, अप्पणो यावि जाणति। ण य णं अण्णो विजाणाति, सुक्कडं णेव दुक्कडं ॥ १४ णरं कल्लाणकारिंपि, पावकारिन्ति बाहिरा। पावकारिंपि ते बूया, सीलमंतोत्ति बाहिरा ॥ १५ ॥ चोरंपि ता पसंसंति, मुणीवि गरिहिज्जती। ण से एत्तावताऽचोरे, ण से इत्तावताऽमुणी ॥ १६ ॥ णण्णस्स वयणा चोरे, णण्णस्स वयणा मुणी। अप्पं अप्पा वियाणाति, जे वा उत्तिमणाणिणो ॥ १७ ॥ जइ मे परो पसंसाति, असाधुं साधु माणिया। न मे सा तायए भासा, अप्पाणं असमाहितं ॥ १८ ॥ जति मे परो॰ विगरहाति, साधुसंतिं णिरंगणं। ण मे सक्कोसए भासा, अप्पाणं सुसमाहितं ॥ १९ ॥

५ पुप्फसाल उज्झयणं

प्रत सूत्रांक [-] गाथा ||१-२७||

दीप अनुक्रम [३४-६०]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: (पूर्वकाले आगमरूपेण दर्शित:) "ऋषिभाषित-सूत्राणि"-मूलं

[४] 'अंगरिसि' अध्ययनं [वर्तते]

जं उलूका पसंसंति, जं वा णिंदंति वायसा। णिंदा वा सा पसंसा वा, वायुजालेव्व गच्छती ॥ २० ॥ जं च बाला पसंसंति, जं वा णिंदन्ति कोविदा। णिंदा वा सा पसंसा वा, पप्पाति कुरुए जगे ॥ २१ ॥ जो जत्थ विज्जती भावो, जो वा जत्थ ण विज्जती। सो सभावेण सव्वोवि, लोकंमि तु पवत्तती ॥ २२ ॥ विसं वा अमतं वावि, सभावेण उवट्ठितं। चंदसूरा मणी जोती, तमो अग्गी दिवं खिती ॥ २३ ॥ वदंतु जणे जं से इच्छियं, किं णु का(क)लेमि उदिण्णमप्पणो। भावित मम णत्थि एलिसे, इति संखाए ण संजलामहं ॥ २४ ॥ अक्खोवंजणमाताया, सीलवं सुसमाहिते। अप्पणा चेवमप्पाणं, चोदितो वहते रहं ॥ २५ ॥ सीलक्खरहमारुढो, णाणदंसणसारथी। अप्पणा चेव अप्पाणं, जदिता सुभमेहती ॥ २६ ॥ एवं से बुद्धे मुत्ते० ॥ ४ ॥चउत्थं अंगरिसिणामज्झयणं ॥ ४ ॥

प्रत सूत्रांक [१] गाथा ॥१-५॥

दीप अनुक्रम [६१-६६]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: (पूर्वकाले आगमरूपेण दर्शित:) "ऋषिभाषित-सूत्राणि"-मूलं

[५] 'पुप्फ़साल' अध्ययनं

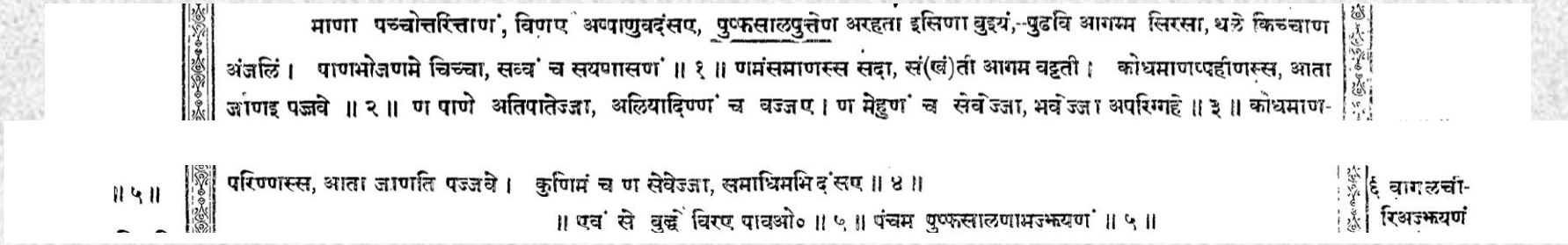

माणा पच्चोत्तरित्ताणं, विणए अप्पाणुवदंसए, पुप्फसालपुत्तेण अरहता इसिणा बुइयं,--पुढवि आगम्म सिरसा, थले किच्चाण अंजलिं। पाणभोजणमे चिच्चा, सव्वं च सयणासणं ॥ १ ॥ णमंसमाणस्स सदा, सं(खं)ती आगम वट्टती। कोधमाणप्पहीणस्स, आता जाणइ पज्जवे ॥ २ ॥ ण पाणे अतिपातेज्जा, अलियादिण्णं च वज्जए। ण मेहुणं च सेवेज्जा, भवेज्जा अपरिग्गहे ॥ ३ ॥ कोधमाण- ॥ ५ ॥ परिण्णस्स, आता जाणति पज्जवे। कुणिमं च ण सेवेज्जा, समाधिमभिदंसए ॥ ४ ॥ ॥ एवं से बुद्धे विरए पावओ० ॥ ६ ॥ पंचम पुप्फसालणामज्झयणं ॥ ५ ॥ ६ वागलचीरिअज्झयणं

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: (पूर्वकाले आगमरूपेण दर्शित:) "ऋषिभाषित-सूत्राणि"-मूलं

[६] 'वल्कलचीरि' अध्ययनं

ऋषभाष-तेषु

तमेव उवरते मतंगसड्ढे कायमेदाति । आयति नमुदाहरे देवदाणवाणुमतं ॥१॥ तेनेमं खलु भो लोकं सणरामरं वर्सीकतमेव मण्णामि तमहं बेमित्ति रयं वागलचीरिणा अरहता इसिणा बुइतं ॥ २ ॥ ण नारीगणप[सेते][संवतु]सत्ते, अप्पणो य अबंधवे। पुरिसा जत्तोवि वच्चह, तत्तोऽवि जुधिरे जिणे ॥३॥ णिरंकुसे व मातंगे, छिण्णरस्सी रवे[हए]विवा । णाणापग्गहपब्भट्ठे, विविधं पवते णरे॥४॥ णावा अकण्णधारावं, सागरे वायुणेरिता । चंचला धावते णावा, सभावाओ अकोविता ॥५॥ सुक्कं पुप्फं व आगासे, णिरावारे [सु] तु जे णरे । दढसुब्बणिवद्धे नु, बलवं विहिं ॥ ६ ॥ सुत्तमेत्तगतिं चेव तुंग[गंतु]कामेऽवि से जहा । एवं लद्धावि सम्मग्गं , सभावाओ अकोविते ॥ ७ ॥ जं तु परं णवएहिं, अंबरे वा विहंगमे । दढसुत्तणिवद्धेत्ति,मि लोको (वाहए तुसिणे जगे) ॥ ८ ॥ णाणापग्गहसंबंधे, धितिमं पणिहितिंदिए । सुत्तमेत्तगतिं चेव, तथा साधू णिरंगणे ॥९॥ सच्छंदगतिपयारा, जीवा संसारसागरे । कम्मसंताणसंबद्धा, हिंडंति विविहं भवं ॥ १० ॥ इत्थीणुगिद्धे वसए,अप्पणो य अबंधवे । जत्तो विवज्जती पुरिसे, तत्तो विज्झविणे जणे ॥ ११ ॥ मण्णती मुक्कमप्पाणं, पडिबद्धो पलायते । वियते भगवं वक्कलचीरिउग्गवतेत्ति ॥ १२ ॥ एवं सिद्धे बुद्धे० ॥ ६ ॥ छट्ठं वक्कलचीरिणामज्झयणं ॥ ६ ॥

प्रत सूत्रांक [-] गाथा ॥१-७॥ दीप अनुक्रम [८०-८६]	पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: (पूर्वकाले आगमरूपेण दर्शित:) "ऋषिभाषित-सूत्राणि"-मूलं

[७] 'कुम्मापुत्त' अध्ययनं

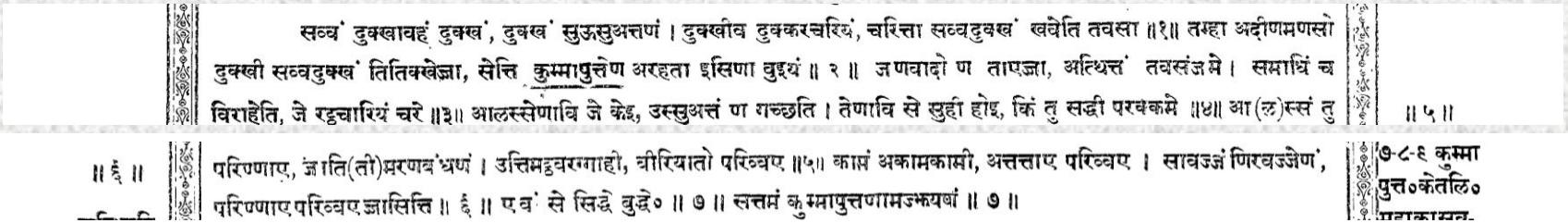

सव्वं दुक्खावहं दुक्खं, दुक्खं सुऊसुअत्तणं । दुक्खीव दुक्करचरियं, चरित्ता सव्वदुक्खं खवेति तवसा ॥१॥ तम्हा अदीणमणसो दुक्खी सव्वदुक्खं तितिक्खेज्जा, सेत्ति कुम्मापुत्तेण अरहता इसिणा बुइयं ॥ २ ॥ जणवादो ण ताएज्जा, अत्थित्तं तवसंजमे । समाधिं च विराहेति, जे रट्ठचारियं चरे ॥३॥ आलस्सेणावि जे केइ, उस्सुअत्तं ण गच्छति । तेणावि से सुही होइ, किं तु सद्धी परक्कमे ॥४॥ आ(ल)स्सं तु ॥ ५ ॥

॥ ६ ॥ परिण्णाए, जाति(ती)मरणबंधणं । उत्तिमट्ठवरग्गाही, वीरियातो परिव्वए ॥५॥ कामं अकामकामी, अत्तत्ताए परिव्वए । सावज्जं णिरवज्जेण', परिण्णाए परिव्वए ज्जासित्ति ॥ ६ ॥ एवं से सिद्धे बुद्धे० ॥ ७ ॥ सत्तमं कुम्मापुत्तणामज्झयणं ॥ ७ ॥

७-८-९ कुम्मा पुत्त०केतलि० महाकासव-

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: (पूर्वकाले आगमरूपेण दर्शित:) “ऋषिभाषित-सूत्राणि”-मूलं

प्रत सूत्रांक [१] गाथा ||१||

दीप अनुक्रम [८७-८८]

[८] ‘केतलिपुत्त’ अध्ययनं

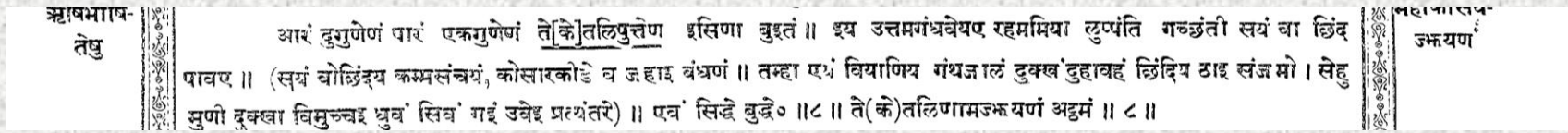

ऋषिभाषितेषु

आरं दुगुणेणं पारं एक्कगुणेणं ते[के]तलिपुत्तेण इसिणा बुइतं ॥ इय उत्तमगंथछेयए रहममिया लुप्पंति गच्छंती सयं वा छिंद पावए ॥ (सयं वोछिंदय कम्मसंचयं, कोसारकोडे व जहाइ बंधणं ॥ तम्हा एयं वियाणिय गंथजालं दुक्खं दुहावहं छिंदिय ठाइ संजमो । सेहु मुणी दुक्खा विमुच्चइ धुवं सिवं गइं उवेइ प्रत्यंतरे) ॥ एवं सिद्धे बुद्धे० ॥८॥ ते(के)तलिणामज्झयणं अट्ठमं ॥ ८ ॥

अध्ययनं

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: (पूर्वकाले आगमरूपेण दर्शित:) "ऋषिभाषित-सूत्राणि"-मूलं

[९] 'महाकासव' अध्ययनं

प्रत सूत्रांक [१] गाथा ॥१-३४॥

दीप अनुक्रम [८९-१२३]

जावताव जम्मं ताव ताव कम्मं, कम्मणा खलु भो पया सिया, समियं उवनिविज्जइ अववदिज्जइ य, महइ महाकासवेण अरहया इसिणा बुइयं, कम्मुणा खलु भो अप्पहीणेणं पुणरवि आगच्छइ हत्थच्छेययाणि पायच्छेयणाणि एवं कण्ण०नक्क०उट्ठ०जिब्भ०सीसदंडणाणि मुंडणाणि उद्दिण्णेण जीवो कोट्टणाणि पिट्टणाणि तज्जणाणि तालणाणि वहणाइं बंधणाइं परिकिलेसणाइं अंदुबंधणाइं नियलबंधणाणि जावज्जीवबंधणाणि नियलजुयलसंकोडणमोडणाइं हियउप्पाडणाइं दसणुप्पाणाइं उल्लंबणाइं ओलंबणाइं घंसणाइं घोलणाइं पीलणाइं सीहपुच्छणाइं कडग्गिदाहणाइं भत्तपाणनिरोहणाइं दोगच्चाइं दोभत्ताइं दोमणसाइं भाउमरणाइं भइणिमरणाइं पुत्तमरणाइं धूयमरणाइं भज्जमरणाइं अण्णाणि य सयणमित्तबंधुवग्गमरणाइं तेसिं च णं दोगच्चाइं दोभत्ताइं दोमणस्साइं अप्पियसंवासाइं पियविप्पओगाइं हीलणाइं खिंसणाइं गरहणाइं पव्वहणाइं परिभवणाइं आगट्टणाइं अण्णयराइं च दुक्खदोमणस्साइं पच्चणुभवमाणा अणाइयं अणवदग्गं दीहमद्धं चाउरंतसंसारसागरं अणुपरियट्टंति। कम्मुणा पहीणेणं खलु भो जीवा नो आगच्छंहिती हत्थच्छेयणाणि ताइं चेव भाणियव्वाइं जावसंसारकंतारं वीईवइत्ता सिवमयलमरुयमणंतमक्खयमव्वाबाहमपुणरावत्तं सासयं ठाणमभुवगया चिट्ठंति-कम्ममूलमनिव्वाणं, संसारे सव्वदेहिणं। कम्ममूलाइं दुक्खाइं, कम्ममूलं च जम्मणं ॥ १ ॥ संसारसंतईमूलं, पुण्णं ॥ ६ ॥

॥ ७ ॥ ऋषिभाषितेषु

पावं पुरेकडं। पुण्णपावनिरोहाय, सम्मं संपरिव्वए ॥२॥ पुण्णपावस्स आयाणे, परिभोगे यावि देहिणं। संतई भोगपाउग्गं, पुण्णं पावं सयं कडं ॥ ३ ॥ संवरो निज्जरा चेव, पुण्णं पावविणासणं। संवरं निज्जरं चेव, सव्वहा सम्ममायरे ॥ ४ ॥ मिच्छत्तं अनियत्ती य, पमाओ यावि णेगहा। कसाया चेव जोगा य, कम्मादाणस्स कारणं ॥ ५ ॥ जहा अंडे जहा बीए, तहा कम्मं सरीरिणं। संताणे चेव भोगे य, नाणावन्नत्तमच्छइ ॥ ६ ॥ निव्वत्ती विरियं चेव, संकप्पे य अणेगहा। नाणावण्णवियक्कस्स, दारमेयं हि कम्मुणो ॥ ७ ॥ एस एव विवण्णासो, संवुडो संवुडो पुणो। कमसो संवरो नेओ, देससव्वविकप्पिओ ॥ ८ ॥ सोपायाणा निरादाणा, विपाकेयरसंजुया। उवक्कमेण तवसा, निज्जरा जायए सिया ॥ ९ ॥ संततं बंधए कम्मं, निज्जरेइ य संततं। संसारगोयरो जीवो, विसेसो उ तवो मओ ॥ १० ॥

९ महाकासवज्झयणं

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: (पूर्वकाले आगमरूपेण दर्शित:) "ऋषिभाषित-सूत्राणि"-मूलं

[९] 'महाकासव' अध्ययनं (वर्तते)

प्रत सूत्रांक [१] गाथा ||१-३४||

दीप अनुक्रम [८९-१२३]

अंकुरा खंधखंधीया, जहा भवंइ वोरुहो। कम्मं तहा तु जीवाणं, सारा सारतरं ठितं ॥ ११ ॥ उवक्कमो य उक्केरो, संछोभो खवणं तथा। बद्धपुट्ठनिधत्ताणं, वेयणा तु णिकायिते ॥ १२ ॥ उक्कड्डंतं जधा तोयं, सारिज्जंतं जथा जलं। संखविज्जा ण [णि] दाणे वा, पावं कम्मं उदीरती ॥ १३ ॥ अप्पा ठितो सरीराणं, बहुं पावं च दुक्करं। पुव्वं वज्झिज्जते पावं, तेण दुक्खं तवो मयं ॥ १४ ॥ खि[खि]ज्जते पावकम्मंमि, जुत्तजोगिस्स धीमतो। देसकम्मक्खयब्भूता, जायते रिद्धियो बहू ॥ १५ ॥ विज्जोसहिणिवाणेसु, वत्थु सिक्खागतीसु य। तवसंयम पयुत्ते य, विमहे होति पच्चयो ॥ १६ ॥ दुक्खं खवेति जुत्तप्पा, पावंमी सेवि बंधणे। जधा मीसेवि गाहंमि, विसपुप्फाण छड्डणं ॥ १६। संमत्तं च इयं चेव, संममासज्ज दुल्लहं। ण प्पमाएज्ज मेधावी, मम्मगाहं जहाहिओ ॥ १८ ॥ णेहवत्तिक्खए दीवो, जहा चयति संततिं। आयाणबंधरोहंमि, तहऽप्पा भवसंतइं ॥ १९ ॥ दोसादाणे णिरुद्धंमि, सम्मं सत्थाणुसारिणा। पुव्वाउत्ते य विज्झाए, खयं वाही णियच्छती ॥२० ॥ मज्जं दोसा विसं वण्हो, गहावेसो अणं अरी। धणं धम्मं च जीवाणं, विण्णेयं धुवमेव तं ॥ २१ ॥ कम्मायाणेऽ- ॥ ७ ॥

॥ ८ ॥ ऋषिभाषितेषु

वरुद्धंमि, सम्मं मग्गाणुसारिणा। पुव्वाउत्ते य णिज्जिण्णे, खयं दुक्खं णियच्छती ॥ २२ ॥ पुरिसो रहमारुढो, जोगाए सत्तसंजुतो। विपक्खं णिहणं णेइ, सम्मद्दिट्ठी तहा अणं ॥ २३ ॥ वहिनमारुयसंयोगा, जहा हेमं विसुज्झती। सम्मत्तनाणसंजुत्ते, तहा पावं विसुज्झती ॥ २४ ॥ जहा आतवसंतत्तं, वत्थं सुज्झइ वारिणा। सम्मत्तसंजुतो अप्पा, तहा झाणेण सुज्झती ॥ २५ ॥ कंचणस्स जहा धाऊजोगेणं मुच्चए मलं। आणाईएवि संताणे, तवाओ कम्मसंकरं ॥ २६ ॥ वत्थादिएसु सुज्झेसु, संताणे गहणे तहा। दिट्ठंतं देसधम्मित्तं, सम्ममेयं विभावए ॥ २७ ॥ आवज्जती समुग्घातो, जोगाणं च निरुंभणं। अणियट्टी एव सेलेसी, सिद्धी कम्मक्खओ तहा ॥ २ ॥ णावा (व) वारिमज्झंमि, खोणलेवो अणाउलो। रोगी वा रोगणिम्मुक्को, सिद्धो भवति णीरओ ॥ २९ ॥ पुव्वजोगा असंगत्ता, काउ वाया मणो इ वा। एगतो आगती चेव, कम्माभावा ण विज्जती ॥ ३० ॥ परं णावग्गहाभावा, सुहं आवरणक्खया। १०तेतलिपुत्तज्झयणं

प्रत सूत्रांक [१] गाथा ||१-३४||

दीप अनुक्रम [८९-१२३]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: (पूर्वकाले आगमरूपेण दर्शित:) "ऋषिभाषित-सूत्राणि"-मूलं

[९] 'महाकासव' अध्ययनं (वर्तते)

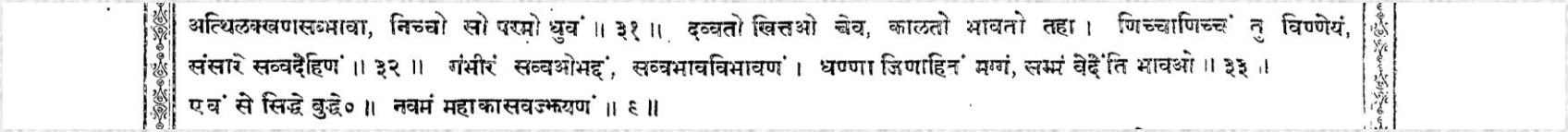

अत्थिलक्खणसब्भावा, निच्चो सो परमो धुवं ॥ ३१ ॥ दव्वतो खित्तओ चेव, कालतो भावतो तहा । णिच्चाणिच्चं तु विण्णेयं, संसारे सव्वदेहिणं ॥ ३२ ॥ गंभीरं सव्वओभद्दं, सव्वभावविभावणं । धण्णा जिणाहिनं मग्गं, सम्मं वेदेंति भावओ ॥ ३३ ॥ एवं से सिद्धे बुद्धे० ॥ नवमं महाकासवज्झयणं ॥ ९ ॥

--- X --- X --- X --- X --- X --- X ---

प्रत सूत्रांक [१] गाथा ||१||

दीप अनुक्रम [१२४-१२५]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: (पूर्वकाले आगमरूपेण दर्शित:) "ऋषिभाषित-सूत्राणि"-मूलं

[१०] 'तेतलिपुत्त' अध्ययनं

कोऽहं (कं) ठावेइ णण्णत्थ सगाइं कंमाइं (इ) माइं । सद्धेयं खलु भो समणा वदंती, सद्धेयं खलु माहणा० अह-मेगोऽसद्धेयं वदिस्सामि तेतलिपुत्तेण अरहता इसिणा बुइयं, सपरिजणोत्ति णाम ममं अपरिजणोत्ति को मे तं सद्दहिस्सती ? । सपुत्तंपि णाम मम अपुत्तेत्ति को मे तं सद्दहिस्सती ? । एवं समित्तंपि णाम ममं०, सवित्तंपि णाम ममं०, सपरिग्गहं णाम ममं०, दाणमाणसक्कारोवया-रसंगहिते० तेतलिपुत्तस्स सयणपरिजणे विरागं गते को मे तं सद्दहिस्सती ? । जातिकुलरूवविणतोवयारसालिणी पोट्टिला मूसिकार- ॥ ८ ॥

॥ ६ ॥ ऋषिभाषितेषु

धूता मिच्छं विप्पडिवन्ना को मे तं सद्दहिस्सति ? ।, कालक्कमणीतिसत्थविसारदे तेतलिपुत्ते विसादं गतेति को मे तं सद्दहिस्सति ?, तेत-लिपुत्तेण अमच्चेण गिहं पविसित्ता तालपुडके विसे खतितेत्ति सेविय से पडिहतेति को मे तं सद्दहिस्सति?, तेतलिपुत्तेण अमच्चेणं महति-महालयं रुक्खं दुरुहित्ता पासे छिण्णे (तहावि ण मए) को मे तं सद्दहिस्सति ?, तेतलिपुत्तेण महतिमहालयं पासाणं गीवाए बंधित्ता अत्थाहाए पुक्खरिणीए अप्पा पक्खित्ते तत्थऽवि य णं थाहे लद्धे को मे तं सद्दहिस्सति?, तेतलिपुत्तेण महतिमहालियं कट्ठरासीं पलीवेत्ता अप्पा पक्खित्ते सेऽवि य से अगणिकाए विज्झाए को मे तं सद्दहिस्सति ?, तए णं सा पुट्टिला मूसियारधूता पंचवण्णाइं सखिंखिणिताइं वत्थाइं पवर परिहिता अंतलिक्खपडिवण्णा एवं वयासी-आउसो ! तेतलिपुत्ता ! एहि तो आयाणाहि पुरओ विच्छिण्णे गिरिसिहरकंदरप्पवाते पिट्ठओ कंपेमाणेव्व मेइणितलं साकड्ढंतेव पायवे णिप्फोडेमाणेव्व अंबरतलं, सव्वतमोरासिव्व पिंडिते, पच्चक्खमिव सयं कतंते भीमरवं करेंते महावारणे समुट्ठिए वा सचक्खुणिवाएसु पयंडधणुजंतविप्पमुक्का पुंक्खमेत्तावसेसा धरणिप्पवेसिणो सरा णिपतंति, हुयवहजालासहस्स-संकुलं समंततो पलित्तं धगधगेति सव्वारण्णं, अचिरेण य बालसूरगुंजद्धपुंजणिकरपकासं ज्झियाइ इंगालभूतं गिहं, आउसो ! तेतलिपुत्ता ! क वयामो ?, तते णं से तेतलिपुते अमच्चे पोट्टिलं मूसियारधूतं एवं वयासि—पोट्टिले ! एहि ता आयाणाहि, भीयस्स खलु भो पव्वज्जा, अभिउत्तस्स सवहणकिच्चं मातिस्स रहस्सकिच्चं उक्कंठियस्स देसगमणकिच्चं पिवासियस्स पाणकिच्चं छुहियस्स भोयणकिच्चं परं अभिउंजिउं कामस्स सत्थकिच्चं खंतस्स दंतस्स गत्तस्स जितिंदियस्स एत्तो ते एक्कमवि ण भवइ ॥ एवं से सिद्धे बुद्धे० ॥ १० ॥ तेतलिपुत्तणामज्झयणं

१०-११ तेतलिपुत्त०मंखलिपुतज्झयणं

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: (पूर्वकाले आगमरूपेण दर्शित:) "ऋषिभाषित-सूत्राणि"-मूलं

प्रत सूत्रांक [१] गाथा ||१-५||

दीप अनुक्रम [१२६-१३१]

[११] 'मंखलिपुत्त' अध्ययनं

सद्विअ णेव आणच्च मुणी संखाए अणच्चाए से तातिते, मंखलिपुत्तेण अरहता इसिणा बुइयं-से एजति वेदति खुब्भति घट्टति फंदति चलति
उदीरेति तं तं भावं परिणमति ण ताता से, से णो एजति णो वे०णो खु० णो घ० णो फं० णो च० णो उ०णो तं तं भावं परिणमति से ॥ ६ ॥

॥ १० ॥ तातो, तातिणं व खलु णत्थि एजणा०. तातो खलु अप्पाणं च परं च चाउरंताओ संसारकंताराओ तातोति ता-असंमूढो उ जो णेता, मग्गदो- १२ जण्णव-
ऋषिभाषितेषु सयरक्कमो। गम्मणिज्जं गतिं णाउं जगं पावेति णामिणं ॥ १ ॥ सिद्धकम्मो तु जो वेज्जो, सत्थकम्मे य कोविओ। मोयणिज्जातो सो वीरो, कीय १३ भ-
रोगा मोतेति रोगिणं ॥ २ ॥ संजोए जो विहाणं तु, दव्वाणं गुणलाघवे। सो (उ) संजोगणिप्फण्णं, सव्वं कुणइ कारियं ॥ २ ॥ यालिअज्झ-
विज्जोपयारविण्णाता, जो धीमं सत्तसंजुतो। सो विज्जं साहइत्ताणं, कज्जं कुणइ तक्खणं ॥ ३ ॥ णिवत्तिं मोक्खमग्गस्स, सम्मं जो तु यणं
विजाणति। रागद्दोसे णिराकिच्चा, से उ सिद्धिं गमिस्सति ॥ ४ ॥ एवं से सिद्धे बुद्धे० ॥ ११ ॥ मंखलिपुत्तणामज्झयणं ॥ ११ ॥

प्रत सूत्रांक [१] गाथा ||१-४||

दीप अनुक्रम [१३२-१३६]

[१२] 'जण्णवक्कीय' अध्ययनं

आ(अ)णक्चा जाव ताव लोएसणा ताव ताव वित्तेसणा, जाव ताव वित्तेसणा ताव ताव लोएसणा, से लोएसणं च वित्तेसणं च परिण्णाए गोपहेणं गच्छेज्जा, णो महापहेणं गच्छेज्जा, जण्णवक्केण अरहता इसिणा बुइतं। तंजहा—जहा कवोता य कविंजला य, गाओ चरंती इह पातरासं। एवं मुणी गोयरियप्पविट्ठे, णो आलवे णोऽविय संजलेज्जा ॥ १ ॥ पंचवणीमकसुद्धं जो भिक्खं एसणाए एसेज्जा। तस्स सुलद्धा लाभा, हणणाए विप्पमुक्कदोसस्स ॥ २ ॥ पंथाणं रूवसंबद्धं, फलावत्तिं च चिन्तए। कोहातीणं विवाकं च, अप्पणो य परस्स य ॥ ३ ॥ एवं से सिद्धे बुद्धे० विरए ॥ १२ ॥ जण्णवक्कीयनामज्झयणं ॥ १२ ॥

प्रत सूत्रांक [१] गाथा ||१-६||

दीप अनुक्रम [१३७-१४३]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: (पूर्वकाले आगमरूपेण दर्शित:) “ऋषिभाषित-सूत्राणि”-मूलं

[१३] 'भयालि' अध्ययनं

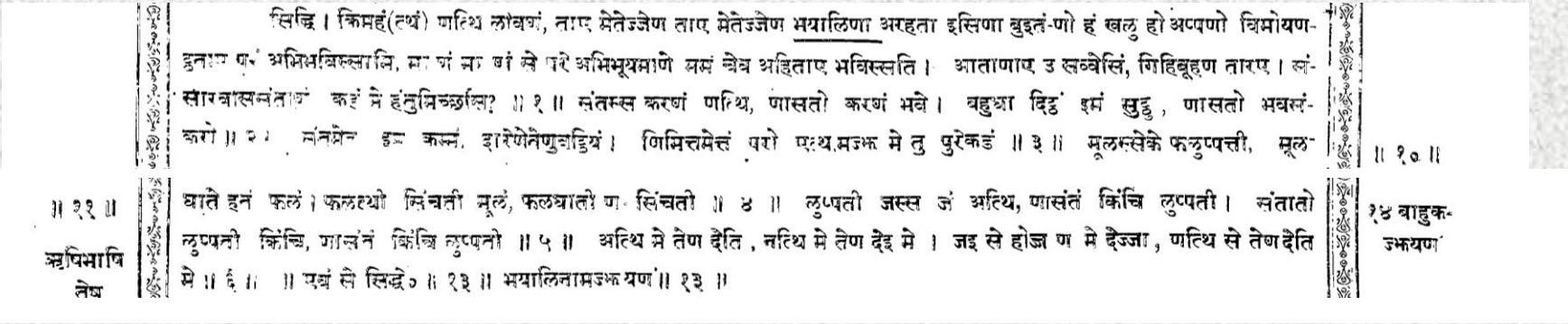

सिद्धि। किमहं(तथं) णत्थि लोवणं, ताए मेतेज्जेण ताए मेतेज्जेण भयालिणा अरहता इसिणा बुइतं-णो हं खलु हो अप्पणो विमोयण-
इताए परं अभिभविस्सामि, मा णं ना णं से परे अभिभूयमाणे समं चेव अहिताए भविस्सति। आताणाए उ सव्वेसिं, गिहिबूहण तारए। सं-
सारवासमंताणं कहं मे हंतुमिच्छसि? ॥ १ ॥ संतस्स करणं णत्थि, णासतो करणं भवे। बहुधा दिट्ठं इमं सुट्ठु, णासतो भवसं-
करो ॥ २ ॥ संतमेन इम कम्मं, दारेणेतेणुवट्ठियं। णिमित्तमेत्तं परो एत्थ मज्झ मे तु पुरेकडं ॥ ३ ॥ मूलसेके फलुप्पत्ती, मूल- ॥ १० ॥
॥ ११ ॥ घाते हतं फलं। फलत्थी सिंचती मूलं, फलघाती ण सिंचती ॥ ४ ॥ लुप्पती जस्स जं अत्थि, णासंतं किंचि लुप्पती। संतातो ॥ १४ बाहुक-
ऋषिभाषितेषु लुप्पती किंचि, णासंतं किंचि लुप्पती ॥ ५ ॥ अत्थि मे तेण देंति, नत्थि मे तेण देइ मे। जइ से होज्ज ण मे देज्जा, णत्थि से तेण देंति उज्झयणं
मे ॥ ६ ॥ ॥ एवं से सिद्धे० ॥ १३ ॥ भयालिनामज्झयणं ॥ १३ ॥

प्रत सूत्रांक [१] गाथा ||१||

दीप अनुक्रम [१४४-१४५]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: (पूर्वकाले आगमरूपेण दर्शित:) "ऋषिभाषित-सूत्राणि"-मूलं

[१४] 'बाहुक' अध्ययनं

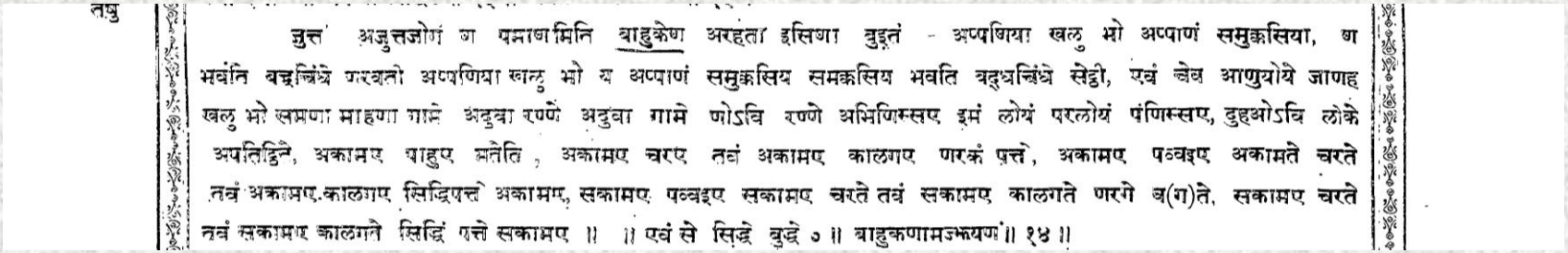

तषु

जुत्तं अजुत्तजोगं ण पमाणमिति बाहुकेण अरहता इसिणा बुइतं - अप्पणिया खलु भो अप्पाणं समुक्कसिया, ण भवंति बद्धचिंधे णरवतो अप्पणिया खलु भो य अप्पाणं समुक्कसिय समक्कसिय भवति बद्धचिंधे सेट्ठी, एवं चेव आणुयोये जाणह खलु भो समणा माहणा गामे अदुवा रण्णे अदुवा गामे णोऽवि रण्णे अभिणिस्सए इमं लोयं परलोयं पंणिस्सए, दुहओऽवि लोके अपतिट्ठिते, अकामए बाहुए मतेति, अकामए चरए तवं अकामए कालगए णरकं पत्ते, अकामए पव्वइए अकामते चरते तवं अकामए कालगए सिद्धिपत्ते अकामए, सकामए पव्वइए सकामए चरते तवं सकामए कालगते णरगे ब(ग)ते, सकामए चरते तवं सकामए कालगते सिद्धिं पत्ते सकामए ॥ ॥ एवं से सिद्धे बुद्धे ० ॥ बाहुकणामज्झयणं ॥ १४ ॥

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: (पूर्वकाले आगमरूपेण दर्शित:) "ऋषिभाषित-सूत्राणि"-मूलं

[१५] 'मधुरायणिज्ज' अध्ययनं

प्रत सूत्रांक [१] गाथा ॥१-२९॥

दीप अनुक्रम [१४६-१७५]

सिद्धि । सायादुक्खेण अभिभूते दुक्खी दुक्खं उदीरेति, असातादुक्खेण अभिभूए दुक्खी दुक्खं उदीरेति । सातादुक्खेण अभिभूए जाव णो असातादुक्खेण अभिभूते दुक्खी दुक्खं उदीरेति । सातादुक्खेण अभिभूतस्स दुक्खिणो दुक्खं उदीरेति, असातादुक्खेण अभिभूयस्स दुक्खिणो दुक्खं उदीरेति, सातादुक्खेण अभिभूतस्स० दुक्खिणो दुक्खं उदीरेति । पुच्छा य वागरणं च-संतदुक्खी दुक्खं उदीरेति ? असंतदुक्खी दुक्खं उदीरेति ? संतं दुक्खी दुक्खं उदीरेइ ?, सातादुक्खेण अभिभूतस्स उदीरेति, णो असंतं दुक्खी दुक्खं उदीरेइ, मधुरायणेण: अरहता इसिणा बुइतं-दुक्खेण खलु भो अप्पहीणेणं जीए आगच्छंति हत्थच्छेयणाइं पादच्छेयणाइं एवं णवमज्झ- ॥ ११ ॥

॥ १२ ॥ ऋषिभाषितेषु

तणगमणं णेयव्वं जाव सासतं निव्वाणमब्भुवगता चिट्ठंति, णवरं दुक्खाभिलावो-पावमूलमणिव्वाणं, संसारे सव्वदेहिणं । पावमूलाणि दुक्खाणि, पावमूलं च जम्मणं ॥ १ ॥ संसारे दुक्खमूलं तु, पावं कम्मं पुरेकडं । पावकम्मणिरोधाय, सम्मं भिक्खु परिव्वए ॥ २ ॥ सभावे सति कंदस्स, धुवं वल्लीय रोहणं । बीए संवुज्झमाणंमि, अंकुरस्सेव संपदा ॥ ३ ॥ सभावे सति पावस्स, धुवं दुक्खं पसूयते । वासतो मट्टियापिंडे, णिवत्ती तु घडादिणं ॥ ४ ॥ सभावे सति कंदस्स, जहा वल्लीय रोहणं । बीयातो अंकुरो चेव, दुक्खं वल्लीय अंकुरा ॥ ५ ॥ पावघाते हतं दुक्खं, पुप्फघाए जहा फलं । विद्धाए मुद्धसूईए, कतो तालस्स संभवो ॥ ६ ॥ मूलसेके फलुप्पत्ती, मूलघाते हतं फलं । फलत्थी सिंचए मूलं, फलघाती न सिंचति ॥ ७ ॥ दुक्खितो दुक्खघाताय, दुक्खावेत्ता सरीरिणो । पडियारेण दुक्खस्स, दुक्खमण्णं णिबंधइ ॥ ८ ॥ दुक्खमूलं पुरा किच्चा, दुक्खमासज्ज सोयती । गहितंमि अणे पुव्विं, अदइत्ता ण मुच्चइ ॥ ९ ॥ आहारत्थी जहा बालो, वण्हीं सप्पं च गेण्हती । तहा मूढो सुहत्थी तु, पावमण्णं पकुव्वती ॥ १० ॥ पावं परस्स कुव्वंतो, हसती मोहमोहितो । मच्छो गलं गसंतो वा, विणिघातं ण पस्सती ॥ ११ ॥ पच्चुप्पण्णरसे गिद्धो, मोहमल्लपणोल्लितो । दित्तं पावति उक्कंथं, वारिमज्झे व वारणा ॥ १२ ॥ परोवघाततल्लिच्छो, दुप्पमोहमलुद्धुरो । सीहो जरो दुपाणे वा, गुणदोसं ण विदेति

॥ १२ ॥ १५ मधुरायणज्झयणं

प्रत सूत्रांक [१] गाथा ॥१-२९॥

दीप अनुक्रम [१४६-१७५]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: (पूर्वकाले आगमरूपेण दर्शित:) "ऋषिभाषित-सूत्राणि"-मूलं

[१५] 'मधुरायणिज्ज' अध्ययनं (वर्तते)

॥ १३ ॥ वसं सो पावं पुरो किच्चा, दुक्खं वेदेति दुम्मती । आसत्तकंठपावो वा, मुक्कधारो दुहट्ठिओ ॥ १४ ॥ पावं जे उ पकुव्वंति, जीवा साताणुगामिणो । वड्ढती पावकं तेसिं, अणग्गाहिस्स वा अणं ॥ १५ ॥ अणुबद्धमपस्संता, पच्चुप्पण्णगवेसका । ते पच्छा दुक्खमच्छंति, गलुच्छिन्ना भसा जहा ॥ १६ ॥ आता कडाण कम्माणं, आता भुंजति जं फलं । तम्हा आतस्स अट्ठाए, पावमादाय वज्जए ॥ १७ ॥ संति जम्मे पसूयंति, वाहिसोगजरादयो । नासंते डहते वण्ही, तरुच्छेत्ता ण छिंदति ॥ १८ ॥ दुक्खं जरा य मच्चू य, सोगो ॥ १२ ॥

॥ १३ ॥ ऋषिभाषितेषु

माणावमाणणा । जम्मघाते हतो होती, पुप्फघाते जहा फलं ॥ १९ ॥ पत्थरेणाहतो कीवो, खिप्पं डसइ पत्थरं । मिगारिऊ सरं पप्प, सरुप्पत्तिं विमग्गति ॥ २० ॥ तहा बालो दुही वत्थुं, बाहिरं णिंदती भिसं । दुक्खुप्पत्तिविणासं तु, मिगारिव्व ण पप्पति (घत्तिति) ॥ २१ ॥ वणं वण्ही कसाए य, अण्णं जं वावि दुट्ठितं । आमगं च उव्वहंता, दुक्खं पावंति पीवरं ॥ २२ ॥ वण्ही अणस्स,कम्मस्स, आमकस्स वणस्स य । णिस्सेसं घायिणं सेयो, छिण्णोऽवि रुहती दुमो ॥ २३ ॥ मासच्छण्णो जहा वण्ही, गूढकोहो जहा रिपू । पावकम्मं तहा लीणं, दुक्खसंताणसंकडं ॥ २४ ॥ पत्तिंधणस्स वण्हिस्स, उद्दामस्स विसस्स य । मिच्छत्ते यावि कम्मस्स, दित्ता बुड्ढी दुहावहा ॥ २५ ॥ धूमहीणो य जो वण्ही, छिण्णादाणं च जं अणं । संताहतं विसं जंति, धुवं तं खयमिच्छती ॥ २६ ॥ छिण्णादाणं धुवं कम्मं, भिज्जते तं तहाहतं । आदित्तरस्सितत्तं व, छिण्णादाणं जहा जलं ॥ २७ ॥ तम्हा उ सव्वदुक्खाणं, कुज्जा मूलविणासणं । बालगाहिव्व सप्पस्स, विसदोस विणासणं ॥ २८ ॥ ॥ एवं से सिद्धे बुद्धे० ॥ १५ ॥ मधुरायणिज्जणामज्झयणं ॥ १५ ॥

मधुरायणिज्जज्झ० १५ सोरियायणज्झ० १६

प्रत सूत्रांक [१] गाथा ||१-४||

दीप अनुक्रम [१७६-१८०]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: (पूर्वकाले आगमरूपेण दर्शित:) "ऋषिभाषित-सूत्राणि"-मूलं

[१६] 'सोरियायण' अध्ययनं

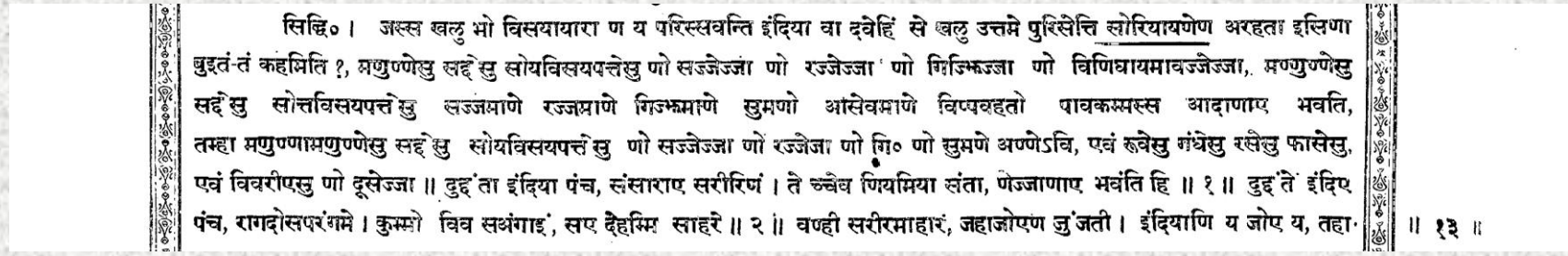

सिद्धि० । जस्स खलु भो विसयायारा ण य परिस्सवन्ति इंदिया वा दवेहिं से खलु उत्तमे पुरिसेत्ति सोरियायणेण अरहता इसिणा
बुइतं-तं कहमिति ?, मणुण्णेसु सद्देसु सोयविसयपत्तेसु णो सज्जेज्जा णो रज्जेज्जा णो गिज्झिज्जा णो विणिघायमावज्जेज्जा, मणुण्णेसु
सद्देसु सोत्तविसयपत्तेसु सज्जमाणे रज्जमाणे गिज्झमाणे सुमणो आसेवमाणे विप्पवहतो पावकम्मस्स आदाणाए भवति,
तम्हा मणुण्णामणुण्णेसु सद्देसु सोयविसयपत्तेसु णो सज्जेज्जा णो रज्जेजा णो गि० णो सुमणे अण्णेऽवि, एवं रूवेसु गंधेसु रसेसु फासेसु,
एवं विवरीएसु णो दूसेज्जा ॥ दुद्दंता इंदिया पंच, संसाराए सरीरिणं । ते च्चेव णियमिया संता, णेज्जाणाए भवंति हि ॥ १ ॥ दुद्दंते इंदिए
पंच, रागदोसपरंगमे । कुम्मो विव सअंगाइं, सए देहम्मि साहरे ॥ २ ॥ वण्ही सरीरमाहारं, जहाजोएण जुंजती । इंदियाणि य जोए य, तहा ॥ १३ ॥
॥ १४ ॥ जोगे वियाणसु ॥ ३ ॥ ॥ एवं से सिद्धे बुद्धे० ॥ १६ ॥ सोरियायणणामज्झयणं ॥ १६ ॥ विदुअज्झय-

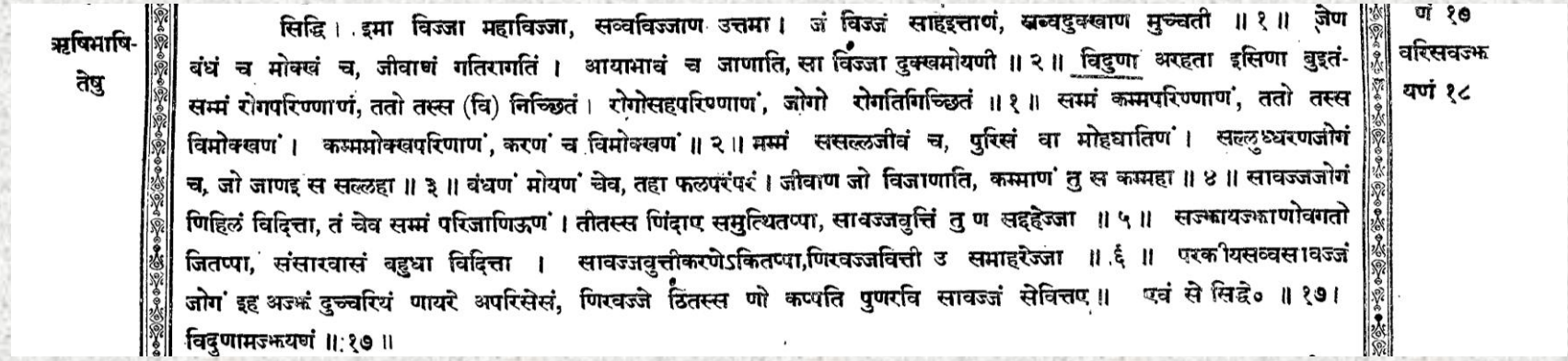

आगम संबंधी साहित्य	[भाग-2] प्रत्येकबुद्धभाषितानि ऋषिभाषितसूत्राणि .... अध्ययन-[१७], ...मूलं [-] / गाथा [१-८] ....
प्रत सूत्रांक [-] गाथा ||१-८|| दीप अनुक्रम [१८१- १८८]	पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: (पूर्वकाले आगमरूपेण दर्शित:) "ऋषिभाषित-सूत्राणि"-मूलं **[१७] 'विदु' अध्ययनं** ऋषिभाषि-तेषु सिद्धि । इमा विज्जा महाविज्जा, सव्वविज्जाण उत्तमा । जं विज्जं साहइत्ताणं, सव्वदुक्खाण मुच्चती ॥ १ ॥ जेण बंधं च मोक्खं च, जीवाणं गतिरागतिं । आयाभावं च जाणाति, सा विज्जा दुक्खमोयणी ॥ २ ॥ विदुणा अरहता इसिणा बुइतं- सम्मं रोगपरिण्णाणं, ततो तस्स (वि) निच्छितं । रोगोसहपरिण्णाणं, जोगो रोगतिगिच्छितं ॥ १ ॥ सम्मं कम्मपरिण्णाणं, ततो तस्स विमोक्खणं । कम्ममोक्खपरिणाणं, करणं च विमोक्खणं ॥ २ ॥ मम्मं ससल्लजीवं च, पुरिसं वा मोहघातिणं । सल्लुध्धरणजोगं च, जो जाणइ स सल्लहा ॥ ३ ॥ बंधणं मोयणं चेव, तहा फलपरंपरं । जीवाण जो विजाणाति, कम्माणं तु स कम्महा ॥ ४ ॥ सावज्जजोगं णिहिलं विदित्ता, तं चेव सम्मं परिजाणिऊणं । तीतस्स णिंदाए समुत्थितप्पा, सावज्जवुत्तिं तु ण सद्दहेज्जा ॥ ५ ॥ सज्झायज्झाणोवगतो जितप्पा, संसारवासं बहुधा विदित्ता । सावज्जवुत्तीकरणेऽकितप्पा, णिरवज्जवित्ती उ समाहरेज्जा ॥ ६ ॥ परकीयसव्वसावज्जं जोगं इह अज्झं दुच्चरियं णायरे अपरिसेसं, णिरवज्जे ठितस्स णो कप्पति पुणरवि सावज्जं सेवित्तए ॥ एवं से सिद्धे० ॥ १७ ॥ विदुणामज्झयणं ॥ १७ ॥ णं १७ वरिसवज्झयणं १८

प्रत सूत्रांक [१] गाथा ॥१-२॥

दीप अनुक्रम [१८९-१९१]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: (पूर्वकाले आगमरूपेण दर्शित:) "ऋषिभाषित-सूत्राणि"-मूलं

[१८] 'वरिसव' अध्ययनं

सिद्धि ॥ अयते खलु भो जीवे वज्जं समादियति, से कहमेतं?, पाणातिवाएणं जाव परिग्गहेणं अरति जाव मिच्छादंसणसल्लेण वज्जं समाइत्ता हत्थच्छेयणाइं पायच्छेयणाइं जाव अणुपरियट्टंति णवमुद्दं सगमेणं, जे खलु भो जीवे णो वज्जं समादियति से कहमेतं?, वरिसवकण्हेण अरहता इसिणा बुइतं—पाणाइवातवेरमणेणं जाव मिच्छादंसणसल्लवेरमणेणं, सोइंदियताणिग्गहेणं णो वज्ज समज्जिणित्ता हत्थच्छेयणाइं पायच्छेयणाइं जाव दोमणस्साइं, वीतिवतित्ता सिवमचल जाव चिट्ठंति। सकुणी संकु (चंचु) प्पघातं च, ॥ १४ ॥

॥ १५ ॥ वेरत्तं रज्जगं तहा । वारिपत्तधरो चेव, विभागंमि विहावए ॥ १ ॥ एवं से :सिद्धे० ॥ १८ ॥ वरिसवणामज्झयणं ॥ १८ ॥ वरिसवज्झ

प्रत सूत्रांक [१] गाथा ||१-६||

दीप अनुक्रम [१९२-१९८]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: (पूर्वकाले आगमरूपेण दर्शित:) "ऋषिभाषित-सूत्राणि"-मूलं

[१९] 'आयरियायण' अध्ययनं

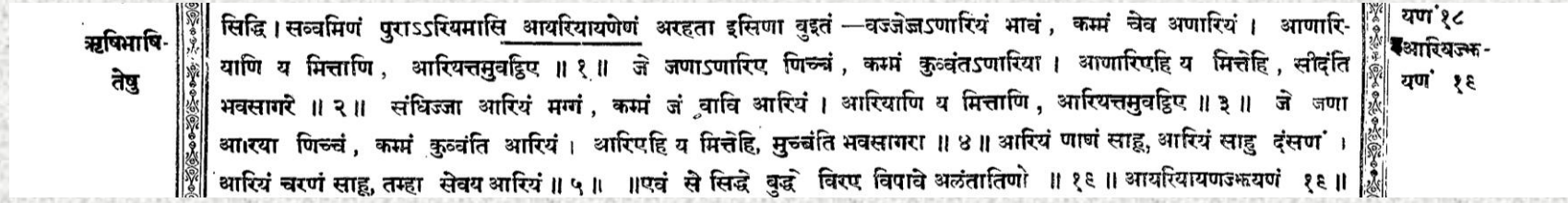

ऋषिभाषितेषु

सिद्धि। सव्वमिणं पुराऽऽरियमासि आयरियायणेणं अरहता इसिणा बुइतं —वज्जेज्जऽणारियं भावं, कम्मं चेव अणारियं। आणारियाणि य मित्ताणि, आरियत्तमुवट्ठिए ॥ १ ॥ जे जणाऽणारिए णिच्चं, कम्मं कुव्वंतऽणारिया। आणारिएहि य मित्तेहि, सीदंति भवसागरे ॥ २ ॥ संधिज्जा आरियं मग्गं, कम्मं जं वावि आरियं। आरियाणि य मित्ताणि, आरियत्तमुवट्ठिए ॥ ३ ॥ जे जणा आरया णिच्चं, कम्मं कुव्वंति आरियं। आरिएहि य मित्तेहि, मुच्चंति भवसागरा ॥ ४ ॥ आरियं णाणं साहू, आरियं साहु दंसणं। आरियं चरणं साहू, तम्हा सेवय आरियं ॥ ५ ॥ ॥एवं से सिद्धे बुद्धे विरए विपावे अलंतातिणो ॥ १९ ॥ आयरियायणज्झयणं १९ ॥

यणं १८ आरियज्झयणं १९

प्रत सूत्रांक [२] गाथा ||१-६||

दीप अनुक्रम [१९९-२०६]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: (पूर्वकाले आगमरूपेण दर्शित:) "ऋषिभाषित-सूत्राणि"-मूलं

[२०] 'उक्कल' अध्ययनं

सिद्धि। पंच उक्कला पन्नत्ता, तंजहा—दंडुक्कले १ रज्जुक्कले २ तेणुक्कले ३ देसुक्कले ४ सव्वुक्कले ५ । से किं तं दंडुक्कले ?, दंडुक्कले नामं जेणं दंडदिट्ठंतेणं आदिल्लमज्झवसाणाणं (आदिल्लमज्झवसाण) पण्णवणा, एसमुदयमेत्ताभिधाणाइं, णत्थि सरीरातो परं जीवोत्ति भगवति वोच्छेयं वदति सेतं दंडुक्कले १। से किं तं रज्जुक्कले ?, रज्जुक्कले णामं जेणं रज्जुदिट्ठंतेणं समुदयमेत्तपण्णवणा, ए०, पंचमहब्भूतखंधमेत्ताभिधाणाइं संसारसंसतीवोच्छेदं वदंति, सेतं रज्जुक्कले २। से किं तं तेणुक्कले ?, तेणुक्कले णामं जेणं अण्णसत्थदिट्ठंतगाहेहिं सपक्खुब्भावणाणिरए मम ते तमिति परकरुणच्छेदं वदति से तं तेणुक्कले ३। से किं तं देसुक्कले?, देसुक्कले णामं जेणं अत्थित्ते स इति सिद्धे जोवस्स अकत्तादिएहि गाहेहिं देसुच्छेदं वदति, से तं देसुक्कले ४। से किं तं सव्वुक्कले ?, सव्वुक्कले णामं जेणं सव्वतो सव्वसंभवाभावा णो तच्चं सव्वतो सव्वहा सव्वकालं व णत्थित्ति सव्वच्छेदं वदति, से तं सव्वुक्कले ॥ ५ ॥ उड्ढपाततला अहे केसग्गमत्थका एस आताए पज्जवे कसिणे तपरियंते जीवे, एस जीवे जीवति, एतं तं जीवितं भवति, से जहा णामते दड्ढेसु बीएसु ण ॥ १५ ॥

॥ १६ ॥

ऋषिभाषितेषु

पुणो अंकुरुप्पत्ती भवति एवामेव दड्ढे सरीरे ण पुणो सरीरुप्पत्ती भवति, तम्हा इणमेव जीवितं, णत्थि परलोए, णत्थि सुकडदुक्कडाणं कम्माणं फलवित्तिविसेसे, णो पच्चायंति जीवा. णो फुसंति पुण्णपावा, अफले कल्लाणपावए, तम्हा एतं सम्मंति बेमि उड्ढं पाततला अहे केसग्गमत्थका एस आया एय तपरियंते एस जीवे, एसामडे णाए तं तं, से जहाणामते दड्ढेसु बीएसु० एवामेव दड्ढे सरीरे०, तम्हा पुण्णपावऽग्गहणा सुहदुक्खसंभवाभावा सरीरदाहे पावकम्माभावा सरीरं डहेत्ता णो पुणो सरीरुप्पत्ती भवति ॥ एवं से सिद्धे ०॥ २० ॥ उक्कलज्झयणं ॥ २० ॥

उक्कलज्झयणं २० गाहावइज्झयणं २१

प्रत सूत्रांक [१] गाथा ||१-११||

दीप अनुक्रम [२०७-२१८]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: (पूर्वकाले आगमरूपेण दर्शित:) "ऋषिभाषित-सूत्राणि"-मूलं

[२१] 'गाहावइज्ज' अध्ययनं

सिद्धि । णाहं पुरा किंचि जाणामि, सव्वलोकंसि गाहावतिपुत्तेण तरुणेण अरहता इसिणा बुइतं-अण्णाणमू : खलु भो पुव्वं न जाणामि न पासामि नोऽभिसमावेमि नोऽभिसंबुज्झामि, नाणमूलाकं खलु भो इयाणिं जाणामि पासामि अभि मावेमि अहि-संबुज्झामि, अण्णाणमूलयं खलु मम कामेहिं किच्चं करणिज्जं, णाणमूलयं खलु मम कामेहिं अकिच्चं अकरणिज्जं, णाणमूलयं जीवा चाउरंतं संसारंजाव परियट्टयंति, णाणमूलयं जीवा चाउरंतं जाव वीयीवयंति, तम्हा अण्णाणं परिवज्ज णाणमूलकं व्वदुक्खाणं अंतं करिस्सामि, सव्वदुक्खाणं अंतं किच्चा सिवमचल जाव सासतं चिट्ठिस्सामि। अण्णाणं परमं दुक्खं, अण्णाणा जायते भयं । अण्णाणमूलो संसारो, विविहो सव्वदेहिणं ॥ १ ॥ मिगा वज्झंति पासेहिं, विहंगा मत्तवारणा । मच्छा गलेहिं सासंति, अण्णाण सुमहब्भयं ॥ २ ॥ जम्मं जरा य मच्चू य, सोको माणोऽवमाणणा । अण्णाणंमूलं जीवाणं, संसारस्स य संतती ॥ ३ ॥ अण्णा-णेण अहं पुव्वं, दीहं संसारसागरं । जम्मजोणिभयावत्तं, सरित्तो दुक्खजातसं (लयं) ॥ ४ ॥ दीवे पातो पयंगस्स, कोसियारस्स बंधणं । किंपाकभक्खणं चेव, अण्णाणस्स णिदंसणं ॥ ५ ॥ बितियं जरो दुपाणत्थं, दिट्ठो अण्णाणमोहितो । संभग्गगातलट्ठी उ,

॥ १७ ॥ ऋषिभाषि-तेषु

मिगारी णिधणं गओ ॥ ६ ॥ मिगारी य भुयंगो य, अण्णाणेण विमोहितो । गाहा (दाढा) दंसणिवातेणं, विणासं दोऽवि ते गता ॥ ७ ॥ से सुप्पियं तणयं भद्दा, अण्णाणेण विमोहिता । माता तस्सेव सोगेण, कुद्धा तं चेव खादति ॥ ८ ॥ विण्णासो ओसहीणं तु, संजोगाणं व जोयणं । साहणं वावि विज्जाणं, अण्णाणेण ण सिज्झति ॥ ९ ॥ विणणसो ओसहीणं तु, संजोगाणव जोयणं । साहणं वावि विज्जाणं, णाणजोगेण सिज्झति ॥ १० ॥ ॥ एवं सिद्धे० ॥ २१ ॥ गाहावइज्जं नामज्झयणं सम्मत्तं ॥ २१ ॥

दगभालिज्ज-ज्झयणं २२

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: (पूर्वकाले आगमरूपेण दर्शित:) "ऋषिभाषित-सूत्राणि"-मूलं

[२२] 'दगभालिज्ज' अध्ययनं

सिद्ध। परिसाडी कम्मे, अपरिसाडिणो बुद्धा, तम्हा खलु परिसाडिणो बुद्धा णोवलिप्पंति रएणं पुक्खरपत्तं व वारिणा, दगभाले(गद्दभे)ण अरहता इसिणा बुइतं-पुरिसादीया धम्मा पुरिसप्पवरा पुरिसजेट्ठा पुरिसकप्पिया पुरिसपज्जोविता पुरिससमण्णागता पुरिसमेव अभिउंजियाणं चिट्ठति, से जहाणाम ते अरसिया सरीरंसि जाता सरीरेण वड्ढिया सरीरसमण्णागता सरीरं चेव अभिउंजियाण चिट्ठाते, एवामेव धम्मावि पुरिसादीया जाव चिट्ठंति। एवं गडे वम्मीके थूभे रुक्खे वणसंडे पुक्खरिणी, णवरं पुढवीय जाता भाणियव्वा, उदगपुक्खले उदगाणेतव्वाणि। से जहा णामते अगणिकाए सिया अरणीय जाते जाव अरणी चेव अहिभूय चिट्ठति, एवामेव, धम्मावि पुरिसादीया तं चेव। धित्तेसिं -गामणगराणं, जेसिं महिला पणायिका। ते यावि धिक्किया पुरिसा, जे इत्थीणं वसंगता ॥ १ ॥ गाहा-कुला सुदिव्वाव, भावका मधुरोदका। फुल्ला व पउमिणी रम्मा, बालककंता व मालगी ॥ २ ॥ हेमा गुहा ससीहा वा, माला वा वज्झकप्पिता। सविसा गंधजुत्ती वा, अंतो दुट्ठा व वाहिणी ॥ ३ ॥ गरत्ता मदिरा वावि, जोगकण्णा व सालिणी। णारी लोगंमि विण्णेया, जा होज्जा समणोदया ॥ ४ ॥ उच्छायणं कुलाणं तु, दव्वहीणाण लाघवो। पतिट्ठा सव्वदुक्खाणं, णिट्ठाणं अज्जियाण य ॥ ५ ॥ गेहं वेराण गंभीरं, विग्घो सद्धम्मचारिणं। दुट्ठासो अखलोणं व, लोके सूता सुमंगणा (किमंगणा ?) ॥ ६ ॥ इत्थी उ बलवं जत्थ, गामेसु णगरेसु वा। ॥ १७ ॥

॥ १८ ॥ ऋषिभाषितेषु

अणस्सयस्स हेसं तं, अपव्वेसु य मुंडणं ॥ ७ ॥ धित्तेसिं गामणगराणं सिलोगो। डाहो भयं हुतासातो, विसातो मरणं भयं। छेदो भयं च सत्थातो, वालातो दसणं भयं ॥ ८ ॥ संकणीयं च जं वत्थु, अप्पडीकारमेवय। तं वत्थुं सुट्ठु जाणेज्जा, जुज्जंते जेऽणुजोइता ॥ ९ ॥ जत्थत्थी जे समारंभा, जे वा जे साणुबंधिणो। ते वत्थु सुट्ठु जाणेज्जा, णेय सव्वविणिच्छये ॥ १० ॥ जेसिं जहिं सुहुप्पत्ती, जे वा जेसाऽऽणुगामिणो। विणासो अविणासो वा, जाणेज्जा कालवेयवी ॥ ११ ॥ सोसच्छेदे धुवो मच्चू, मूलच्छेदे हतो दुमो। मूलं फलं च सव्वं च, जाणेजा सव्ववत्थुसु ॥ १२ ॥ सीसं जहा सरीरस्स, जहा मूलं दुमस्स य। सव्वस्स साहुधम्मस्स, तहा झाणं विजीयते ॥ १३ ॥ एवं से सिद्धे० ॥ २२ ॥ दग (भाली) गद्दभीयनामज्झयणं ॥ २२ ॥

रामपुत्तज्झयणं २३

प्रत सूत्रांक [१] गाथा ॥१॥

दीप अनुक्रम [२३४-२३५]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: (पूर्वकाले आगमरूपेण दर्शित:) "ऋषिभाषित-सूत्राणि"-मूलं

[२३] 'रामपुत्तिय' अध्ययनं

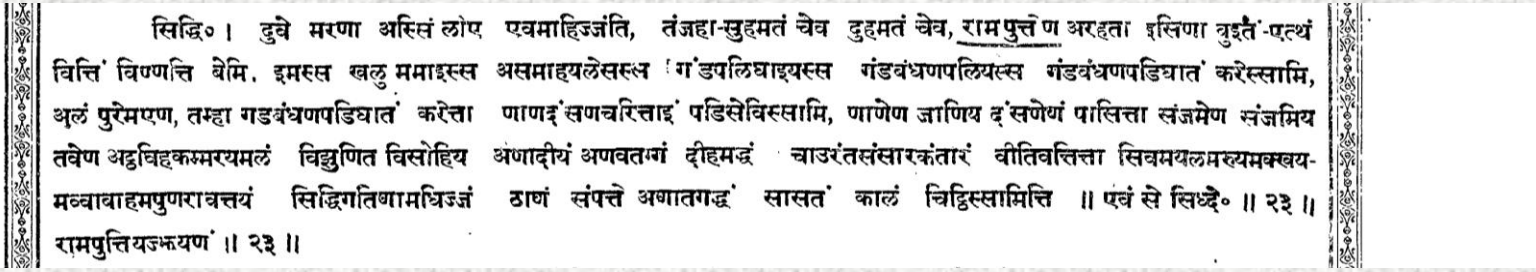

सिद्धि०। दुवे मरणा अस्सिं लोए एवमाहिज्जंति, तंजहा-सुहमतं चेव दुहमतं चेव, रामपुत्तेण अरहता इसिणा बुइतं-एत्थं वित्तिं विण्णत्ति बेमि. इमस्स खलु ममाइस्स असमाहयलेसस्स गंडपलिघाइयस्स गंडबंधणपलियस्स गंडबंधणपडिघातं करेस्सामि, अलं पुरेमएण, तम्हा गडबंधणपडिघातं करेत्ता णाणदंसणचरित्ताइं पडिसेविस्सामि, णाणेण जाणिय दंसणेणं पासित्ता संजमेण संजमिय तवेण अट्ठविहकम्मरयमलं विद्धुणित विसोहिय अणादीयं अणवतग्गं दीहमद्धं चाउरंतसंसारकंतारं वीतिवत्तित्ता सिवमयलमरुयमक्खय-मव्वाबाहमपुणरावत्तयं सिद्धिगतिणामधिज्जं ठाणं संपत्ते अणागतद्धं सासतं कालं चिट्ठिस्सामित्ति ॥ एवं से सिद्धे० ॥ २३ ॥

रामपुत्तियज्झयणं ॥ २३ ॥

प्रत सूत्रांक [१] गाथा ||१-४१||

दीप अनुक्रम [२३६-२७७]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: (पूर्वकाले आगमरूपेण दर्शित:) "ऋषिभाषित-सूत्राणि"-मूलं

[२४] 'हरिगिरि' अध्ययनं

सच्चमिणं पुरा भव्वं इदाणिं पुण अभव्वं हरिगिरिणा अरहता इसिणा बुइतं—चयंति खलु भो य णेरइया णेरतियत्ता तिरिक्खा तिरि-
क्खत्ता मणुस्सा मणुस्सत्ता देवा देवत्ता, अणुपरियट्टंति जीवा चाउरंतं संसारकंतारं कम्माणुगामिणो तधावि मे जीवे इधलोके सुहुप्पायके ॥ १८ ॥
॥ १९ ॥ परलोकदुहुप्पादए अणिए अधुवे अणितिए अणिच्चे असासते सज्जति रज्जति गिज्झति मुज्झति अज्झोववज्जति विणिघातमावज्जति, इमं च हरिगिरिअज्झयणं २४
ऋषिभाषितेषु णं पुणो सडणपडणविकिरणविद्धंसणधम्मं अणेगजोगक्खेमसमायुत्तं जीवस्सऽतारेलुके, संसारणिव्वेढिं करोति, संसारणिव्वेढिं करेत्ता
सिवमचल० चिट्ठिस्सामित्ति, तम्हाऽधुवं असासतमिणं संसारे सव्वजीवाणं संसतीकरणमितिणच्चा णाणदंसणचरित्ताणि सेविस्सा-
मि, णाणदंसणचरित्ताणि सेवित्ता अणादीयं जाव कंतारं वितिवतित्ता सिवमचल जाव ठाणं अब्भुवगते चिट्ठिस्सामि। कंतारे वारिम-
ज्झे वा, दित्ते वा अग्गिसंभमे। तमंसि वाडधाणे वा, सया धम्मो जिणाहितो ॥ १ ॥ धारणी सुसहा चेव, गुरूभेसज्जमेव वा
सद्धम्मो सव्वजीवाणं, णिच्चं लोए हितंकरो ॥ २ ॥ सिग्घवायिसमायुत्ते, रधचक्के जहा अरा। फडंतं वल्लिछया व, सुहदुक्खे
सरीरिणो ॥ ३ ॥ संसारे सव्वजीवाणं, गेहा संपरियत्तते। उडुवक्कातरूणं वा, वसणुस्सवकारणं ॥ ४ ॥ वण्हिं रविं ससंकं च,
सागरं सरियं तहा। इंदज्झयं अणीयं च, सज्जमेहं च चिंतए ॥ ५ ॥ जोव्वणं रूवसंपत्तिं, सोभग्गं धणसंपदं। जीवितं वावि जीवा-
णं, जलबुब्बुयसंनिभं ॥ ६ ॥ देविंदा समहिड्डिया, दाणविंदाय विस्सुता। णरिंदा जें य विक्कंता; संखयं विवसा गता
॥ ७ ॥ सव्वत्थ णिरणुक्कोसा णिव्विसेसप्पहारिणो। सुत्तमत्तपमत्ताणं, एका जगतिऽणिच्चता ॥ ८ ॥ देविंदा दाणविन्दा य,
णरिंदा जे य विस्सुता। पुण्णकम्मोदयब्भूयं, पीतिं पावंति पीवरं ॥ ९ ॥ आऊ धणं बलं रूवं, सोभग्गं सरलत्तणं। णीरामयं च
कंतं च, दिस्सते विविहं जगे ॥ १० ॥ सदेवोरगगंधव्वं, सतिरिक्खं समाणुसं। णिब्भया णिव्विसेसा, जगे वत्ते यऽणिच्चता
॥ ११ ॥ दाणमाणोवयारेहिं, सामभेयक्कियाहि या। ण सक्का संणिवारेउं, तेलोक्केणाविऽणिच्चता ॥ १२ ॥ उच्चं वा जति वा
णीयं, देहिणं वा णमस्सितं। जागरंतं पमत्तं वा, सव्वत्थाणाभिलुप्पति ॥ १३ ॥ एवमेतं करिस्सामि, ततो एत्रं भविस्सति। ॥ १९ ॥

प्रत
सूत्रांक
[१]
गाथा
||१-४१||

दीप
अनुक्रम
[२३६-
२७७]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: (पूर्वकाले आगमरूपेण दर्शित:) "ऋषिभाषित-सूत्राणि"-मूलं

[२४] 'हरिगिरि' अध्ययनं (वर्तते}

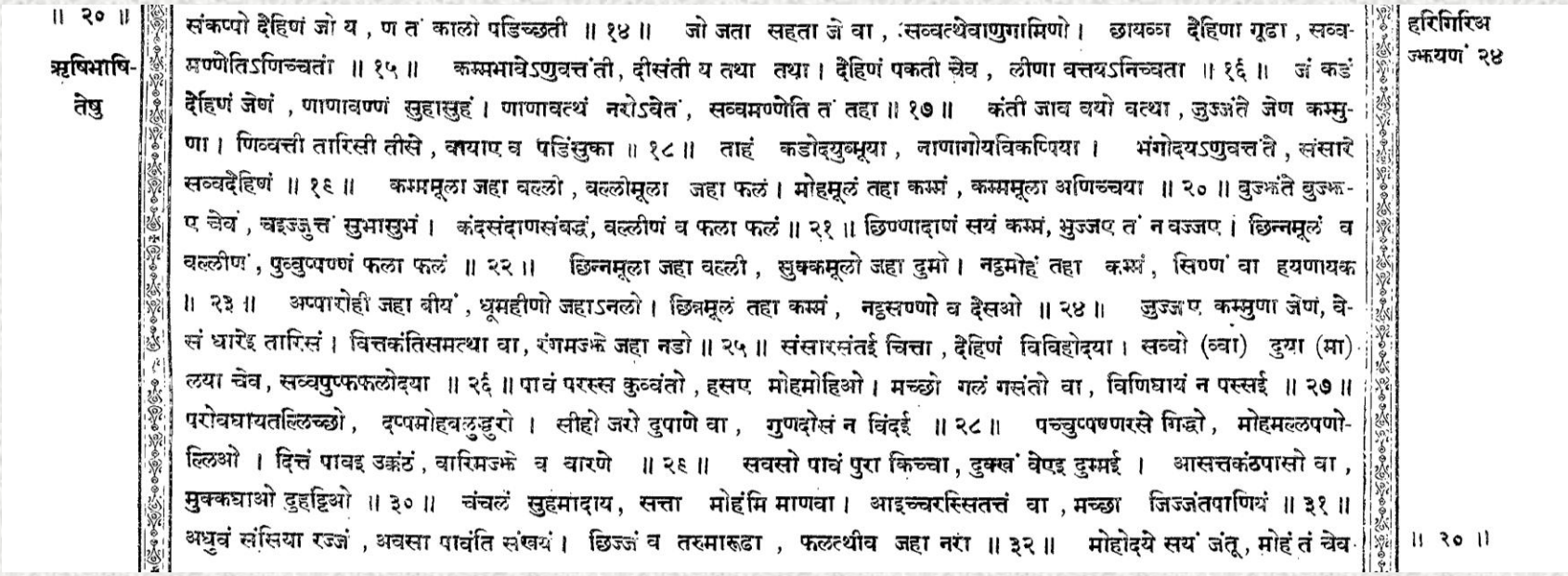

|| २० || ऋषिभाषि- तेषु

संकप्पो देहिणं जो य, ण तं कालो पडिच्छती ॥ १४ ॥ जो जता सहता जे वा, सव्वत्थेवाणुगामिणो। छायव्वा देहिणा गूढा, सव्व-मण्णेतिऽणिच्चतां ॥ १५ ॥ कम्मभावेऽणुवत्तंती, दीसंती य तथा तथा। देहिणं पकती चेव, लीणा वत्तयऽनिच्चता ॥ १६ ॥ जं कडं देहिणं जेणं, णाणावण्णं सुहासुहं। णाणावत्थं नरोऽवेतं, सव्वमण्णेति तं तहा ॥ १७ ॥ कंती जाव वयो वत्था, जुज्जंते जेण कम्मुणा। णिव्वत्ती तारिसी तीसे, वायाए व पडिंसुका ॥ १८ ॥ ताहं कडोदयुब्भूया, णाणागोयविकप्पिया। भंगोदयऽणुवत्तंते, संसारे सव्वदेहिणं ॥ १९ ॥ कम्ममूला जहा वल्ली, वल्लीमूला जहा फलं। मोहमूलं तहा कम्मं, कम्ममूला अणिच्चया ॥ २० ॥ बुज्झंते बुज्झए चेवं, चइज्जुत्तं सुभासुभं। कंदसंदाणसंबद्धं, वल्लीणं व फला फलं ॥ २१ ॥ छिण्णादाणं सयं कम्मं, भुज्जए तं न वज्जए। छिन्नमूलं व वल्लीणं, पुव्वुप्पण्णं फला फलं ॥ २२ ॥ छिन्नमूला जहा वल्ली, सुक्कमूलो जहा दुमो। नट्ठमोहं तहा कम्मं, सिण्णं वा हयणायकं ॥ २३ ॥ अप्पारोही जहा बीयं, धूमहीणो जहाऽनलो। छिन्नमूलं तहा कम्मं, नट्ठसण्णो व देसओ ॥ २४ ॥ जुज्जए कम्मुणा जेणं, वेसं धारेइ तारिसं। वित्तकंतिसमत्था वा, रंगमज्झे जहा नडो ॥ २५ ॥ संसारसंतई चित्ता, देहिणं विविहोदया। सव्वो (व्वा) दुग (मा) लया चेव, सव्वपुप्फफलोदया ॥ २६ ॥ पावं परस्स कुव्वंतो, हसए मोहमोहिओ। मच्छो गलं गसंतो वा, विणिघायं न पस्सई ॥ २७ ॥ परोवघायतल्लिच्छो, दप्पमोहबलुद्धुरो। सीहो जरो दुपाणे वा, गुणदोसं न विंदई ॥ २८ ॥ पच्चुप्पण्णरसे गिद्धो, मोहमल्लपणोल्लिओ। दित्तं पावइ उक्कंठं, वारिमज्झे व वारणे ॥ २९ ॥ सवसो पावं पुरा किच्चा, दुक्खं वेएइ दुम्मई। आसत्तकंठपासो वा, मुक्कधाओ दुहट्टिओ ॥ ३० ॥ चंचलं सुहमादाय, सत्ता मोहंमि माणवा। आइच्चरस्सितत्तं वा, मच्छा जिज्जंतपाणियं ॥ ३१ ॥ अधुवं संसिया रज्जं, अवसा पावंति संखयं। छिज्जं व तरुमारूढा, फलत्थीव जहा नरा ॥ ३२ ॥ मोहोदये सयं जंतू, मोहं तं चेव

हरिगिरिअज्झयणं २४

|| २० ||

प्रत सूत्रांक [१] गाथा ||१-४१||

दीप अनुक्रम [२३६-२७७]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: (पूर्वकाले आगमरूपेण दर्शित:) "ऋषिभाषित-सूत्राणि"-मूलं

[२४] 'हरिगिरि' अध्ययनं (वर्तते}

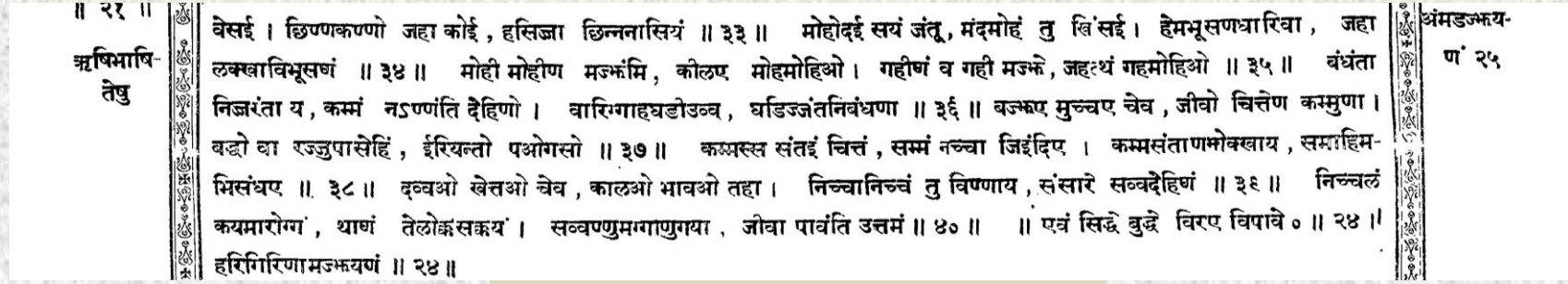

|| २१ ||

ऋषिभाषितेषु

वेसई । छिण्णकण्णो जहा कोई, हसिज्जा छिन्ननासियं || ३३ || मोहोदई सयं जंतू, मंदमोहं तु खिंसई। हेमभूसणधारिवा, जहा
लक्खाविभूसणं || ३४ || मोही मोहीण मज्झंमि, कीलए मोहमोहिओ। गहीणं व गही मज्झे, जहत्थं गहमोहिओ || ३५ || बंधंता
निज्जरंता य, कम्मं नऽण्णंति देहिणो। वारिग्गाहघडीउव्व, घडिज्जंतनिबंधणा || ३६ || बज्झए मुच्चए चेव, जीवो चित्तेण कम्मुणा।
बद्धो वा रज्जुपासेहिं, ईरियन्तो पओगसो || ३७ || कम्मस्स संतइं चित्तं, सम्मं नच्चा जिइंदिए। कम्मसंताणमोक्खाय, समाहिम-
भिसंधए ||. ३८ || दव्वओ खेत्तओ चेव, कालओ भावओ तहा। निच्चानिच्चं तु विण्णाय, संसारे सव्वदेहिणं || ३९ || निच्चलं
कयमारोग्गं, थाणं तेलोक्कसक्कयं। सव्वण्णुमग्गाणुगया, जीवा पावंति उत्तमं || ४० || || एवं सिद्धे बुद्धे विरए विपावे० || २४ ||
हरिगिरिणामज्झयणं || २४ ||

अंमडज्झयणं २५

--- x --- x --- x --- x --- x ---

प्रत सूत्रांक [२] गाथा ||१-२||

दीप अनुक्रम [२७८-२८१]

[२५] 'अंबड' अध्ययनं

तए णं अंमडे परिव्वायए जोगंधरायणं एवं वयासी(स)मणे मे विरई भो देवाणुप्पिओ ! गब्भवासा हि कहं न तुमं बंभचारी ?, तए णं जोगंधरायणे अंबडं परिव्वायगं एवं वयासी-भारिया एहि या एहि त ग्याणाहि जे खलु हारिता पावेहि कम्मेहिं, अविप्पमुक्का ते खलु गब्भवासा हि रज्जंति, ते सयमेव पाणे अतिवातेति। अण्णेहिवि पाणे आ०वातेति। अण्णेवि पाणे अतिवातावेंते वा सातिज्जंति समणुजाणंति, ते सयमेव मुसं भासंति० सातिज्जंति स० अविरताअप्पडिहतपच्चक्खात० मणुजा अदत्तं० अन्नं० साति०जाव सयमेव अब्बंभ-परिग्गहं गिण्हंति मीसयं भणियव्वं जाव समणुजाणंति, एवामेव ते अस्संजता अविरता अप्पडिहतपच्चक्खातपावकम्मा सकिरिया असंवुत्ता एकंतदंडा एकंतबाला बहुं पावं कम्मं कलिकलुसं समज्जिणित्ता इतो चुता दुग्गतिगामिणो भवंति, एहि हारिता आताणाहि। जे खलु आरिया पावेहिं कम्मेहिं विप्पमुक्का ते खलु गब्भवासा हि णो सज्जंति, ते णो सयमेव पाणे अतिवातिन्ति, एवं तथेव विवरीत ॥ ३६ ॥

॥ २२ ॥ ऋषिभाषितेषु

अंमडज्झयणं २५

जाव अकिरिया संवुडा एकंतपण्डितावगतरागदोसा तिगुत्तिगुत्ता तिदंडोवरता णीसल्ला आयरक्खी ववगयचउक्कसाया चउविकहविवज्जिता चमहव्वयतिगुत्ता, पंचिंदियसुवुडा छज्जीवणिकाय सुट्ठु णिरता सत्तभयविप्पमुक्का अट्ठमयट्ठाणजढा णवबंभचेरगुत्ता दससमाहिट्ठाण-पयुत्ता बहुं पावकम्मं कलिकलुसं खवइत्ता इतो चुया सोग्गतिगामिणो भवंति। से णं भगवं ! सुतमग्गाणुसारी खीणकसाया दंतेंदिया सरीरसाधारणट्ठा जोगसंधणता णवकोडीपरिसुद्धं दसदोसविप्पमुक्कं उग्गमुप्पायणासुद्धं इतराइतरेहिं कुलेहिं परकडपरिणिट्ठितं विगतिंगालं विगतधूमं पिंडं सेज्जं उवधिं च गवेसमाणा संगतविणयोवयारसालिणीओ कलमधुररिभितभासिणीओ संगतगतहसितभणितसुंदरथण-जहणपडिरूवाओ इत्थियाओ पासित्ता णो मणसावि पाउब्भावं गच्छंति, से कथमेतं विगतरागता ?, सरागस्सवि त णं अविक्ख हतमोहस्स तत्थ तत्थ इतराइतरेसु कुलेसु परकड जाव रूवाइं पासित्ता णो मणसावि पादुब्भावो भवति, तं कहमिति ? मूलघाते हतो रुक्खो, पुप्फघाते हतं फलं। छिण्णाए मुद्धसूईए,कतो तालस्स रोहणं? ॥ १ ॥ से कथमेतं ?, हत्थिमर रसणं, तेल्लापाउधम्मं किंपागफलणिदरिसणं,

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: (पूर्वकाले आगमरूपेण दर्शित:) "ऋषिभाषित-सूत्राणि"-मूलं

[२५] 'अंबड' अध्ययनं (वर्तते)

प्रत सूत्रांक [२] गाथा ||१-२||

दीप अनुक्रम [२७८-२८१]

से जथा णाम ते साकडिए अक्खं मक्खेज्जा एस मे णो भज्जिस्सदि भारं च मे वहिस्सति, एवामेवोवमाए समणे णिग्गंथे छहिं ठाणेहि आहारं आहारेमाणे वा णो अतिक्कमेति, वेदणा वेयावच्चे० तं चेव, से जथाणामते जतुकारए इंगालेसु अगणिकायं णिसिरेज्जा एस मे अगणिकाए णो विज्झाहिति जतुं च ताविस्सामि, एवामेवोवमाए समणे णिग्गंथे छहिं ठाणेहिं आहारं आहारेमाणे णो अतिक्कमेति वेदणा वेयावच्चे० तं चेव, से ज णामते उसुकारए तुसेहिं अगणिकायं णिसिरेज्जा एस मे अगणिकाए णो विज्झातिस्सति उसुं च तावेस्सामि, एवामेवोवमाए समणे णिग्गंथे० सेसं तं चेव ॥ ॥ एवं से सिद्धे, बुद्धे विरए विपावे० ॥ २ ॥ अंबडज्झयणं ॥ २५ ॥

आगम संबंधी साहित्य	[भाग-2] प्रत्येकबुद्धभाषितानि ऋषिभाषितसूत्राणि .... अध्ययन-[२६], ...मूलं [-] / गाथा [१-९] ....

प्रत सूत्रांक [-] गाथा ||१-९||

दीप अनुक्रम [२८२-२९०]

[२६] 'मायंगिज्झ' अध्ययनं

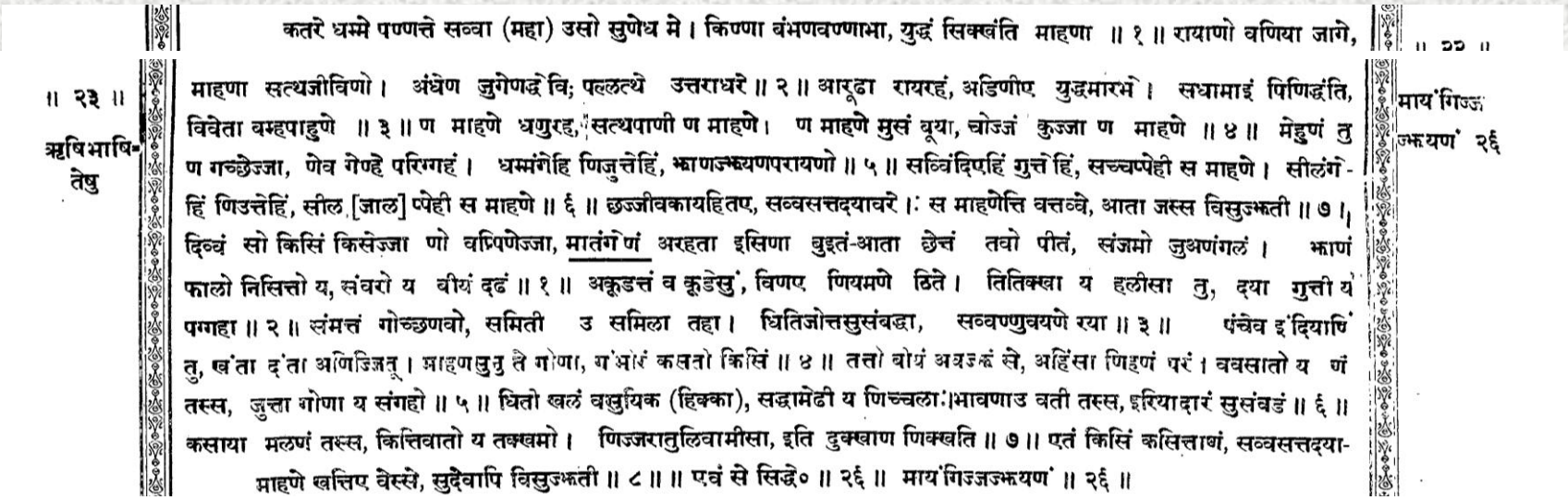

कतरे धम्मे पण्णत्ते सव्वा (महा) उसो सुणेध मे। किण्णा बंभणवण्णाभा, युद्धं सिक्खंति माहणा ॥ १ ॥ रायाणो वणिया जागे, ॥ २२ ॥

॥ २३ ॥ ऋषिभाषितेषु

माहणा सत्थजीविणो। अंधेण जुगेणद्धे वि; पल्लत्थे उत्तराधरे ॥ २ ॥ आरूढा रायरहं, अडिणीए युद्धमारभे। सधामाइं पिणिद्धंति, विवेता बम्हपाहुणे ॥ ३ ॥ ण माहणे धणुरह, सत्थपाणी ण माहणे। ण माहणे मुसं बूया, चोज्जं कुज्जा ण माहणे ॥ ४ ॥ मेहुणं तु ण गच्छेज्जा, णेव गेण्हे परिग्गहं। धम्मंगेहि णिजुत्तेहिं, झाणज्झयणपरायणो ॥ ५ ॥ सव्विंदिएहिं गुत्तेहिं, सच्चप्पेही स माहणे। सीलंगेहिं णिउत्तेहिं, सील [जाल] प्पेही स माहणे ॥ ६ ॥ छज्जीवकायहितए, सव्वसत्तदयावरे। स माहणेत्ति वत्तव्वे, आता जस्स विसुज्झती ॥ ७ ॥ दिव्वं सो किसिं किसेज्जा णो वप्पिणेज्जा, मातंगेणं अरहता इसिणा बुइतं-आता छेत्तं तवो पीतं, संजमो जुअणंगलं। झाणं फालो निसित्तो य, संवरो य बीयं दढं ॥ १ ॥ अकूडत्तं व कूडेसुं, विणए णियमणे ठिते। तितिक्खा य हलीसा तु, दया गुत्ती य पग्गहा ॥ २ ॥ संमत्तं गोच्छणवो, समिती उ समिला तहा। धितिजोत्तसुसंबद्धा, सव्वण्णुवयणे रया ॥ ३ ॥ पंचेव इंदियाणि तु, खंता दंता अणिज्जितू। माहणेसु तु ते गोणा, गंभीरं कसतो किसिं ॥ ४ ॥ तत्तो बीयं अवञ्झं से, अहिंसा णिहणं परं। ववसातो य णं तस्स, जुत्ता गोणा य संगहो ॥ ५ ॥ धितो खलं वसुयिक (हिक्का), सद्धामेढी य णिच्चला। भावणाउ वती तस्स, इरियादारं सुसंवडं ॥ ६ ॥ कसाया मलणं तस्स, कित्तिवातो य तक्खमो। णिज्जरातुलिवामीसा, इति दुक्खाण णिक्खति ॥ ७ ॥ एतं किसिं कसित्ताणं, सव्वसत्तदयामाहणे खत्तिए वेस्से, सुद्देवापि विसुज्झती ॥ ८ ॥ ॥ एवं से सिद्धे० ॥ २६ ॥ मायंगिज्जज्झयणं ॥ २६ ॥

मायंगिज्जज्झयणं २६

प्रत सूत्रांक [-] गाथा ||१-८||

दीप अनुक्रम [२९१-२९८]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: (पूर्वकाले आगमरूपेण दर्शित:) "ऋषिभाषित-सूत्राणि"-मूलं

[२७] 'वारत्तय' अध्ययनं

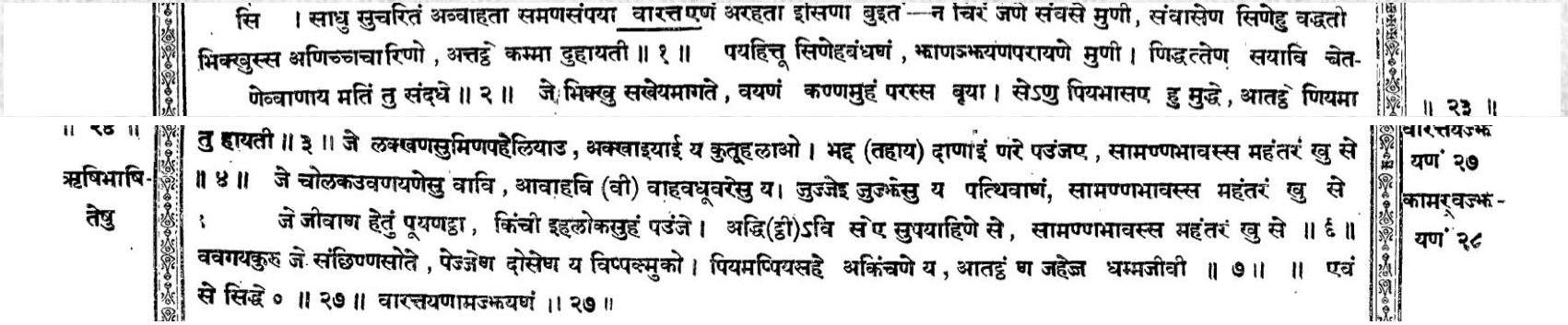

सिं । साधु सुचरितं अव्वाहता समणसंपया वारत्तएणं अरहता इसिणा बुइतं —न चिरं जणे संवसे मुणी, संवासेण सिणेहु वद्धती
भिक्खुस्स अणिच्चाचारिणो , अत्तट्ठे कम्मा दुहायती ॥ १ ॥ पयहित्तू सिणेहबंधणं , झाणज्झयणपरायणे मुणी । णिद्धत्तेण सयावि चेत-
णेव्वाणाय मतिं तु संदधे ॥ २ ॥ जे भिक्खु सखेयमागते , वयणं कण्णसुहं परस्स बूया । सेऽणु पियभासए हु मुद्धे , आतट्ठे णियमा ॥ २३ ॥
॥ २४ ॥ तु हायती ॥ ३ ॥ जे लक्खणसुमिणपहेलियाउ , अक्खाइयाई य कुतूहलाओ । भद्द (तहाय) दाणाइं णरे पउंजए , सामण्णभावस्स महंतरं खु से वारत्तयज्झयणं २७
ऋषिभाषितेषु ॥ ४ ॥ जे चोलकउवणयणेसु वावि , आवाहवि (वी) वाहवधूवरेसु य। जुज्जेइ जुज्झेसु य पत्थिवाणं, सामण्णभावस्स महंतरं खु से
॥ जे जीवाण हेतुं पूयणट्ठा , किंची इहलोकसुहं पउंजे । अद्धि(ड्डी)ऽवि से ए सुपयाहिणे से , सामण्णभावस्स महंतरं खु से ॥ ६ ॥ कामरूवज्झयणं २८
ववगयकुरु जे संछिण्णसोते , पेज्जेण दोसेण य विप्पमुक्को । पियमप्पियसहे अकिंचणे य , आतट्ठं ण जहेज्ज धम्मजीवी ॥ ७ ॥ ॥ एवं
से सिद्धे ० ॥ २७ ॥ वारत्तयणामज्झयणं ॥ २७ ॥

प्रत सूत्रांक [-] गाथा ||१-२५||

दीप अनुक्रम [२९९-३२३]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: (पूर्वकाले आगमरूपेण दर्शित:) "ऋषिभाषित-सूत्राणि"-मूलं

[२८] 'अद्दईज्ज' अध्ययनं

सिद्धि ॥ छिण्णसोते भिसं सव्वे, कामे कुणह सव्वसो। कामा रोगा मणुस्साणं, कामा दुग्गतिवड्ढणा ॥ १ ॥ णासेवेज्ज मुणी गेही, एकन्तमणुपस्सतो। कामे कामेमाणा, अकामा जंति दोग्गतिं ॥ २ ॥ जे लुब्भंति कामेसु, तिविहं हवति तुच्छ से। अज्झोववण्णा कामेसु, बहवे जीवा किलिसंति ॥ ३ ॥ सल्लं कामा विसं कामा, कामा आसीविसोवमा। बहुसाधारणा कामा, कामा संसारवड्ढणा ॥ ४ ॥ पत्थंति भावओ कामे, जे जीवा मोहमोहिया। दुग्गमे भयसंसारे, ते धुवं दुक्खभागिणो ॥ ५ ॥ कामसल्लमणुद्धित्ता जंयवो काममुच्छिया। जरामरण कंतारे, परियत्तंति वक्कमं ॥ ६ ॥ सदेवमाणुसा कामा, मए पत्ता सहस्ससो। न याहं कामभोगेसु, तित्तपुव्वो कयाइवि ॥ ७॥ तत्तिं कामेसु णासज्ज, पत्तपुव्वं अणंतसो। दुक्खं बहुविहाहाकारं, कक्कसं परमासुभं ॥ ८ ॥ कामाण मग्गणं दुक्खं, तित्ती कामेसु दुल्लभा। विज्जुज्जोतो परं दुक्खं, तण्हक्खयपरं सुहं ॥ ९ ॥ कामभोगाभिभूतप्पा, विच्छिण्णावि णराहिवा फीतिं खितिं इमं भोच्चा, दोग्गतिं विवसा गता ॥ १०॥ काममोहितचित्तेणं, विहाराहारकंखिणा। दुग्गमे भयसंसारे, परीतं केसभागिणा ॥ ११ ॥ अप्पत्तावराहोऽयं, जीवाणं भवसागरो। सेओ जरगवाणं वा, अवसाणंमि दुत्तरो ॥ १२ ॥ अप्पक्कतावराहेहिं, जीवा ॥ २४ ॥

॥ २५ ॥ ऋषिभाषितेषु

पावंति वेदणं। अप्पक्कतेहिं सल्लेहिं, सल्लकारीव वेदणं ॥ १३ ॥ जीवो अप्पोवघाताय, पडते मोहमोहितो। बंधमोग्गरमाकोदा(वोदा-लोदा)णच्चंतो बहु वारिओ ॥ १४ ॥ असब्भावं पवत्तेंति, दीणं भासंति वीकवं। कामग्गहाभिभूतप्पा, जीवितं पहयंति तं (य) ॥ १५ ॥ हिंसादाणं पवत्तेंति, कामतो केति माणवा। वित्तं णाणं सविण्णाणं, केयी धेंति हि संखयं ॥ १६ ॥ सदेवोरगगंधव्वं, सतिरिक्खं समाणुसं। कामपंजरसंबद्धं, किस्सते विविहं जगं ॥ १७ ॥ कामग्गहविणिमुक्का, धण्णा धीरा जितिंदिया। वितरंति मेइणिं रम्मं, सुद्धप्पा सुद्धवादिणो ॥ १८ ॥ जे गिद्धे कामभोगेसु, पावाइं कुरुते नरे। से संसरंति संसारं, चाउरंतं महब्भयं ॥ १९ ॥ जहा निस्साविणिं णावं, जातिअंधो दुरूहिता। इच्छंते पारमागंतुं, अंतरे च्चिय सीदति ॥ २० ॥ अद्दएण अरहता इसिणा बुइतं—काले काले य मेहावी, वद्धमाणिज्ज मज्झ० २८

प्रत सूत्रांक [-] गाथा ||१-२५||

दीप अनुक्रम [२९९-३२३]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: (पूर्वकाले आगमरूपेण दर्शित:) "ऋषिभाषित-सूत्राणि"-मूलं

[२८] 'अद्दईज्ज' अध्ययनं (वर्तते)

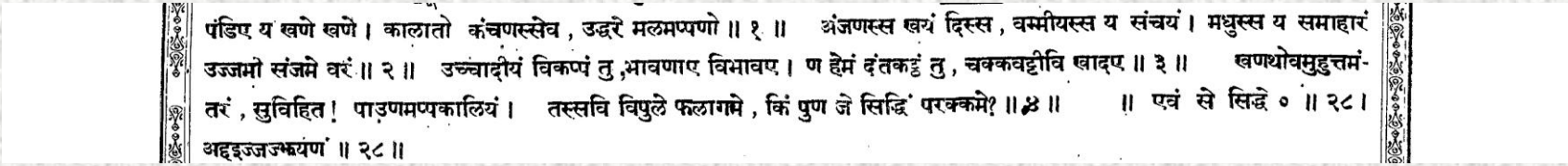

पंडिए य खणे खणे। कालातो कंचणस्सेव, उद्धरे मलमप्पणो ॥ १ ॥ अंजणस्स खयं दिस्स, वम्मीयस्स य संचयं। मधुस्स य समाहारं उज्जमो संजमे वरं ॥ २ ॥ उच्चावदीयं विकप्पं तु, भावणाए विभावए। ण हेमं दंतकट्ठं तु, चक्कवट्टीवि खादए ॥ ३ ॥ खणथोवमुहुत्तमंतरं, सुविहित! पाउणमप्पकालियं। तस्सवि विपुले फलागमे, किं पुण जे सिद्धिं परक्कमे? ॥ ४ ॥ ॥ एवं से सिद्धे ० ॥ २८। अद्दइज्जज्झयणं ॥ २८ ॥

--- x --- x --- x --- x ---

प्रत सूत्रांक [-] गाथा ||१-२०||

दीप अनुक्रम [३२४-३४३]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: (पूर्वकाले आगमरूपेण दर्शित:) "ऋषिभाषित-सूत्राणि"-मूलं

[२९] 'वद्धमाण' अध्ययनं

सिद्धि० । सवंति सव्वतो सोता, किं ण सोतोणिवारणं ? । पुट्ठे मुणी आइक्खे, कहं सोति पिहिज्जति ॥ १ ॥ वद्धमाणेण अरहता इसिणा बुइतं—पंच जागरओ सुत्ता, पंच सुत्तस्स जागरा । पंचहिं रयमादियति, पंचहिं च रयं ठए ॥ २ ॥ सद्दं सोतमुवादाय, मणुण्णं वावि पावगं । मणुण्णंमि ण रज्जेज्जा, ण पदुस्सेज्जा हि पावए ॥ ३ ॥ मणुण्णंमि अरज्जंते, अदुट्ठे इयरम्मि य । असुत्ते अविरोधीणं, एवं सोए पिहिज्जति ॥ ४ ॥ रूवं चक्खुमुवादाय, मणुण्णं० एवं दो सिलोगा ६ । एवं गंधं घाणं०८ रसं जिब्भमुवादाय० १० एवं फासमु ॥ २५ ॥

॥ २६ ॥ वादाय०, १२ ॥ दुद्दंता इंदिया पंच, संसाराय सरीरिणं । ते चेव णियमिया सम्मं, णेव्वाणाय भवंति हि ॥ १३ ॥ दुद्दंतेहिंदिएहऽप्पा, दुप्पहं हीरए बला । दुद्दंतेहिं तुरंगेहिं, सारहीवा महापहे ॥ १४ ॥ इंदिएहिं सुदंतेहिं, ण संचरति गोयरं । विधेयेहिं तुरंगेहिं, सारहिव्वा व संजए ॥ १५ ॥ पुव्वं मणं जिणित्ताणं, वारे विसयगोयरं । विधेयं गयमारूढो, सूरो वा गहितायुधो ॥ १६ ॥ जित्ता मणं कसाए या, जो सम्मं कुरुते तवं । संदिप्पते स सुद्धप्पा, अग्गीवा हविसाऽऽहुते ॥ १७ ॥ सम्मत्तणिरतं धीरं, दंतकोहं जितिंदियं । देवावि तं णमंसंति, मोक्खे चेव परायणं ॥ १८ ॥ सव्वत्थ विरये दंते, सव्वचारीहिं वारिए । सव्वदुक्खप्पहीणे य, सिद्धे भवति णीरये ॥ १९ ॥ एवं से सिद्धे बुद्धे० ॥ २० ॥ इइ वद्धमाणनामज्झयणं एगूणतीसइमं ॥ २९ ॥

ऋषिभाषितेषु

वाउणाभज्झयण° २९ पासिज्जनाम० ३०

प्रत सूत्रांक [-] गाथा ||१-९||

दीप अनुक्रम [३४४-३५२]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: (पूर्वकाले आगमरूपेण दर्शित:) "ऋषिभाषित-सूत्राणि"-मूलं

[३०] 'वायु' अध्ययनं

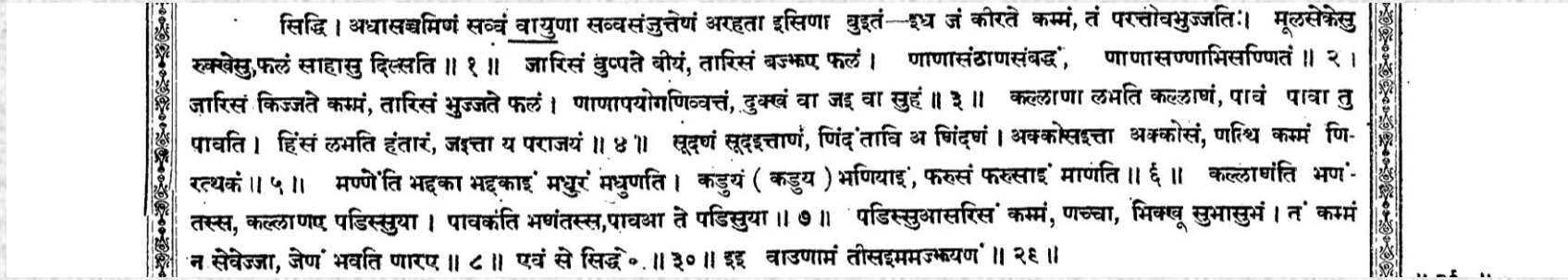

सिद्धि। अधासच्चमिणं सव्वं वायुणा सव्वसंजुत्तेणं अरहता इसिणा बुइतं—इध जं कीरते कम्मं, तं परत्तोवभुज्जति:। मूलसेकेसु रुक्खेसु,फलं साहासु दिस्सति ॥ १ ॥ जारिसं वुप्पते बीयं, तारिसं बज्झए फलं। णाणासंठाणसंबद्धं, णाणासण्णाभिसण्णितं ॥ २। जारिसं किज्जते कम्मं, तारिसं भुज्जते फलं। णाणापयोगणिव्वत्तं, दुक्खं वा जइ वा सुहं ॥ ३ ॥ कल्लाणा लभति कल्लाणं, पावं पावा तु पावति। हिंसं लभति हंतारं, जइत्ता य पराजयं ॥ ४ ॥ सूदणं सूदइत्ताणं, णिंदं तावि अ णिंदणं। अक्कोसइत्ता अक्कोसं, णत्थि कम्मं णिरत्थकं ॥ ५ ॥ मण्णेंति भद्दका भद्दकाइं मधुरं मधुणति। कडुयं (कडुय) भणियाइं, फरुसं फरुसाइं माणंति ॥ ६ ॥ कल्लाणंति भणंतस्स, कल्लाणए पडिस्सुया। पावकंति भणंतस्स,पावआ ते पडिसुया ॥ ७ ॥ पडिस्सुआसरिसं कम्मं, णच्चा, भिक्खू सुभासुभं। तं कम्मं न सेवेज्जा, जेणं भवति णारए ॥ ८ ॥ एवं से सिद्धे०॥ ३० ॥ इइ वाउणामं तीसइममज्झयणं ॥ २९ ॥

प्रत सूत्रांक [१] गाथा ||१||

दीप अनुक्रम [३५३-३५४]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: (पूर्वकाले आगमरूपेण दर्शित:) “ऋषिभाषित-सूत्राणि”-मूलं

[३१] ‘पासिज्ज’ अध्ययनं

केऽयं लोए कइविधे लोए कस्स वा लोए को वा लोयभावे केण वा उड्डेण लोए वुच्चई३ का गती? कस्स वा गती के वा गतिभावे ॥ २६ ॥

॥ २७ ॥ केण वा अट्ठ गती पवुच्चति?, पासेण अरहता इसिणा बुइतं—जीवा चेव अजीवा चेव, चउव्विहे लोए विआधिते—दव्वतो लोए खेत्तओ लोए कालओ लोए भावओ लोए, अत्तभावे लोए, सामित्तं पडुच्च जीवाणं लोए, निव्वत्तिं पडुव्व जीवाणं चेव अजीवाणं चेव, अणादीए अणिहणे पारिणामिए लोकभावे, लोकतीति लोको । जीवाण य पुग्गलाण य गतीति आहिता, जीवाणं पुग्गलाणं चेव गती दव्वतो गती खेत्तओ गती कालओ गती भावओ गती, अणातीए अणिधणे लोकभावे, गंमतीति गती, उद्धगामी जीवा अहग्गामी पोग्गला, कम्मप्पभवा जीवा परिणामप्पभवा पोग्गला, कम्मं पप्प फलविवाका जीवाणं, परिणामं पप्प फलविवाको पोग्गलाणं, णविमा पया कयाई अव्वाबाहसुहमेसिया, कसं कसावइत्ता जीवा दुविहं वेदणं वेदेंति, पाणातीवातवेरमणेणं जाव मिच्छादंसणविरमणेणं, किं तु जीवा सातणं वेयणं वेदेंति जस्सट्ठाए जिहेति विहेति समत्तिच्छिट्ठास्सति अट्ठा समुच्छिट्ठास्सति णिट्ठितकरणिज्जे संतिसंसारभग्गा अमडाइ णियंठे णिरुद्धपवंचे वोच्छिण्णसंसारे वोच्छिण्णसंसारवेदणिज्जे पधीणसंसारे पहीणसंसारवेयणिज्जे णो पुणरवि इच्चत्थं हव्वमागच्छति । एवं से सिद्धे० ॥ ३१ ॥ पासिज्जनामज्झयणं ॥३१॥

ऋषिभाषितेषु

पासिज्जनामध्ययनं ३० (वीओपाढो)

प्रत सूत्रांक [१] गाथा ||१-५||

दीप अनुक्रम [३५५-३६०]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: (पूर्वकाले आगमरूपेण दर्शित:) "ऋषिभाषित-सूत्राणि"-मूलं

[३२] 'पिंग' अध्ययनं

सिद्धि। गतिवागरणगंथाओ पभिति जाव समाणितं इमं अज्झयणं, ताव इमो बीओ पाढो दिस्सति, तं जहा---जीवा चेव गमणपरिणता पोग्गला चेव गमणपरिणता, दुविधा गती---पयोगगती य वीससागती य, जीवाणं चेव पोग्गलाणं चेव, उदइयापारिणामिए गतिभावे, गम्ममाणा इयि गती। उड्ढंगामी जीवा अधगामी पोग्गला, पावकम्मकडाणं जीवाणं परिणामे, पावकम्मकडेणं पुग्गलाणं, ण कयाति पया अदुक्खं पकासीति, अत्तकडा जीवा, किच्चा किच्चा वेदिन्तित०--पाणातिवाएणं जाव परिग्गहेणं, एस खलु असंबुद्धे असंवुडे (अ)कम्मंते, (अ)-चाउज्जामे (अ) णियंठे अट्ठविहं कम्मगंठिं पगरेंति, से य चउहिं ठाणेहिं विवागमागच्छति, तं जहा---णेरइएहिं तिरिक्खजोणिएहिं मणुस्सेहिं देवेहिं, अत्तकडा जीवा णो परकडा, किच्चाकिच्चा वेदिंति, पाणातिपातवेरमणेणं जाव परिग्गहवेरमणेणं, एस खलु संवुडे कम्मंते चाउज्जामो ॥ २७ ॥

॥ २८ ॥ णियंठे अट्ठविहं कम्मगंथिं णो पकरेंति, से य चउहिं ठाणेहिं णो विपाकमागच्छति, तं जहा--णेरइएहिं तिरिक्खजोणिएहिं मणुस्सेहिं देवेहिं, लोए ण कताइ णासी, ण कताइ ण भवति, ण कताइ ण भविस्सति, भुविं च भवति य भविस्सति य धुवे णितिए सासए अक्खए अव्वए अवट्ठिए निच्चे, से जहा णाम ते पंच अत्थिकाया ण कयाति णासी जाव णिच्चा एवामेव लोकेऽवि ण कयाति णासी जाव णिच्चे। ॥ एवं से सिद्धे० ॥

सिद्धि ॥ दिव्वं भो किसिं किसेज्जा णो अप्पिणेज्जा, पिंगेण माहणपरिव्वायएणं अरहता इसिणा बुइतं--कतो छेत्तं कतो बीयं? कतो ते जुगणंगलं? । गोणावि ते ण पस्सामि, अज्जो का णाम ते किसी? ॥ १ ॥ आता छेत्तं तवो बीयं, संजमो जुयणंगलं। अहिंसा समिती जोज्जा, एसा धम्मंतरा किसी ॥ २ ॥ एसा किसी सोभ(सुद्ध)तरा, अलुद्धस्स विवाहिता। एसो बहुसई होइ, परलोकसुहावहा ॥ ३ ॥ एयं किसिं कसित्ताणं, सव्वसत्तदयावहं। माहणे खत्तिए वेस्से, सुद्दे वाऽवि य सिज्झती ॥ ४ ॥ एवं से सिद्धे बुद्धे० ॥ ३२ ॥ पिंगज्झयणं ॥ ३२।

ऋषिभाषितेषु

पिंगज्झ० ३२
अरुणिज्ज न
मज्झ० ३३

प्रत सूत्रांक [-] गाथा ||१-१८||

दीप अनुक्रम [३६१-३७८]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: (पूर्वकाले आगमरूपेण दर्शित:) "ऋषिभाषित-सूत्राणि"-मूलं

[३३] 'अरुणिज्ज' अध्ययनं

सिद्धि॥ दोहिं ठाणेहिं बालं जाणेज्जा, दोहिं ठाणेहिं पंडितं जाणेज्जा, सम्मापओएणं मिच्छायपओतेणं कम्मुणा भासणेण य दुभासियाए भासाए, दुक्कडेण य कम्मुणा । बालमेतं वियाणेज्जा, कज्जाकज्जविणिच्छए ॥ १ ॥ सुभासियाए भासाए, सुकडेण य कम्मुणा । पंडितं तं वियाणेज्जा, धम्माधम्मविणिच्छये ॥ २ ॥ दुभासियाए (भासाए), दुक्कडेण य कम्मुणा । जोगक्खेम वहंतं तु, उसुवाया व सिंचति ॥ ३ ॥ सुभासियाए भासाये, सुकडेण य कम्मुणा । पज्जण्णे कालवासी वा, जसं तु अभिगच्छति ॥ ४ ॥ णेव बालेहिं संसग्गिं , णेव बालेहिं संथवं । धम्माधम्मं च बालेहिं, णेव कुज्जा कदायिवि ॥ ५ ॥ इहेवाकित्ति पावेहिं, पेच्चा गच्छेइ दोगतिं । तम्हा बालेहि संसग्गिं, णेव कुज्जा कदायिवि ॥ ६ ॥ साहूहिं संगमं कुज्जा, साधूहिं चेव संथवं । धम्माधम्मं च साहूहिं साय कुव्विज्ज पंडिए ॥ ७ ॥ इहेव कित्तिं पाउणति, पेच्चा गच्छइ सोगतिं । तम्हा साधूहिं संसग्गिं, सदा कुव्विज्ज ॥ २८ ॥

॥ २६ ॥ ऋषिभाषितेषु

पंडिए ॥ ८ ॥ खइणं पमाणं वत्तं च, देज्जा अच्चाति गोधणं । सद्धम्मचक्कदाणं तु, अक्खयं अमतं वतं॥ ९ ॥ पुन्नं तित्थमुवागम्म, पेच्चा भोज्जाहि जं फलं । सद्धम्मवारिदाणेणं, खिप्पं सुज्झति माणसं ॥ १० ॥ सब्भाववक्कविवसं, सावज्जारंभकारकं । दुमित्तं तं विजाणेज्जा, उभयो लोयविणासणं ॥ ११ ॥ सम्मत्तणीरगंभीरं, सावज्जारंभवज्जकं । तं मित्तं मुहु सेवेज्जा, उभतोलोक-सुहावहं ॥ १२ ॥ संसग्गितो पसूयंति, दोसा वा जइ वा गुणा । वाततो मारुतस्सेव, ते ते गंधा सुहावहा ॥ १३ ॥ संपुण्णवाहिणी-ओवि, आवन्ना लवणोदधिं । पप्पा खिप्पं तु सव्वावि, पावंति लवणत्तणं ॥ १४ ॥ समस्सिता गिरिं मेरुं, णाणावण्णापि पक्खि-णो । सव्वे हेमप्पभा होंति, तस्स सेलस्स सो गुणो ॥ १५ ॥ कल्लाणमित्तसंसग्गिं, संजयो मिहिलाहिवो । फीतं महितलं भोच्चा, तंमूलाकं दिवं गतो ॥ १६ ॥ अरुणेण महासालपुत्तेण अरहता इसिणा बुइतं—सम्मत्तं च अहिंसं च, सम्मं णच्चा जितिंदिए । कल्लाण-मित्तसंसग्गिं, सदा कुविज्ज पंडिते ॥ १७ ॥ एवं सिद्धे० ॥ ३३ ॥ अरुणिज्ज नाममज्झयणं तेत्तीसइमं ३३ ॥

३४

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: (पूर्वकाले आगमरूपेण दर्शित:) "ऋषिभाषित-सूत्राणि"-मूलं

प्रत सूत्रांक [१] गाथा ||१-७||

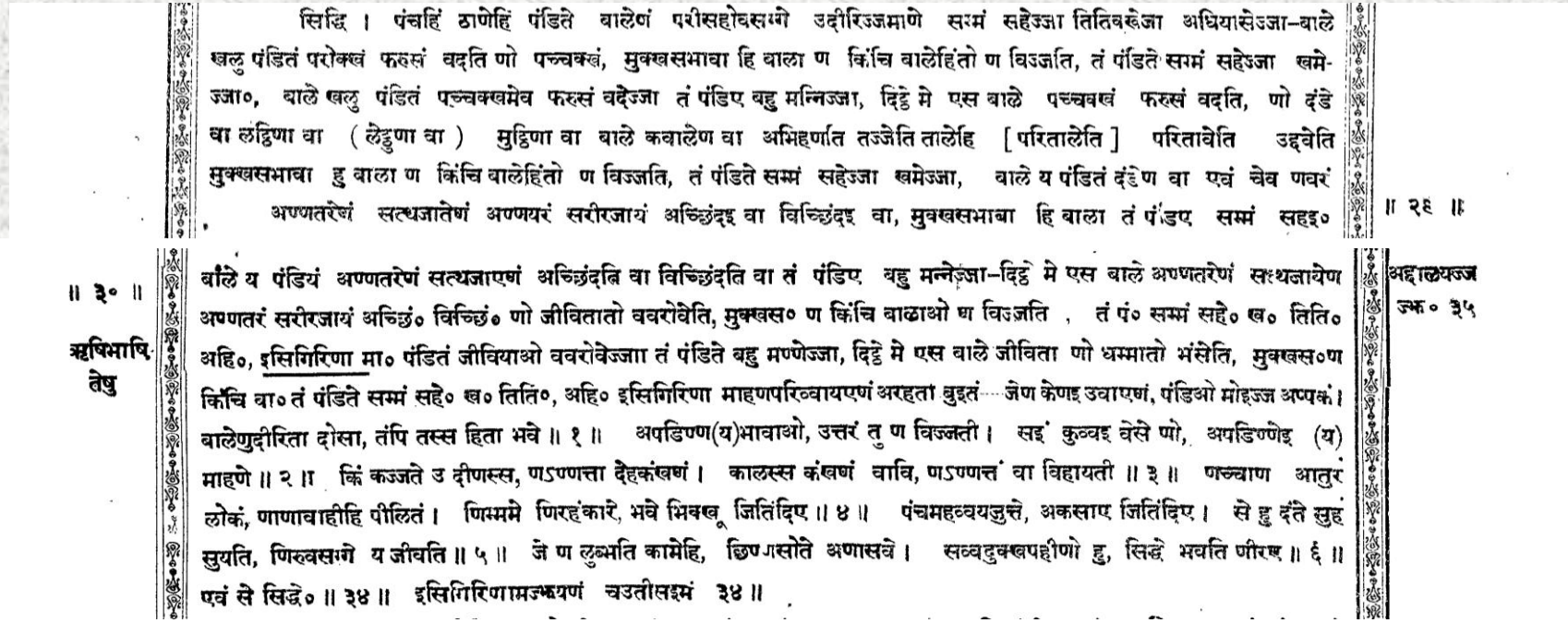

दीप अनुक्रम [३७९-३८६]

[३४] 'इसिगिरि' अध्ययनं

सिद्धि । पंचहिं ठाणेहिं पंडिते बालेणं परीसहोवसग्गे उदीरिज्जमाणे सम्मं सहेज्जा तितिक्खेज्जा अधियासेज्जा–बाले
खलु पंडितं परोक्खं फरुसं वदति णो पच्चक्खं, मुक्खसभावा हि बाला ण किंचि बालेहिंतो ण विज्जति, तं पंडिते सम्मं सहेज्जा खमे-
ज्जा०, बाले खलु पंडितं पच्चक्खमेव फरुसं वदेज्जा तं पंडिए बहु मन्निज्जा, दिट्ठे मे एस बाले पच्चक्खं फरुसं वदति, णो दंडे
वा लट्ठिणा वा (लेट्ठुणा वा) मुट्ठिणा वा बाले कवालेण वा अभिहणति तज्जेति तालेंह [परितालेति] परितावेति उद्दवेति
मुक्खसभावा हु बाला ण किंचि बालेहिंतो ण विज्जति, तं पंडिते सम्मं सहेज्जा खमेज्जा, बाले य पंडितं दंडेण वा एवं चेव णवरं
अण्णतरेणं सत्थजातेणं अण्णयरं सरीरजायं अच्छिंदइ वा विच्छिंदइ वा, मुक्खसभावा हि बाला तं पंडिए सम्मं सहइ० ॥ २९ ॥
॥ ३० ॥ बाले य पंडियं अण्णतरेणं सत्थजाएणं अच्छिंदति वा विच्छिंदति वा तं पंडिए बहु मन्नेज्जा–दिट्ठे मे एस बाले अण्णतरेणं सत्थजायेण अद्दालयज्ज
अण्णतरं सरीरजायं अच्छिं० विच्छिं० णो जीवितातो ववरोवेति, मुक्खस० ण किंचि बाळाओ य विज्जति , तं पं० सम्मं सहे० ख० तिति० ज्झ० ३५
ऋषिभाषितेषु अहि०, इसिगिरिणा मा० पंडितं जीवियाओ ववरोवेज्जा तं पंडिते बहु मण्णेज्जा, दिट्ठे मे एस बाले जीविता णो धम्मातो भंसेति, मुक्खस०ण
किंचि बा० तं पंडिते सम्मं सहे० ख० तिति०, अहि० इसिगिरिणा माहणपरिव्वायएणं अरहता बुइतं– जेण केणइ उवाएणं, पंडिओ मोइज्ज अप्पकं।
बालेणुदीरिता दोसा, तंपि तस्स हिता भवे ॥ १ ॥ अपडिण्ण(य)भावाओ, उत्तरं तु ण विज्जती। सइं कुव्वइ वेसे णो, अपडिण्णेइ (य)
माहणे ॥ २ ॥ किं कज्जते उ दीणस्स, णऽण्णत्ता देहकंखणं। कालस्स कंखणं वावि, णऽण्णत्तं वा विहायती ॥ ३ ॥ णच्चाण आतुरं
लोकं, णाणावाहीहि पीलितं। णिम्ममे णिरहंकारे, भवे भिक्खू जितिंदिए ॥ ४ ॥ पंचमहव्वयजुत्ते, अकसाए जितिंदिए। से हु दंते सुहं
सुयति, णिरुवसग्गे य जीवति ॥ ५ ॥ जे ण लुब्भति कामेहि, छिण्णसोते अणासवे। सव्वदुक्खपहीणो हु, सिद्धे भवति णीरए ॥ ६ ॥
एवं से सिद्धे० ॥ ३४ ॥ इसिगिरिणामज्झयणं चउतीसइमं ३४ ॥

प्रत सूत्रांक [१] गाथा ||१-१९||

दीप अनुक्रम [३८७-४०६]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: (पूर्वकाले आगमरूपेण दर्शित:) “ऋषिभाषित-सूत्राणि”-मूलं

[३५] 'अद्दालईज्ज' अध्ययनं

सिद्धि। चउहिं ठाणेहिं खलु भो जीवा कुप्पंता मज्जंता गूहंता लुब्भंता वज्जं समादियंती, वज्जं समादिइत्ता चाउरंतसंसारकं-
तारे पुणोरअत्ताणं पडिविद्धंसंति, तं कोहेणं माणेणं मायाए लोभेणं, तेसिं च णं अहं पडिघातहेउं अकुप्पंते अमज्जंते अगूहंते अलुब्भंते तिगुत्ते
तिदंडविरते णिस्सल्ले अगारवे चउविकहविवज्जिए पंचसमिते पंचेंदियसुसंवुडे सरीरसाधारणट्ठा जोगसंधणट्ठा णवकोडीपरिसुद्धं दसदोस-
विप्पमुक्कं उग्गमुप्पायणासुद्धं तत्थ तत्थ इतरइतरकुलेहिं परकडपरणिट्ठितं विगतिंगालं विगतधूमं सत्थातीतं सत्थपरिणतं पिंडं सेज्जं उवहिं
च एसे भावेमित्ति. अद्दालएणं अरहता इसिणा बुइतं—अण्णाणविप्पमूढप्पा, पच्चुप्पण्णाभिधारए। कोवं किच्चा महाबाणं, अप्पा विंधइ ॥ ३० ॥

॥ ३१ ॥ ऋषिभाषितेषु

अप्पकं ॥ १ ॥ मण्णेबाणेण विद्धे तु, भवमेक्कं विणिज्जति। कोधबाणे पविट्ठे तु, णिज्जती भवसंतति ॥ २ ॥ अण्णाणविप्पमूढप्प प० अद्दालइज्ज
माणं किच्चा महाबाणं० अ०॥ ३ ॥ मन्ने बाणेण० माणबाणे पवि० ॥ ४ ॥ एवं मायाएवि० ॥ ५-६ ॥ लोभेऽवि ॥ ७-८ ॥ दो नामज्झ०३५
सिलोका। तम्हा तेसिं विणासाय, सम्ममागम्म संमतिं। अप्पं परं च जाणित्ता, चरे विसयगोयरं ॥ ६ ॥ जेसु जायंते कोधाती, कम्मबंधा
महाभया। ते वत्थू सव्वभावेणं, सव्वहा परिवज्जए ॥ ६ ॥ सत्थं सल्लं विसं जंतं, मज्जं वालं दुभासणं। वज्जेंतो तंणिमित्तेणं, दोसेण ण
विलप्पति ॥ ७ ॥ आतं परं च जाणेज्जा, सव्वभावेण सव्वथा। आयट्ठं च परट्ठं च, पियं जाणे तहेवय ॥ ८ ॥ सए गेहे पलित्तंमि,
किं धावसि परातकं। सयं गेहं णिरित्ताणं, ततो गच्छे परातकं ॥ ९ ॥ आतट्ठे जागरो होहि, मा परट्ठाहिधारए। आतट्ठो हावए तस्स, जो
परट्ठाभिधारए ॥ १० ॥ जइ परो पडिसेवेज्ज, पावियं पडिसेवणं। तुज्झ मोणं करेंतस्स, के अट्ठे परिहायति ? ॥ ११ ॥ आतट्ठो
णिज्जरायंतो, परट्ठो कम्मबंधणं। अत्ता समाहिकरणं, अप्पणो य परस्स य ॥ १२ ॥ अण्णातयंमि अट्टालकंमि, किं जग्गिएण
वीरस्स ?। णियगंमि जग्गियव्वं, इमो हु बहुचोरतो गामो ॥ १२ ॥ जग्गाही मा सुवाही माहु ते धम्मचरणे पमत्तस्स। काहिंति बहुं
चोरा; संजमजोगेहिं डाकम्मं ॥ १३ ॥ (०जोगे हिट्ठा० प्र०) पंचेंदियाइं सण्णा दंड सल्लाइं गारवा तिण्णि। बावीसं च परीसहा चोरा

प्रत सूत्रांक [१] गाथा ॥१-१९॥ दीप अनुक्रम [३८७-४०६]	पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: (पूर्वकाले आगमरूपेण दर्शित:) "ऋषिभाषित-सूत्राणि"-मूलं **[३५] 'अद्दालईज्ज' अध्ययनं (वर्तते)**

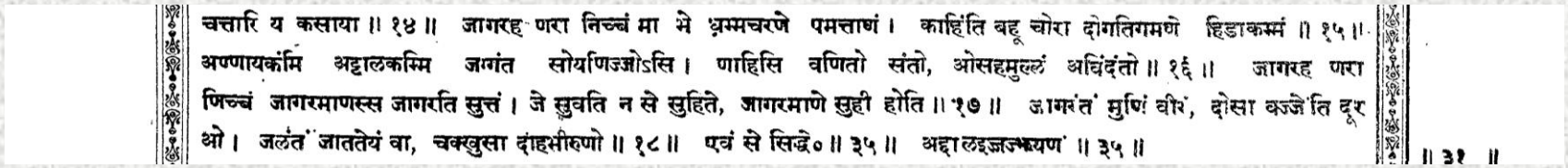

चत्तारि य कसाया ॥ १४ ॥ जागरह णरा निच्चं मा मे धम्मचरणे पमत्ताणं। काहिंति बहू चोरा दोगतिगमणे हिडाकम्मं ॥ १५ ॥ अण्णायकंमि अट्टालकम्मि जग्गंत सोयणिज्जोऽसि। णाहिसि वणितो संतो, ओसहमुल्लं अचिंदंतो ॥ १६ ॥ जागरह णरा णिच्चं जागरमाणस्स जागरति सुत्तं। जे सुवति न से सुहिते, जागरमाणे सुही होति ॥ १७ ॥ जागरंतं मुणिं वीरं, दोसा वज्जेंति दूर ओ। जलंतं जाततेयं वा, चक्खुसा दाहभीरुणो ॥ १८ ॥ एवं से सिद्धे० ॥ ३५ ॥ अद्दालइज्जज्झयणं ॥ ३५ ॥

॥ 31 ॥

----- x ----- x ----- x ----- x -----

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: (पूर्वकाले आगमरूपेण दर्शित:) "ऋषिभाषित-सूत्राणि"-मूलं

[३६] 'तारायणिज्ज' अध्ययनं

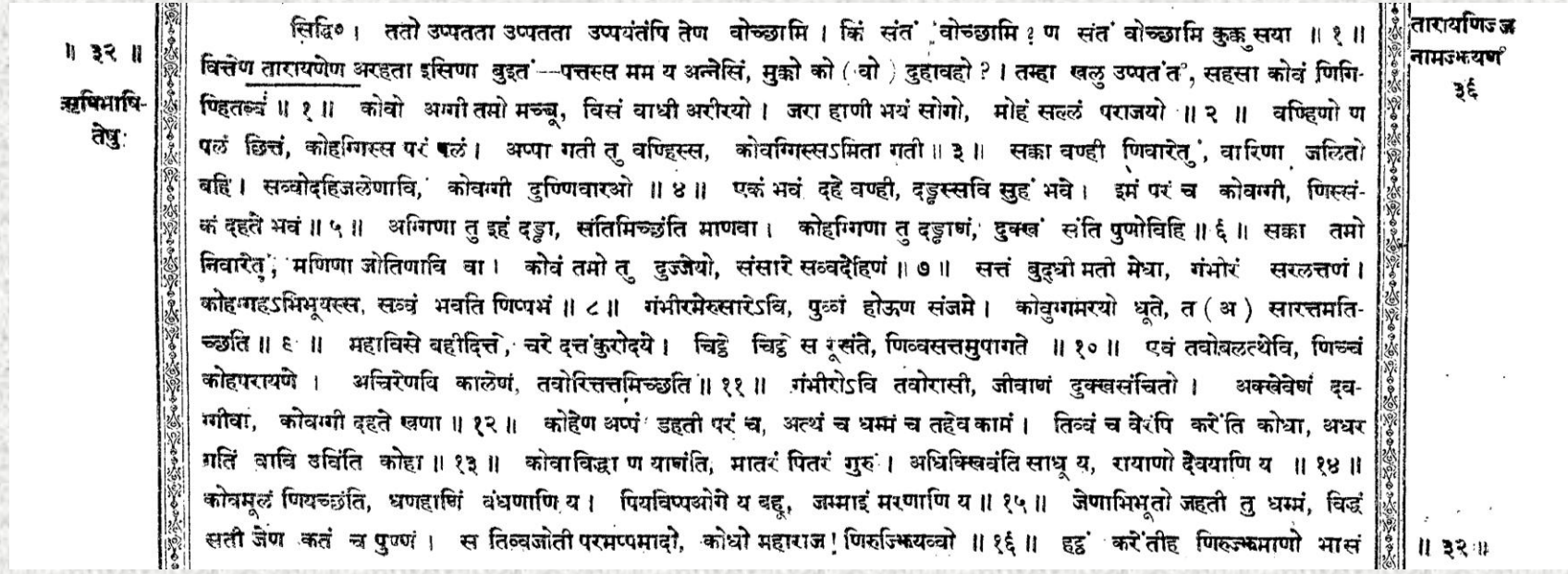

॥ ३२ ॥ ऋषिभाषितेषु

सिद्धि० । ततो उप्पतता उप्पतता उप्पयंतंपि तेण वोच्छामि । किं संतं वोच्छामि ? ण संतं वोच्छामि कुक्कुसया ॥ १ ॥ वित्तेण तारायणेण अरहता इसिणा बुइतं—पत्तस्स मम य अन्नेसिं, मुक्को को (वो) दुहावहो ? । तम्हा खलु उप्पतंतं, सहसा कोवं णिगिण्हितव्वं ॥ १ ॥ कोवो अग्गी तमो मच्चू, विसं वाधी अरीरयो । जरा हाणी भयं सोगो, मोहं सल्लं पराजयो ॥ २ ॥ वण्हिणो ण पलं छित्तं, कोहग्गिस्स परं बलं । अप्पा गती तु वण्हिस्स, कोवग्गिस्सऽमिता गती ॥ ३ ॥ सक्का वण्ही णिवारेतुं, वारिणा जलितो बहिं । सव्वोदहिजलेणावि, कोवग्गी दुण्णिवारओ ॥ ४ ॥ एकं भवं दहे वण्ही, दड्ढस्सवि सुहं भवे । इमं परं च कोवग्गी, णिस्संकं दहते भवं ॥ ५ ॥ अग्गिणा तु इहं दड्ढा, संतिमिच्छंति माणवा । कोहग्गिणा तु दड्ढाणं, दुक्खं संति पुणोविहि ॥ ६ ॥ सक्का तमो निवारेतुं, मणिणा जोतिणावि वा । कोवं तमो तु दुज्जेयो, संसारे सव्वदेहिणं ॥ ७ ॥ सत्तं बुद्धी मतो मेधा, गंभीरं सरलत्तणं । कोहग्गहऽभिभूयस्स, सव्वं भवति णिप्पभं ॥ ८ ॥ गंभीरमेरुसारेऽवि, पुव्वं होऊण संजमे । कोवुग्गमरयो धूते, त (अ) सारत्तमतिच्छति ॥ ९ ॥ महाविसे वहीदित्ते, चरे दत्तंकुरोदये । चिट्ठे चिट्ठे स रूसंते, णिव्वसत्तमुपागते ॥ १० ॥ एवं तवोबलत्थेवि, णिच्चं कोहपरायणे । अचिरेणवि कालेणं, तवोरित्तत्तमिच्छति ॥ ११ ॥ गंभीरोऽवि तवोरासी, जीवाणं दुक्खसंचितो । अक्खेवेणं दवग्गीवा, कोवग्गी दहते खणा ॥ १२ ॥ कोहेण अप्पं डहती परं च, अत्थं च धम्मं च तहेव कामं । तिव्वं च वेरंपि करेंति कोधा, अधरगतिं वावि उविंति कोहा ॥ १३ ॥ कोवा विद्धा ण यांनंति, मातरं पितरं गुरुं । अधिक्खिवंति साधू य, रायाणो देवयाणि य ॥ १४ ॥ कोवमूलं णियच्छंति, धणहाणिं बंधणाणि य । पियविप्पओगे य बहू, जम्माइं मरणाणि य ॥ १५ ॥ जेणाभिभूतो जहती तु धम्मं, विद्धं सती जेण कतं च पुण्णं । स तिव्वजोती परमप्पमादो, कोधो महाराज ! णिरुज्झियव्वो ॥ १६ ॥ हट्ठं करेंतीह णिरुज्झमाणो भासं

तारायणिज्ज नामज्झयणं ३६

॥ ३२ ॥

॥ ३३ ॥ करेंतीह विमुच्चमाणो । हट्ठं च भासं च समिक्ख पण्णे, कोवं णिरुंभेज्ज सदा जितप्प ॥ १७ ॥ एवं से सिद्धे० ॥ ३६ ॥ इति तारायणिज्ज मज्झयणं ॥ ३६ ॥

इसिगिरिणा म० ३७

प्रत सूत्रांक [१] गाथा ||-||

दीप अनुक्रम [४२५]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: (पूर्वकाले आगमरूपेण दर्शित:) “ऋषिभाषित-सूत्राणि”-मूलं

[३७] ‘सिरिगिरिज्ज’ अध्ययनं

ऋषिभाषितेषु

सव्वमिणं पुरा उदगमासीत्ति सिरिगिरिणा माहणपरिव्वायगेणं अरहता इसिणा बुइयं—एत्थ अंडे संतत्ते, एत्थ लोए संवूते, एत्थं सासासे, इयं णे वरुणविहाणा, उभयो कालं उभयो संझं खीरं णवणीयं मधुसमिधासमाहारं खीरं संखं व पंडिता अग्गिहोत्तकुंडं पडिजागरमाणे विहरिस्सामीति, तम्हा एयं सव्वंतिबेमि, णवि माया, ण कदाति णासि न कदाति न भवति न कदाति न भविस्सति य, पडुप्पण्णमिणं सोच्चा सूरसहगतो गच्छे, जत्थेव सूरिये अत्थमेज्जा खेत्तंसि वा णिण्णंसि वा तत्थेव णं पादुप्पभायाए रयणीये जाव तेजसा जलंते, एवं खु मे कप्पति पातीणं वा पडिणं वा दाहिणं वा उदीणं वा पुरतो जुगमेत्तं पेहमाणे अहारीयमेव रीतित्तए, एवं से सिद्धे बुद्धे विरए विपावे दंते दविए अलंताती, णो पुणरवि इच्चत्थं हव्वमागच्छतित्तिबेमि ॥ ३७ ॥

सिरिगिरिज्जनामज्झयणं ॥ ३७ ॥

सातिपुत्तनाम० ३८

प्रत सूत्रांक [-] गाथा ||१-३०||

दीप अनुक्रम [४२६-४५५]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: (पूर्वकाले आगमरूपेण दर्शित:) "ऋषिभाषित-सूत्राणि"-मूलं

[३८] 'साईपुत्तिज्ज' अध्ययनं

सिद्धि ॥ जं सुहेण सुहं लद्धं, अच्चंतसुखमेव तं । जं सुखेण दुहं लद्धं, मा मे तेण समागमो ॥ १ ॥ सातिपुत्तेण बुद्धेण अरहता बुइतं- मणुण्णं भोयणं भोच्चा, मणुण्णं सयणासणं । मणुण्णंसि अगारंसि, झाति भिक्खू समाहिए ॥ २ ॥ अमणुण्णं भोयणं भोच्चा, अमणुण्णं सयणासणं । अमणुण्णंसि गेहंसि, दुक्खं भिक्खू झियायती ॥ ३ ॥ एवं अणेगवण्णागं, तं परिव्वज्ज पंडिते । णण्णत्थ लुब्भई पण्णे एयं बुद्धाण सासणं ॥ ४ ॥ णाणावण्णेसु सद्देसु, सोयपत्तेसु बुद्धिमं । गेहिं वायपदोसं वा, सम्मं वज्जेज्ज पंडिए ॥ ५ ॥ एवं रूवेसु गंधेसु रसेसु फासेसु अप्पए ाभिलावेणं, पंच जागरओ सुत्ता, अप्पदुक्खस्स कारणा । तस्सेव तु विणासाय (पण्णे वट्टिज्ज संतयं ॥ ६ ॥ ॥ ३३ ॥

॥ ३४ ॥ ऋषिभाषितेषु

वाहिक्खया व दुक्खं वा, सुहं वा णाणदेसियं । मोहक्खयाय एमेवा, दुहं वा जइ वा सुहं ॥ ७ ॥ ण दुक्खं ण सुहं वावि, जहा हेतु तिगिच्छति । तिगिच्छिएसु जुत्तस्स, दुक्खं वा जति वा सुहं ॥ ८ ॥ मोहक्खए उजुत्तस्स, दुक्खं वा जइ वा सुहं । मोहक्खए जहा हेऊ, न दुक्खं नवि वा सुहं ॥ ९ ॥ तुच्छे जणंमि संवेगो, निव्वेगो उत्तमे जणे । अत्थित्तादीण भावाणं, विसेसो उवसेसणं ॥ १० ॥ सामण्णे गीतणीमाणा, विसेसे मम्मवेविणी । सव्वण्णुभासिया वाणी, णाणावत्थोदयंतरे ॥ ११ ॥ सव्वसत्तदयो वेसो, णारंभो ण परिग्गहे । सत्तं तवं दयं चेव,, भासंति जिणसत्तमा ॥ १२ ॥ दंतेंदियस्स वीरस्स, किं रण्णेणऽस्समेण वा ? । जत्थ जत्थेव मोहंते, तं रण्णं सो य अस्समो ॥:१३ ॥ किमदंतस्स रण्णेणं ?, दंतस्स व किमस्समे? । णातिक्कंतस्स भेसज्जं, ण वा सत्थस्स भेज्जती ॥ १४ ॥ सुभावभावितप्पाणो, सुण्णं रण्णं धणंपिवा । सव्वमेतं हि झाणाय, सल्लचित्तेव सल्लिणो ॥ १५:॥ दुहस्था दुत्तस्स, णाणावत्था वसुंधरा । कम्मादाणाय सव्वंपि, कामाचित्ते व कामिणो ॥ १६ ॥ संमत्तं च दयं चेव, णिण्णिदाणो य जो दमो । ततो जोगो य सव्वोवि, सव्वकम्मक्खयंकरो ॥ १७ ॥ सात्थकं वावि आरंभं, जाणेज्जा य णिरत्थकं । पडिहत्थिस्स जो एतो, तडं घातिति वारणो ॥ १८ ॥ जस्स कज्जस्स जो जोगो, साहेतुं जेण पच्चलो । कज्जा वज्जेति तं सव्वं, कामीवा णगमुंडणं ॥ १९ ॥ जाणेज्जा सरणं धीरो, ण कोहिं देति दुग्गतो । ण सीहं

सातिपुत्तज्झ य० ३८

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: (पूर्वकाले आगमरूपेण दर्शित:) "ऋषिभाषित-सूत्राणि"-मूलं

प्रत सूत्रांक [-] गाथा ||१-३०||

दीप अनुक्रम [४२६-४५५]

[३८] 'साईपुत्तिज्ज' अध्ययनं (वर्तते)

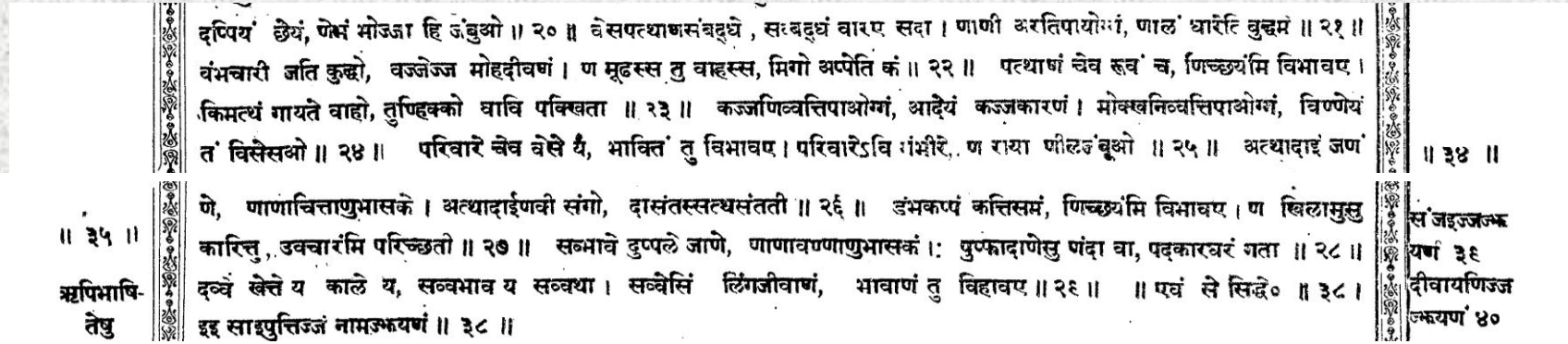

दप्पिय छेयं, णेभं मोज्जा हि जंबुओ ॥ २० ॥ वेसपत्थाणसंबद्धे, सःबद्धं वारए सदा। णाणी अरतिपायोग्गं, णालं धारेंति बुद्धमं ॥ २१ ॥
वंभचारी जति कुद्धो, वज्जेज्ज मोहदीवणं। ण मूढस्स तु वाहस्स, मिगो अप्पेति कं ॥ २२ ॥ पत्थाणं चेव रूवं च, णिच्छयंमि विभावए।
किमत्थं गायते वाहो, तुण्हिक्को वावि पक्खिता ॥ २३ ॥ कज्जणिव्वत्तिपाओग्गं, आदेयं कज्जकारणं। मोक्खनिव्वत्तिपाओग्गं, विण्णेयं
तं विसेसओ ॥ २४ ॥ परिवारे चेव वेसे यं, भावित्तं तु विभावए। परिवारेऽवि गंभीरे, ण राया णीलजंबूओ ॥ २५ ॥ अत्थादाइं जणं ॥ ३४ ॥
॥ ३५ ॥ णे, णाणाचित्ताणुभासके। अत्थादाईणवी संगो, दासंतस्सत्थसंतती ॥ २६ ॥ डंभकप्पं कत्तिसमं, णिच्छयंमि विभावए। ण खिलामुसु सं जइज्जज्झ-
कारित्तु, उवचारंमि परिच्छती ॥ २७ ॥ सब्भावे दुप्पले जाणे, णाणावण्णाणुभासकं।: पुप्फादाणेसु णंदा वा, पदकारवरं गता ॥ २८ ॥ यणं ३९
ऋषिभाषितेषु दव्वं खेत्ते य काले य, सव्वभाव य सव्वथा। सव्वेसिं लिंगजीवाणं, भावाणं तु विहावए ॥ २९ ॥ ॥ एवं से सिद्धे० ॥ ३८ ॥ दीवायणिज्ज-
इइ साइपुत्तिज्जं नामज्झयणं ॥ ३८ ॥ ज्झयणं ४०

प्रत सूत्रांक [१] गाथा ||१-५||

दीप अनुक्रम [४५६-४६१]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: (पूर्वकाले आगमरूपेण दर्शित:) "ऋषिभाषित-सूत्राणि"-मूलं

[३९] 'संजइज्ज' अध्ययनं

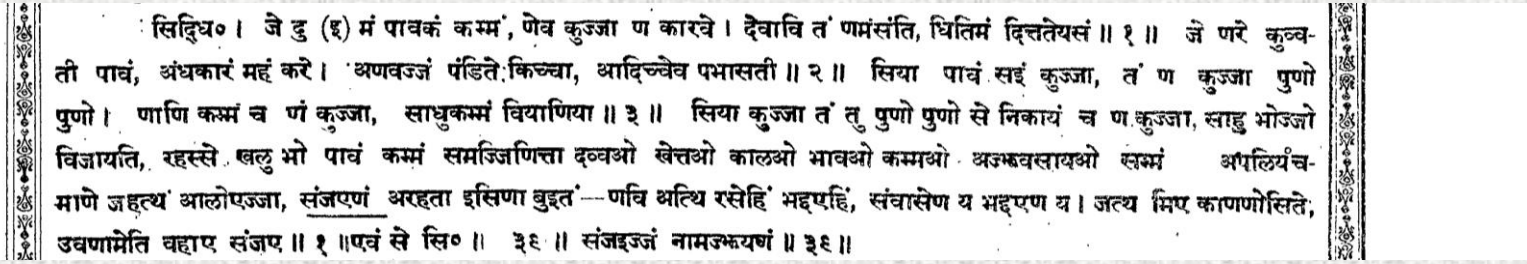

सिद्धि०। जे दु (इ) मं पावकं कम्मं, णेव कुज्जा ण कारवे। देवावि तं णमंसंति, धितिमं दित्ततेयसं॥ १॥ जे णरे कुव्वती पावं, अंधकारं महं करे। अणवज्जं पंडिते किच्चा, आदिच्चेव पभासती॥ २॥ सिया पावं सइं कुज्जा, तं ण कुज्जा पुणो पुणो। णाणि कम्मं च णं कुज्जा, साधुकम्मं वियाणिया॥ ३॥ सिया कुज्जा तं तु पुणो पुणो से निकायं च ण कुज्जा, साहु भोज्जो विजायति, रहस्से खलु भो पावं कम्मं समज्जिणित्ता दव्वओ खेत्तओ कालओ भावओ कम्मओ अज्झवसायओ सव्वं अपलियंचमाणे जहत्थं आलोएज्जा, संजएणं अरहता इसिणा बुइतं—णवि अत्थि रसेहिं भद्दएहिं, संवासेण य भद्दएण य। जत्थ मिए काणणोसिते, उवणमेति वहाए संजए॥ १॥एवं से सि०॥ ३९॥ संजइज्जं नामज्झयणं॥ ३९॥

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: (पूर्वकाले आगमरूपेण दर्शित:) "ऋषिभाषित-सूत्राणि"-मूलं

प्रत सूत्रांक [१] गाथा ||१-६||

[४०] 'दीवायणिज्ज' अध्ययनं

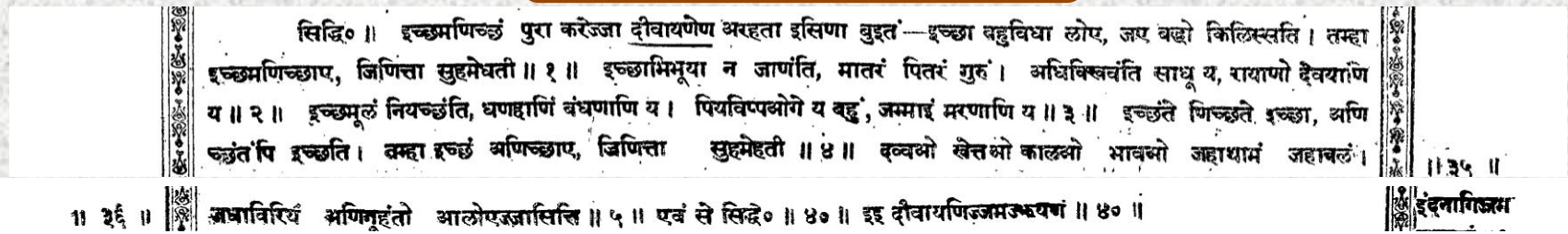

सिद्धि० ॥ इच्छमणिच्छं पुरा करेज्जा दीवायणेण अरहता इसिणा बुइतं—इच्छा बहुविधा लोए, जए बद्धो किलिस्सति । तम्हा इच्छमणिच्छाए, जिणित्ता सुहमेधती ॥ १ ॥ इच्छाभिभूया न जाणंति, मातरं पितरं गुरुं । अधिक्खिवंति साधू य, रायाणो देवयाणि य ॥ २ ॥ इच्छमूलं नियच्छंति, धणहाणिं बंधणाणि य । पियविप्पओगे य बहुं, जम्माइं मरणाणि य ॥ ३ ॥ इच्छंते णिच्छते इच्छा, अणिच्छंतं पि इच्छति । तम्हा इच्छं अणिच्छाए, जिणित्ता सुहमेहती ॥ ४ ॥ दव्वओ खेत्तओ कालओ भावओ जहाथामं जहाबलं । ॥ ३५ ॥

॥ ३६ ॥ अधाविरियं अणिगूहंतो आलोएज्जासित्ति ॥ ५ ॥ एवं से सिद्धे० ॥ ४० ॥ इइ दीवायणिज्जमज्झयणं ॥ ४० ॥ इंदनागिज्जम

दीप अनुक्रम [४६२-४६८]

प्रत सूत्रांक [-] गाथा ||१-१६||

दीप अनुक्रम [४६९-४८४]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: (पूर्वकाले आगमरूपेण दर्शित:) "ऋषिभाषित-सूत्राणि"-मूलं

[४१] 'इंदनागिज्ज' अध्ययनं

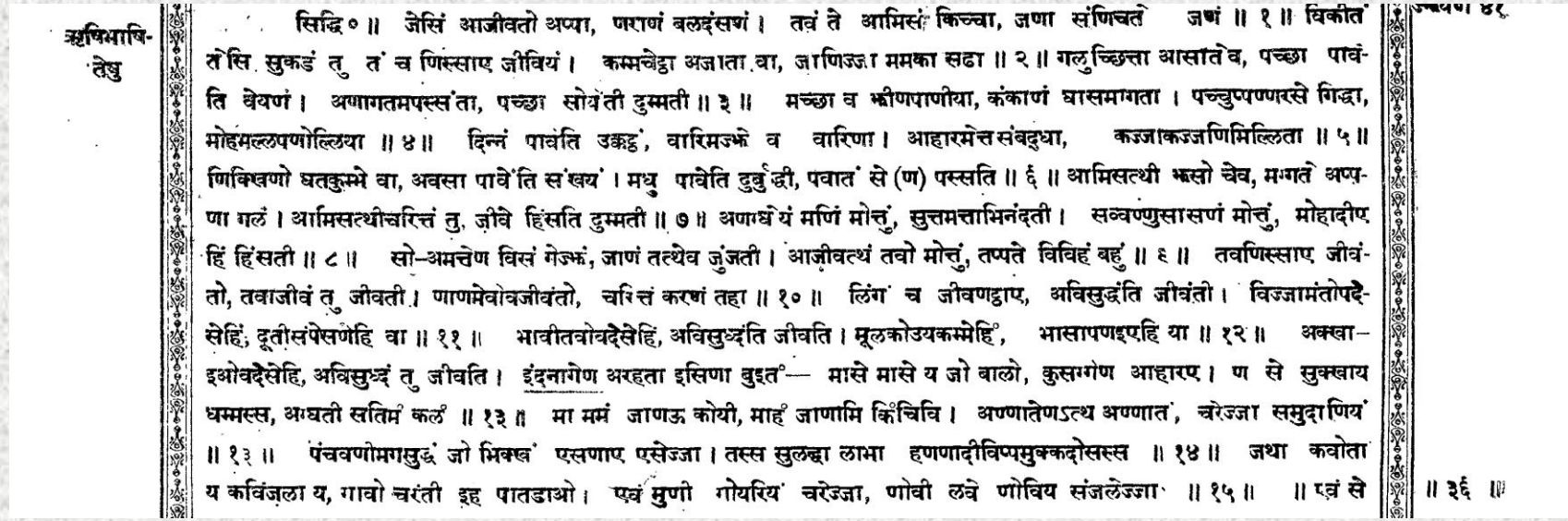

ऋषिभाषितेषु

सिद्धि० ॥ जेसिं आजीवतो अप्पा, पराणं बलदंसणं। तवं ते आमिसं किच्चा, जणा संणिचते जणं ॥ १ ॥ विकीतं तेसिं सुकडं तु तं च णिस्साए जीवियं। कम्मचेट्ठा अजाता वा, जाणिज्जा ममका सढा ॥ २ ॥ गलुच्छिल्ला आसाते व, पच्छा पावंति वेयणं। अणागतमपस्संता, पच्छा सोयंती दुम्मती ॥ ३ ॥ मच्छा व झीणपाणीया, कंकाणं घासमागता। पच्चुप्पण्णरसे गिद्धा, मोहमल्लपणोल्लिया ॥ ४ ॥ दिन्नं पावंति उक्कट्ठं, वारिमज्झे व वारिणा। आहारमेत्तसंबद्धा, कज्जाकज्जणिमिल्लिता ॥ ५ ॥ णिक्खिणो घतकुम्भे वा, अवसा पावेंति संखयं। मधु पावेति दुर्बुद्धी, पवातं से (ण) पस्सति ॥ ६ ॥ आमिसत्थी झसो चेव, मग्गते अप्पणा गलं। आमिसत्थीचरित्तं तु, जीवे हिंसति दुम्मती ॥ ७ ॥ अणग्घेयं मणिं मोत्तुं, सुत्तमत्ताभिनंदती। सव्वण्णुसासणं मोत्तुं, मोहादीए हिं हिंसती ॥ ८ ॥ सो-अमत्तेण विसं गेज्झं, जाणं तत्थेव जुंजती। आजीवत्थं तवो मोत्तुं, तप्पते विविहं बहुं ॥ ९ ॥ तवणिस्साए जीवंतो, तवाजीवं तु जीवती। णाणमेवोवजीवंतो, चरित्तं करणं तहा ॥ १० ॥ लिंगं च जीवणट्ठाए, अविसुद्धंति जीवंती। विज्जामंतोपदेसेहिं, दूतीसंपेसणेहि वा ॥ ११ ॥ भावीतवोवदेसेहिं, अविसुद्धंति जीवति। मूलकोउयकम्मेहिं, भासापणइएहि या ॥ १२ ॥ अक्खाइओवदेसेहि, अविसुद्धं तु जीवति। इंदनागेण अरहता इसिणा बुइतं— मासे मासे य जो बालो, कुसग्गेण आहारए। ण से सुक्खाय धम्मस्स, अग्घती सतिमं कलं ॥ १३ ॥ मा ममं जाणऊ कोयी, माहं जाणामि किंचिवि। अण्णातेणऽत्थ अण्णात, चरेज्जा समुदाणियं ॥ १३ ॥ पंचवणोमगसुद्धं जो भिक्खं एसणाए एसेज्जा। तस्स सुलद्धा लाभा हणणादीविप्पमुक्कदोसस्स ॥ १४ ॥ जथा कवोता य कविंजला य, गावो चरंती इह पातडाओ। एवं मुणी गोयरियं चरेज्जा, णोवी लवे णोविय संजलेज्जा ॥ १५ ॥ ॥ एवं से ॥ ३६ ॥

सिद्धे० ॥ ४१ ॥ इइ इंदनागिज्जज्झयणं ॥ ४१ ॥

प्रत सूत्रांक [१] गाथा ॥१॥

दीप अनुक्रम [४८५-४८६]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: (पूर्वकाले आगमरूपेण दर्शित:) "ऋषिभाषित-सूत्राणि"-मूलं

[४२] 'सोमिज्ज' अध्ययनं

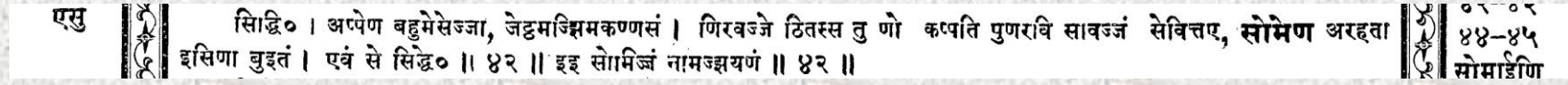

एसु सिद्धि०। अप्पेण बहुमेसेज्जा, जेट्ठमज्झिमकण्णसं। णिरवज्जे ठितस्स तु णो कप्पति पुणरवि सावज्जं सेवित्तए, **सोमेण** अरहता इसिणा बुइतं। एवं से सिद्धि०॥ ४२ ॥ इइ सोमिज्जं नामज्झयणं ॥ ४२ ॥ ४४–४५ सोमाईणि

प्रत सूत्रांक [-] गाथा ||१-२||

दीप अनुक्रम [४८७-४८८]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: (पूर्वकाले आगमरूपेण दर्शित:) "ऋषिभाषित-सूत्राणि"-मूलं

[४३] 'जम' अध्ययनं

॥ ३७ ॥ सिद्धि । लाभंमि जे ण सुमणो,अलाभे णेव दुम्मणो । से हु सेट्ठे मणुस्साणं, देवाणं व सयक्कऊ ॥ १ ॥ **जमेण** अरहता इसिणा बुइतं । एवं से सिद्धे० ॥४३ ॥ इइ जमनामज्झयणं ॥ ४३ ॥ अज्झय-णाणि.

प्रत सूत्रांक [-] गाथा ||१-२||

दीप अनुक्रम [४८९-४९०]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: (पूर्वकाले आगमरूपेण दर्शित:) "ऋषिभाषित-सूत्राणि"-मूलं

[४४] 'वरुण' अध्ययनं

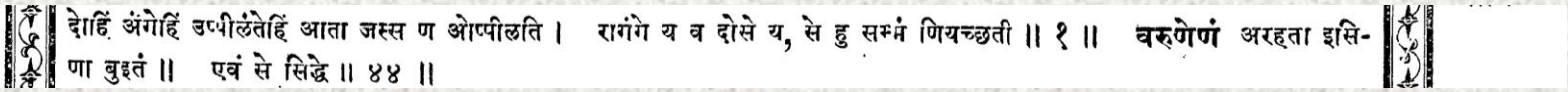

देहिं अंगेहिं उप्पीलंतेहिं आता जस्स ण ओप्पीलति। रागंगे य व दोसे य, से हु सम्मं णियच्छती ॥ १ ॥ **वरुणेणं** अरहता इसिणा बुइतं ॥ एवं से सिद्धे ॥ ४४ ॥

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: (पूर्वकाले आगमरूपेण दर्शित:) "ऋषिभाषित-सूत्राणि"-मूलं

[४५] 'वेसमणिज्ज' अध्ययनं

सिद्धि० । अप्पं च आउं इह माणवाणं, सुचिरं च कालं णरएसु वासो । सव्वे य कामा णिरयाण मूलं, को णाम कामेसु बुहो रमेज्जा ? ॥ १ ॥ पावं ण कुज्जा ण हणेज्ज पाणे, अतीरमाणो व रमे कदायी । उच्चावएहिं सयणासणेहिं, वायुव्व जालं समतिक्कमेज्जा ॥ २ ॥ **वेसमणेणं** अरहता इसिणा बुइतं—जे पुमं कुरुते पावं, ण तस्सऽप्पा धुवं पिओ । अप्पणा हि कडं कम्मं, अप्पणा चेव भुज्जती ॥ ३ ॥ पावं परस्स कुव्वंतो, हसते मोहमोहितो । मच्छो गलं गसंतो वा, विणिरायं ण पस्सति ॥ ४ ॥ पच्चुप्पण्णरसे गिद्धो, मोहमल्लप्पणोल्लितो । दित्तं पावति उक्कंठं, वारिमज्झे व वारणो ॥५॥ परोवघाततल्लिच्छो, दप्पमोहबलुद्धरो । सीहो ज(न)रो दुपाणे वा, गुणदोसं ण विंदती ॥६॥सवसो पावं पुरा किच्चा, दुक्खं वेदेति दुम्मती । आसत्तकंठपासो वा, मुक्कधारो दुहट्टिओ॥७॥ पावं जे उ पकुव्वंति, जीवा सोताणुगामिणो । वड्ढंते पावकं तेसिं, अणग्गाहिस्स वा अणं ॥ ८ ॥ अणुबद्धमपस्संता, पच्चुप्पण्णगवेसका । ते पच्छा दुक्खमच्छंति, गलुच्छित्ता जधा

॥ ३७ ॥

इसिभासि-एसु ॥ ३८ ॥

झसा ॥ ९ ॥ आता कडाण कम्माणं, आता भुंजति जं फलं । तम्हा आयस्स अट्ठाए, मोघमादाय वज्जए ॥ ११ ॥ जे हुंता जं विवज्जेति, जं विसंवाण (जेहिं सद्धिं च) भुंजति । जण्णं गेहति वाचालं, णूणमत्थि ततो भयं ॥१२॥ धावंतं सरिसं तारं, सच्छं दाढिं (च) सिंगिणं । दोसभीरू विवज्जेंती, पावमेवं विवज्जए ॥ १३ ॥ पावकम्मोदयं पप्प, दुक्खतो दुक्खभायणं । दोसा दोसोदई चेव, पावे कुज्जा पसूयति ॥ १४ ॥ उव्विवारा जलोहंता, तेतणीए मतोट्टिता । जीवितं वावि जीवाणं, जीवंति फलमंदिरं ॥ १५ ॥ देज्जा हि जो मरंतस्स, सागरंतं वसुंधरं । जीवियं वावि जो देज्जा, जीवितं तु स इच्छती ॥ १६ ॥ पुत्तं दारं धणं रज्जं, विज्जा सिप्पं कला गुणा । जीविते सति जीवाणं, जीविताय रती अयं ॥ १७ ॥ आहारादिं तु जीवाणं, लोए जीवाण दिज्जती । पाणसंधारणट्ठाय, दुक्खाणिग्गहणा जहा ॥ १८ ॥ सत्थेण वण्हिणा वावि, खते दड्ढे व वेदणा । सए देहे जहा होति, एवं सव्वेसि देहिणं ॥१९॥ पाणी य पाणिघातं च, पाणिणं च पिया दया । सव्वमेतं विजाणित्ता, पाणिघातं विवज्जए ॥ २० ॥ अहिंसा सव्वसत्ताणं, सदाऽणिव्वेयकारिका । अहिंसा सव्वसत्तेसु, परं बंभमाणिंदियं ॥२१॥ देविंदा दाणविंदा य, णरिंदा जेवि विस्सुता । सव्वसत्तदयोवेतं, मुणिस्सं पणमंति ते ॥२२॥ तम्हा पाणदयट्ठाए, वेल्लपत्तधरो जधा ।

४२--४३ ४४–४५ सोमाईणि अज्झय-णाणि.

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: (पूर्वकाले आगमरूपेण दर्शित:) "ऋषिभाषित-सूत्राणि"-मूलं

[४५] 'वेसमणिज्ज' अध्ययनं (वर्तते)

एगग्गो (ग्गय) मणीभूतो, दयत्थी विरहे (हरे) मुणी ॥ २३ ॥ आणं जिणिंदभणितं, सव्वसत्ताणुगामिणिं । समचित्ताऽभिणंदिता, मुच्चंती सव्वबंधणा ॥ २४ ॥ वीतमोहस्स दंतस्स, धी (इ)मंतस्स भासितं । जे णरा णाभिणंदंति, ते धुवं दुक्खभायिणो ॥ २५ ॥ जेऽभिणंदंति भावेण, जिणाणं तेसि सव्वथा । कल्लाणाइ सुहाइं च, रिद्धिओ य ण दुल्लहा ॥ २६ ॥ मणं जथा रम्ममणं, णाणाभावगुणोदयं । फुल्लं व पउमिणीसंडं, सुतित्थं गाहवाज्जितं ॥ २७ ॥ रम्मं मंतं जिणिंदाणं, णाणाभावगुणोदयं । कस्सेयं ण प्पियं होज्जा ?, इच्छियं व रसायणं॥ २६॥ तण्हातो य सरं रम्मं, वाहितो वारुणाघरं । छुहितो व जहाऽऽहारं, रणे मूढो व बंदियं ॥२९॥ ॥ ३८ ॥

इसिभासिएसु ॥ ३९ ॥

वण्हिं सीताहतो वावि, णिवायं वाऽणिलाहतो । तातारं वा भउव्विग्गो, अणत्तो व धणागमं ॥ ३० ॥ गंभीरं सव्वतोभद्दं, हेतुभंगणयुज्जलं । सरणं पयतो मण्णे, जिणिंदवयणं तहा ॥ ३१ ॥ सारदं वा जलं सुद्धं, पुण्णं वा ससिमंडलं । जव्वमाणिं अघट्टं वा, थिरं वा मेतिणीतलं ॥ ३२ ॥ सभावियगुणोवेतं, भावते जिणसासणं । ससितारापडिच्छण्णं, सारदं वा णभंगणं ॥ ३३ ॥ सव्वण्णुसासणं पप्प, विण्णाणं पविरुंभते । हिमवंतं गिरिं पप्पा, तरूणं चारुचामगं ॥ ३४ ॥ सत्तं बुद्धी मती मेधा, गंभीरत्तं च वड्ढती । ओसधं वा सुइं कंतं, जुज्जए बलवीरियं ॥ ३५ ॥ पयंडस्स णरिंदस्स, कंतारे देसियस्स य । आरोग्गकारणो चेव, आणाकोहो दुहावहो ॥ ३६ ॥ सासणं जं णरिंदा उ, कंतारे जे य देसगा । रोगो घातो य वेज्जातो, सव्वमेतं हिए हियं ॥ ३७ ॥ आणाकोवो जिणिंदस्स, सउण्णस्स जुतीमतो । संसारे दुक्खसंगाहे, दुत्तारो सव्वदोहिणं ॥ ३८ ॥ तेलोक्कसारगुरुअं, धीमतो भासितं इमं । संमं काएण फासेत्ता, पुणो न विरमे ततो ॥ ३९ ॥ बद्धचिंधो जथा जोधो, वम्मारूढो थिरायुधो । सीहणायं विमुंचित्ता, [वि] पलायंतो ण सोभती ॥४०॥ अगंधणे कुले जातो, जधा णागो महाविसो । मुंचित्ता सविसं भूतो, पियंतो जाति लाघवं ॥ ४१ ॥ जधा रुप्पिकुलुब्भूतो, रमणिज्जंपि भोयणं । वंतं पुणो स भुंजंतो, धिद्धिकारस्स भायणं ॥ ४२ ॥ एव य जिणिंदआणाए, सल्लुद्धरणमेव य । णिग्गमो य पलित्ताओ, सुहिओ सुहमेव तं ॥ ४३ ॥ इंदासणी ण तं कुज्जा, दित्तो वण्ही अणं सरी । आसादिज्जंतसंबद्धो, जं कुज्जा रिद्धिगारवो ॥ ४४ ॥ विसगाइं सरछूढं, विसं वामणुजोजितं । सामिसं वा

अज्झयणाणं तयत्थाणं च संग्रहणी

प्रत सूत्रांक [-] गाथा ||१-५५||

दीप अनुक्रम [४९१-५४५]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: (पूर्वकाले आगमरूपेण दर्शित:) "ऋषिभाषित-सूत्राणि"-मूलं

[४५] 'वेसमणिज्ज' अध्ययनं (वर्तते)

णदीसोयं, साताकम्मं दुहंकरं ॥ ४५ ॥ कोसीकितेव्वडसी तिक्खो, भावच्छण्णो व पावओ । लिंगवेसपलिच्छण्णो, अजियप्पा तहा पुमं ॥ ४६ ॥ कामा मुसामुही तिक्खा, साता कम्माणुसारिणी । तण्हं सातं च सिग्घं च, तण्हा छिंदति देहिणं ॥ ४७ ॥ सदेवोरगगंधव्वं, सतिरिक्खं समाणुसं । चत्तं तेहिं जगं किच्छं, तण्हाए सणिबंधणं ॥ ४८ ॥ अक्खोवंगो वणे लेवो, तावणं जं जउस्स य । णामणं उसुणो ॥ ३९ ॥

इसिभासिएसु ॥ ४० ॥

जं च, जुत्तिं तो कज्जकारणं ॥ ४९ ॥ आहारादी पडीकारो, सव्वण्णुवयणा हितो । अप्पा हु तिव्ववण्हिस्स, संजमट्ठाए संजमो ॥ ५० ॥ हेमं वा आयसं वावि, बंधणं दुक्खकारणा । महग्घस्सावि दंडस्स, णिवाए दुक्खसंपदा ॥ ५१ ॥ आसज्जमाणे दिव्वंमि, धीमंता कज्जकारणं । कत्तारे अभिचारित्ता, विणियं देहधारणं ॥ ५२ ॥ सागरे णावणिज्जोको, आतुरो वा तुरंगमे । भोयणं भिज्जएहिं वा, जाणेज्जा देहरक्खणं ॥ ५३ ॥ जातं जातं तु वीरियं, सम्मं युज्जेज्ज संयमे । पुप्फादीहि पुप्फाणं, रक्खंतो आदिकारणं ॥ ५४ ॥ एवं से सिद्धे बुद्धे विरते विपावे दंते दविए अलं तायी णो पुणरवि इच्चत्थं हव्वमागच्छतित्तिबेमि ॥ ५५ ॥ वेसमणिज्जं नाम अज्झयणं ॥ ५६ ॥

अज्झयणाणं तयत्थाणं च संग्रहणी

----- x ----- x ----- x ----- x -----

[इसिभासियाइं संमतानि] ऋषिभाषित-सूत्राणि समाप्तानि

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: (पूर्वकाले आगमरूपेण दर्शित:) "ऋषिभाषित-सूत्राणि"-मूलं

ऋषिभाषित संग्रहणि

प्रत सूत्रांक [-] गाथा ||-||

पत्तेयबुद्धमिसिणो वीसं तित्थे अरिट्ठणेमिस्स । पासस्स य पण्णरस वीरस्स विलीणमोहस्स ॥ १ ॥ णारद १ वज्जितपुत्ते २ असिते ३ अंगरिसि ४ पुप्फसाले ५ य । वक्कल ६ कुंमा ७ केयलि ८ कासव ९ तह तेतलिसुते १० य ॥ २ ॥ मंखलि ११ जण्ण १२ भयाली १३ बाहुयमहु १४ सोरियाण १५ विदू १६ विंपू १७ । वरिसे कण्हे १८ आरिय १९ उक्कलवादा य २० तरुणे २१ य ॥ ३ ॥ गद्दभ २२ रामे २३ य तहा हरिगिरि २४ अंबड २५ मयंग २६ वारत्ता २७। तंसो य अद्दए २८ वद्धमाणे २९ वाऊ ३० य तीसतिमे ॥४॥ पासे ३१ पिंगे ३२ अरुणे ३३ इसिगिरि ३४ यट्टालए ३५ य विच्चे ३६ य। सिरिगिरि ३७ सातियपुत्ते ३८ संजय ३९ दीवायणे चेव ४० ॥५॥ तत्तो य इंदणागे ४१ सोम ४२ यमे ४३ चेव हे इ वरुणे ४४ य। वेसमणे ४५ य महप्पा चत्ता पंचेव अक्खाए ॥६॥ इसिभासियाणं संगहणी संमत्ता ॥ सोयव्वं १ जस्स २ भवि लेवे ३ आदाण रक्खि ४ माणे ५ य। तम ६ सव्वं ७ आराए ८ जाव य ९ सद्धेय १० णव्वेय ११ ॥१॥ लोगेसणा १२ किंमत्थं १३ जुत्तं १४ साता १५ तथेव विसये १६ य । विज्जा १७ वज्जे १८ आरिय १९ उक्कल २० णाहंति ॥ ४० ॥

दीप अनुक्रम [-]

इसिभासिएसु. ॥ ४१ ॥

जाणामि २१ ॥ २ ॥ पडिसाडी २२ ठवण दुवे मरणे २३ सव्वं २४ तहेव वंसे य २५ । धम्मे २६ य साहु २७ सोते २८ सवंति २९ अहसव्वतो ३० समे लोए ३१ ॥ ३ ॥ किसि ३२ बाले य ३३ पंडित सद्दणा ३४ तह कुप्पणा ३५ य बोद्धव्वा । उप्पत ३६ उदय ३७ य सुव्वा ३८ पावे ३९ तह इच्छणिच्छा ४० य ॥ ४ ॥ आजीवओ ४१ य अप्पा जेण य एसितव्व बहुयं तु ४२। लाभे ४३ दो ठाणेहि य ४४ अप्पं पापाण हिंसायु ४५ ॥ ५ ॥ इसिभासितअत्थाहिकारसंगहणी सम्मत्ता ॥

॥ इति ऋषिभाषितान्यध्ययनानि ससंग्रहणीकानि समाप्तानि ॥

प्रामाण्यं

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: (पूर्वकाले आगमरूपेण दर्शित:) "ऋषिभाषित-सूत्राणि"-मूलं

प्रत सूत्रांक [-] गाथा ||-|| दीप अनुक्रम [-]

ऋषिभाषित-शास्त्रस्य प्रामाण्यं

इसिभासिएसु ॥ ४२ ॥ — प्रामाण्यं

स्थानाङ्गे १० स्थाने—दस दसाओ पं० तं० —१-२-३-४-५-पण्हावागरणदसाओ.........................पण्हावागरणदसाणं दस अज्झयणा पं० तं०— उवमा—संखा—इसिभासियाइं×××एतद्वृत्तौ-प्रश्नव्याकरणदशा इहोक्तरूपा न दृश्यन्ते दृश्यमानास्तु पंचाश्रवपंचसंवरात्मिका इति । इहोक्तानां तु उपमादीनामध्ययनानामक्षरार्थः प्रतीयमान एव । तथा समवायाङ्गे—

चोयालीसं अज्झयणा इसिभासिया दियलोगचुयाभासिया प० देवलोयचुयाणं इसीणं चोयालीसं इसिभासियज्झयणा प०। एतद्वृत्तौ चतुश्चत्वारिंशत्स्थानकेऽपि किञ्चिल्लिख्यते, चतुश्चत्वारिंशत् 'इसिभासिय' त्ति ऋषिभाषिताध्ययनानि कालिकश्रुतविशेषभूतानि 'दियलोयचुयाभासिय' त्ति-देवलोकच्युतैः ऋषिभूतैराभाषितानि देवलोकच्युताभाषितानि ॥ (कस्यापि प्रत्येकबुद्धस्य अन्यस्याः कस्याश्चिद् गतेरायातत्वमपेक्ष्य पञ्चचत्वारिंशतोऽप्यध्ययनानां विवक्षा एकोनतयाऽत्र) यशोदेवसूरिकृत—पाक्षिकसूत्रटीका [वीरगणिशिष्यचन्द्रसूरिशिष्या यशोदेवाः][वि सं.११८०]

'इसिभासियाइ' न्ति, इह ऋषयः-प्रत्येकबुद्धसाधवस्ते चात्र नेमिनाथतीर्थवर्तिनो नारदादयो विंशतिः पार्श्वनाथतीर्थवर्तिनः पञ्चदश वर्धमानस्वामितीर्थवर्तिनो दश ग्राह्याः, तैर्भाषितानि पञ्चचत्वारिंशत्संख्यान्यध्ययनानि श्रवणाद्याधिकारवन्ति ऋषिभाषितानि॥अत्र वृद्धसंप्रदायः- सोरियपुरे नयरे सुरंबरो नाम जक्खो, धणञ्जओ सेट्ठी, सुभद्दा भज्जा, तेहिं अन्नया सुरंबरो विन्नत्तो-जहा जइ अम्हाणं पुत्तो होहि तो तुज्झ महिससयं देमोत्ति, एवं ताणं सञ्जाओ पुत्तो । एत्थंतरे भगवं वद्धमाणसामी ताणि संबुज्झिहिन्तित्ति सोरियपुरमागओ । सेट्ठी सभज्जो निग्गओ, संबुद्धो, अणुव्वयाणि । सो जक्खो सुविणए महिसे मग्गइ, तेणवि सेट्ठिणा पिट्ठमया दिण्णत्ति ।

सामिणो य दोन्नि सीसा-धम्मघोसो य धम्मजसो य एगस्स असोगवरपायवस्स हेट्ठा परियट्टिन्ति । ते पुव्वण्हे ठिया, अवरण्हेवि छाया न परियत्तइ । तओ इक्को भणइ-तुज्झेसा लद्धी । बिइओ भणइ-तुज्झत्ति । तओ एक्को काइयभूमिं गओ जाव छाया ॥ ४२ ॥

प्रत सूत्रांक [-] गाथा ||-||

दीप अनुक्रम [-]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: (पूर्वकाले आगमरूपेण दर्शित:) "ऋषिभाषित-सूत्राणि"-मूलं

ऋषिभाषित-शास्त्रस्य प्रामाण्यं

इसिभासिएसु ॥ ४३ ॥

तहेव अच्छइ, तओ बीओऽवि गओ, तत्थेव तहेव अच्छइ, तेहिं णायं जहा एक्कस्सवि न लद्धी, तओ सामी पुच्छिओ, भगवया भणियं जहा इहेव सोरियपुरे समुद्दविजओ राया आसि, जन्नदत्तो तावसो सोमजसा तावसी, ताण पुत्तो नारओ, ताणि उंछवित्तीणि, एक्कदिवसंमि जेमिन्ति, एक्कदिवसं उववासं करेन्ति । अन्नया ताणि तं नारयं पुव्वण्हे असोगपायवस्स हेट्ठा ठवेऊणं उच्छन्ति । इओ य वेयड्ढाओ वेसमणकाइया तिरियजंभगा देवा तेणन्तेणं वीइवयन्ता पेच्छन्ति तं दारयं, ओहिणा आभोइन्ति । सो ताओ चेव देवनिकायाओ चुओ । तओ ते तस्साणुकंपाए तं छायं थंभन्तित्ति । एवं सो उम्मुक्कबालभावो अन्नया तेहिं जंभगदेवेहिं पन्नत्तिमाइयाओ विज्जाओ पाढिओ । तओ कञ्चणकुण्डियाए मणिपाउयाहिं आगासे हिण्डइ । अन्नया बारवइं गओ । वासुदेवेण पुच्छिओ-किं सोयंति । सो न तरति पडिकहिउं । तओ अन्नकहाए वक्खेवं काऊण उट्ठिओ, गओ पुव्वविदेहं । तत्थ य सीमंधरं तित्थयरं जुगबाहू वासुदेवो पुच्छइ-किं सोयं ?, तित्थगरेणं भणियं-सच्चं सोयंति । जुगबाहुणा एक्कवयणेणवि सव्वं उवलद्धं, नारओवि तं निसुणित्ता उप्पइऊणं अवरविदेहं गओ । तत्थवि जुगन्धरं तित्थयरं महाबाहू वासुदेवो तं चेव पुच्छइ, भगवयावि तं चेव वागरियं, महाबाहुस्सवि सव्वं उवगयं । नारओवि तं सुणित्ता बारवइं गओ वासुदेवं भणइ-किं ते तदा पुच्छियं ?, वासुदेवो भणइ-किं सोयंति । नारओ भणइ-सच्चं सोयंति । वासुदेवो भणइ-किं सच्चंति ?, तओ नारओ खुभिओ न किंचि उत्तरं देइ । तओ कण्हवासुदेवेण भणियं-जत्थेव तं । पुच्छियं तत्थ एयंपि पुच्छियव्वं हुन्तत्ति खिंसिओ । ताहे नारओ भणइ-सच्चं भट्टारओ न पुच्छिओत्ति, चिन्तेउमारद्धो, जाई सरिया, संबुद्धो, पढममज्झयणं 'सोयव्वमेव' इच्चाइयं वदति । एवं सेसाणिवि दट्ठव्वाणित्ति " इत्यादीनि बहून्येषां प्रामाण्यवाक्यानि नन्द्यावश्यकवृत्त्यादिषु ।

इति प्रत्येकबुद्धभाषितानि । पञ्चचत्वारिंशदध्ययनानि ॥ समाप्तानि ॥

प्रामाण्यं ॥ ४३ ॥

प्रत्येकबुद्धभाषितानि

ऋषिभाषित-सूत्राणि

समाप्तानि

मुनिश्री दीपरत्नसागरेण पुन: संपादित:

"ऋषिभाषित-सूत्राणि" मूलं परिसमाप्तम्

नमो नमो निम्मलदंसणस्स

पूज्य आनंद-क्षमा-ललित-सुशील-सुधर्मसागर गुरूभ्यो नम:

भाग-2

पूज्य आगमोध्धारक आचार्य श्री सागरानंदसूरीश्वरेण संशोधित: संपादितश्च

प्रत्येकबुद्धैर्भाषितानि श्री ऋषिभाषितसूत्राणि

(किंचित् वैशिष्ठ्यं समर्पितेन सह)

मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित:

"ऋषिभाषित-सूत्राणि" मूलं नाम्ना परिसमाप्त:

आगम-संबंधी-साहित्य'-श्रेणि, भाग-२

आगम

वाचना शताब्दी वर्ष

नमो नमो निम्मलदंसणस्स

सचूर्णिक-आगम-सुत्ताणि

मूल संशोधक

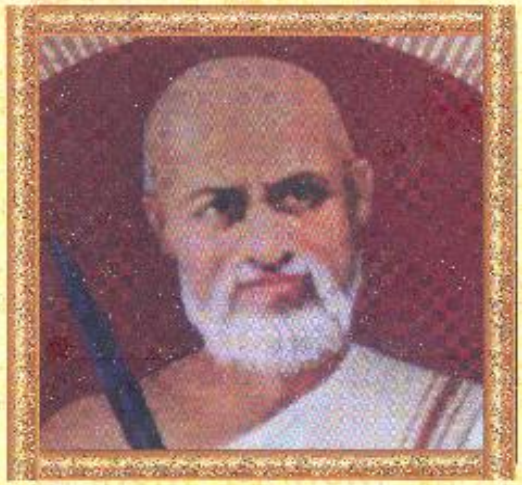

पूज्यपाद आगमोद्धारक आचार्य
श्री आनंदसागरसूरीश्वरजी महाराज

अभिनव-संकलनकर्ता

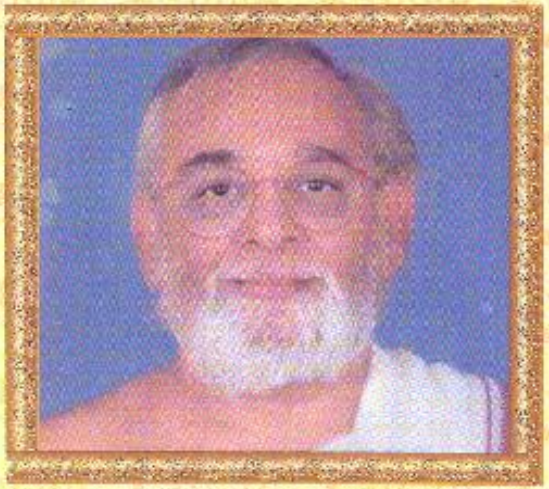

आगम दिवाकर मुनिश्री दीपरत्नसागरजी
[M.Com., M.Ed., Ph.D., श्रुतमहर्षि]

प्रत-प्राप्ति और पेज-सेटिंग कर्ता : www.jainelibrary.org के चेरमन श्री प्रवीणभाई शाह, अमेरिका
मुद्रक : नवप्रभात प्रिन्टींग प्रेस अमदाबाद Mo 9825598855 / 9825306275

ईस प्रोजेक्ट के संपूर्ण-अनुदान-दाता

सच्चारित्र चूडामणि स्वर्गस्थ पूज्यपाद
गच्छाधिपति आचार्यदेव श्री देवेन्द्रसागर
सूरीश्वरजी महाराज साहेब

श्री परम आनंद श्वेताम्बर मूर्तिपूजक जैन संघ

वीतराग सोसायटी, प्रभूदास ठक्कर कोलेज रोड, पालडी,अमदावाद

करीब पचास साल पहेले परम पूज्य स्वर्गस्थ गच्छाधिपति आचार्य देव श्रीमद् देवेन्द्रसागरसूरीश्वरजी महाराज साहेब द्वारा संस्थापित इस संघमें श्री शीतलनाथ भगवंत का जिनालय भी है, जिन के प्रतिष्ठाचार्य भी पूज्य देवेन्द्रसागरसूरीश्वरजी म० ही है |

इस संघमें पूज्य साधू-भगवंत एवं साध्वी-महाराज के लिए उपाश्रय भी है , ज हां हर-साल चातुर्मास करवा के श्रावक-श्राविकाओ को धर्म-आराधन से लाभान्वित करवाया जाता है | इस संघमें आयंबिलभवन, उबाला हुआ पानी, ज्ञान-भण्डार एवं पाठशाला की भी बहोत अच्छी सुविधा प्रदान हो रही है | ऐसे सम्यग्-मार्गी संघ की सद्भावना और प्रभावक आचार्य पूज्य श्री हर्षसागरसूरिजी म० की प्रेरणा से इस शास्त्र के लिए अनुदान प्राप्त हुआ है |

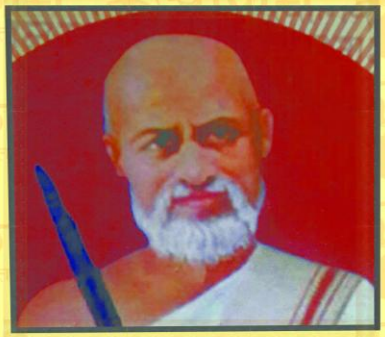

मूल संशोधक

पूज्यपाद आगमोद्धारक आचार्य

श्री आनंदसागरसूरीश्वरजी महाराजसाहेब

प्रत्येकबुद्धभाषितानि

"ऋषिभाषितसूत्राणि" मूलं

अभिनव-संकलनकर्ता

आगम दिवाकर मुनिश्री दीपरत्नसागरजी

[M.Com., M.Ed., Ph.D., श्रुतमहर्षि]